बेस्ट सेलर

लोकप्रिय लेखक

प्रकाश भारती



लाश की हत्या

बेस्ट सेलर

लोकप्रिय लेखक

प्रकाश भारती



लाश की हत्या



असलान रीड्स

के द्वारा प्रकाशन

असलान बिजनेस सॉल्यूशंस की एक इकाई

बोरिवली, मुंबई, महाराष्ट्र, इंडिया

ईमैल : hello@aslanbiz.com ; वेबसाइट : www.aslanreads.com

कॉपीराइट © 1989 प्रकाश भारती द्वारा

ISBN 978-93-85898-99-0

इस पुस्तक की कहानियाँ काल्पनिक है। इनका किसी के जीवन या किसी पात्र से कोई संबंध नहीं है। यह केवल मनोरंजन मात्र के लिए लिखी गई है।
अत: लेखक एवं प्रकाशक इनके लिए जिम्मेदार नहीं है।
यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमती के बिना इसे या इसके किसी भी हिस्से को न तो पुन: प्रकाशित किया जा सकता है और न ही किसी भी अन्य तरीके से, किसी भी रूप में इसका व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है।
यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

लाश की हत्या

देवराज मेहता की हत्या के वक्त सुधीर और राजेश मौका-ए-वारदात पर मौजूद थे ।

सुरेश दुग्गल ने चीख-चीख कर कबूल किया कि हत्या उसी ने की थी ।

क्राइम ब्रांच के डी० आई० जी० के मुताबिक वो 'ओपन एण्ड शट' केस था ।

इन्स्पेक्टर विजय कुमार की राय भी यही थी ।

सुरेश दुग्गल के हत्यारा होने में शक की कतई कोई गुंजाइश नजर नहीं आती थी । लेकिन सुधीर की ठोस दलीलों ने, डी० आई० जी० और होम मिनिस्टर के पी० ए० तक की मर्जी के खिलाफ, विजय कुमार को जो एक्शन लेने पर मजबूर किया उसका नतीजा सामने आते ही...?

* * * * * *

प्रकाश भारती द्वारा लिखित रहस्य एवं रोमांच से भरपूर उपन्यास

* * * * * *

लाश की हत्या

वे दोनों बार काउन्टर से दूर कोने में एक मेज पर बैठे थे ।

सुरेश दुग्गल के सामने व्हिस्की का आधा भरा गिलास रखा था । उंगलियों में ताजा सुलगाया हुआ सिगरेट दबा था । व्हिस्की के प्रभाव से उसका खूबसूरत चेहरा सुर्ख़ हो रहा था और आँखें बोझिल-सी थीं । वह भयानक मानसिक संघर्ष में फंसा नजर आ रहा था ।

राजेश तनिक खीज भरी सवालिया निगाहों से उसे घूर रहा था ।

'मैं उस हरामजादे को शूट कर दूँगा ।' अचानक सुरेश भारी स्वर में बोला-'तुम सुन रहे हो न, राजेश ! ज़िन्दा नहीं छोडूंगा साले को ।' और गहरी सांस लेकर चुप हो गया ।

राजेश का जी चाहा अपना सिर पीट ले । दस मिनट में चौथी दफा उसने ये शब्द सुने थे । हर बार नपे-तुले ढंग से इतना ही कहकर सुरेश ने इसी तरह खामोशी अख्तियार कर ली थी । और राजेश ने हर मर्तबा पूछा था कि वह किसकी बात कर रहा था । लेकिन सुरेश ने कतई कोई जवाब नहीं दिया था ।

अब राजेश का धैर्य छूटने लगा था । उस पर झुंझलाहट सवार होनी शुरू हो चुकी थी । आज उसका बर्थ डे था । वह सुधीर और सपना के साथ अपने अलग ढंग से जन्म-दिन की खुशी मनाना चाहता था । नगर के सबसे शानदार रेस्तरां 'क्वालिटी' में डिनर के लिए टेबल, रिजर्व करा चुका था । नई अंग्रेजी फिल्म के नाइट शो की तीन टिकटें उसकी जेब में थीं । इस मुबारक दिन की शाम को रंगीन बनाने के लिए वह शेम्पेन की बोतल का भी खासतौर पर इन्तज़ाम कर चुका था ।

आजकल आयातित शराब आसानी से उपलब्ध नहीं थी । इसलिए राजेश हफ्ता भर पहले इस बार के बारमैन से शैम्पेन अरैंज करने को कह गया था । बारमैन उसका परिचित था । उसने विश्वास दिलाया था कि बोतल मिल जाएगी ।

करीब पन्द्रह मिनट पहले राजेश बोतल लेने के लिए ही बार में आया था । और सुरेश दुग्गल बिन बुलाई मुसीबत की तरह उसके गले पड़ गया था ।

अपनी धुन में खोया राजेश बार में दाखिल होने के बाद सीधा काउन्टर पर पहुंचा । कोने की मेज पर बैठे सुरेश दुग्गल की ओर उस वक्त उसका ध्यान नहीं गया था ।

बारमैन ने खूबसूरती के साथ ब्राउन पेपर में पैक्ड बोतल उसे दे दी । बार मैन का शुक्रिया अदा करते हुए राजेश खुशी-खुशी पलटा, दरवाज़े की ओर जाने के लिए कदम बढ़ाया ही था, अपना नाम पुकारा जाता सुनकर ठिठक गया । आवाज़ की दिशा में निगाह उठाते ही सुरेश दुग्गल के दर्शन हो गए ।

राजेश को थोड़ा ताज्जुब हुआ । अभी दोपहर के बाद तीन बजे थे । जबकि सुरेश के रंग-ढंग से लग रहा था कि वह करीब आधे-पौने घण्टे से वहां बैठा था और इस बीच कम से कम तीन पैग ज़रूर झाड़ चुका था । उसे यूँ बेवक्त दिन-दहाड़े शराब पीता देखकर राजेश असमंजसतापूर्वक उसकी ओर बढ़ा ।

खूबसूरत, तन्दुरुस्त और होनहार युवक सुरेश दुग्गल उसी की तरह 'एडवेंचरर' का क्राइम रिपोर्टर था । उसकी इन्तिहाई खूबसूरत, पढ़ी-लिखी और आधुनिक बीबी की वजह से सभी पुरुष सहकर्मी उससे ईर्ष्या करते थे । राजेश उसकी बीवी प्रतिमा से भी कई बार मिल चुका था । पति-पत्नी के परस्पर प्रगाढ़ प्रेम से वह अत्यन्त प्रभावित हुआ था । दोनों अपने विवाहित जीवन से पूर्णतया सुखी एवं सन्तुष्ट थे ।

लेकिन पिछले चन्द दिनों से वह सुरेश में भारी तब्दीलियाँ नोट कर रहा था । उसके काम में लापरवाही आती जा रही थी । शाम के वक्त अक्सर पिये हुए नजर आता था । सुन्दर, हंसमुख चेहरे पर चिन्ता की लकीरें स्थायी होती जा रही थीं । स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ गया था । मानो कोई गम था जो अन्दर ही अन्दर उसे खाये जा रहा था और उसे भुलाने के लिये ही आम आदमियों की भांति वह भी शराब का सहारा ले बैठा था । राजेश ने कई बार टोका, उसकी परेशानी जानने की कोशिश की, लेकिन वह साफ टाल जाया करता था ।

जाती तौर पर राजेश का अनुमान था, सुरेश में आई इन तब्दीलियों का उसकी पार्ट टाइम की उस नौकरी से ताल्लुक ज़रूर था, जो वह करीब दो महीने पहले एक वीकली पेपर 'युअरवॉयस' में करने लगा था । बकौल सुरेश दुग्गल, पार्ट टाइम की उस नौकरी से उसे खासी अतिरिक्त आमदनी हो जाती थी । यह नौकरी ज्वाइन करने की वजह बताते हुए आरम्भ में उसने कहा था - 'यार राजेश, यही दिन हैं बीवी को ऐश कराने के । चार पैसे ज्यादा हाथ में आयेंगे तो उसकी फजूल खर्ची भी नहीं अखरेगी । खूबसूरत बीवी तकदीर में लिखी थी सो मिल गई । लेकिन उसकी खूबसूरती को लम्बे अर्से तक कायम रखने के लिये उसकी जरूरतों को पूरा करते हुए उसे खुश रखना जरूरी है । और इसके लिए पास में पैसा होना निहायत जरूरी है ।'

कुल मिलाकर मुद्दा यह कि सुरेश अपनी खूबसूरत बीवी के ऐशो-आराम की खातिर 'एडवेंचरर' की नौकरी के साथ-साथ पार्ट टाइम भी कर रहा था ।

राजेश उसके सम्मुख जा पहुँचा ।

'हैलो, सुरेश ।'

'हैलो, राजेश, आओ बैठो ।' सुरेश के स्वर में अजीब सा खोखलापन था ।

राजेश सामने पड़ी कुर्सी पर बैठ गया ।

'क्या लोगे ?' सुरेश ने पूछा-'व्हिस्की या कुछ और ?'

'कुछ नहीं । तुम जानते हो मैं कभी-कभार ही पी लेता हूँ ।'

'आज भी शौकिया ही सही ।'

'नो थैंक्यु ।'

'तो फिर यहां क्या करने आये हो ?'

'मैं जिस लिये आया था वो काम कर चुका हूँ ।' राजेश ने कागज में लिपटी बोतल की ओर संकेत करते हुए कहा, फिर पूछा-'तुम आज आफिस नहीं गये ?'

'नहीं ।' सुरेश शुष्क स्वर में बोला- 'मुझे कुछ काम था ।'

'यही, जो कर रहे हो ?' राजेश ने व्हिस्की के गिलास की ओर इशारा किया ।

'नहीं ।'

'फिर, और ऐसा क्या काम था कि आफिस से भी छुट्टी कर दी ?'

सुरेश ने जवाब नहीं दिया ।

राजेश ने कुछ देर उसके बोलने का इन्तजार किया । फिर उसे समझाने की कोशिश करने लगा कि इस तरह खुद को शराब में डुबोकर वह अपनी जिन्दगी तबाह कर लेगा और अपने साथ-साथ प्रतिमा को भी बरबाद कर देगा ।

सुरेश गुम-सुम बैठा सुनता रहा । अचानक उसका चेहरा तमतमा गया । गर्दन की नसें तन गयीं । एक-एक शब्द पर जोर देता हुआ पहली बार बोला- 'मैं उस हरामजादे को शूट कर दूँगा । तुम सुन रहे हो न, राजेश । ज़िन्दा नहीं छोडूंगा साले को ।' और गिलास उठाकर आधा खाली कर दिया ।

राजेश पहले तो चौंका । फिर नशे की बहक समझ कर मुस्करा दिया । उसने पूछा किसके लिये इतने बुलन्द इरादे बना रहा था । लेकिन सुरेश ने एक बार जो चुप्पी साधी तो फिर तभी उसका मौन टूटा जब दूसरी बार उसने यही शब्द दोहराये थे । राजेश ने पुनः जानने की कोशिश की, मगर सुरेश पहले की भांति खामोश होकर सिगरेट के गहरे-गहरे कश लेने लगा था ।

राजेश ने जब चौथी बार भी यही रटे-रटाये शब्द सुने और पूछने पर जवाब में खामोशी पायी तो उस पर झुंझलाहट सवार होने लगी । सोचने पर मजबूर हो गया कि सुरेश नशे में बहक रहा था । और वह खुद इस देवदास के मुंह लगकर न सिर्फ अपना वक्त बर्बाद कर रहा था बल्कि अपने अच्छे-खासे मूड का भी सत्यानाश किए ले रहा था । जबकि उसने अभी घर जाकर और भी कई जरूरी काम निपटाने थे । उसने निश्चय किया कि यहां से फूट लेना ही बेहतर था ।

राजेश उससे इजाजत लेने के बारे में सोच ही रहा था । सुरेश ने पांचवीं बार कहना शुरू किया-'तुम सुन रहे हो न.....।'

इस बार सचमुच राजेश को क्रोध आ गया ।

'हां-हां, सुन रहा हूं, मेरे बाप ।' सुरेश को मुर्गे की डेढ़ टांग वाला अपना राग अलापने का मौका दिए बगैर वह झुंझलाहट भरे स्वर में बोला-'चार बार पहले भी सुन चुका हूँ । अगर इन्हीं जुमलों का पाठ करना है तो किसी और को सामने बैठा लो । मैं और ज्यादा बर्दाश्त नहीं कर सकता ।'

जवाब में सुरेश ने इतनी कातर दृष्टि से उसकी ओर देखा कि उठना चाहकर भी राजेश उठ नहीं सका । सुरेश के चेहरे पर क्रोध एवं घृणा के गहन भाव उत्पन्न हो गये ।

'यकीन करो ।' वह बोला-'मैं वाकई उस हरामजादे को शूट कर दूंगा.....।'

'और ज़िन्दा नहीं छोड़ोगे साले को ।' राजेश उसके शेष शब्द दोहराता हुआ पूर्ववत स्वर में बोला-'इस मंत्र का जाप तुम पहले भी कई बार कर चुके हो । लेकिन यह भी तो पता चले किस्सा क्या है ? किसे शूट कर दोगे ? किसे ज़िन्दा नहीं छोडोगे ?'

सुरेश की मुट्ठियां भिच गयीं ।

'उसी कमीने देवराज मेहता को ।'

राजेश बुरी तरह चौंका । फिर अजूबे की तरह उसे हैरानगी एवं अविश्वासपूर्वक घूरने लगा ।

सुरेश ने गहरी सांस लेकर बड़ इत्मिनान से अपना गिलास उठाकर खाली किया । गिलास नीचे रखकर नई सिगरेट सुलगाई । वेटर को फ्रेश ड्रिंक लाने का संकेत कर दिया ।

राजेश ने बार रूम में निगाहें दौड़ाईं । उन दोनों के अलावा सिर्फ तीन ग्राहक मौजूद थे । वे तीनों उनसे दूर काउन्टर पर बैठे थे ।

एक बेयरा काउन्टर के साथ टेक लगाये खड़ा था, और दूसरा सुरेश के लिए ड्रिंक ला रहा था ।

बेयरा ड्रिंक सर्व करके लौट गया ।

'तुम्हारा मतलब 'युअर वॉयस' के मालिक देवराज से है ?' राजेश ने जानना चाहा ।

'हां, उसी कुत्ते से है ।' सुरेश नफरत से पगे स्वर में बोला ।

राजेश की उत्सुक्ता स्वाभाविक थी । कुछ देर पहले तक वह इसी वहम में था कि सुरेश बेवक्त ज्यादा चढा गया था और नशे में बहक रहा था । इस बात की तो उसने कल्पना भी नहीं की थी ।

'उसी को शूट करना चाहते हो ?' राजेश ने पूछा ।

'हां ।' सुरेश ठोस स्वर में बोला ।

'लेकिन क्यों ?'

'इसलिए कि वह है इसी काबिल ।'

'यह क्या बात हुई ? साफ-साफ बताओ ।'

'अब से पहले पांच बार जो कुछ मैं दोहरा चुका हूँ ।' सुरेश दृढ़तापूर्वक बोला-'उसे तुम साफ-साफ नहीं समझते ?'

'यानि तुम वाकई देवराज का खून कर दोगे ?'

'बेशक ।'

'लेकिन क्यों ? उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?'

सुरेश की आंखों में खून उतर आया ।

'बिगाड़ा है ?' कहकर वह पल भर के लिये रुका फिर अपार घृणा मिश्रित हिंसक स्वर में बोला-'वो कमीना मेरी भोलीभाली बीवी पर डोरे डाल रहा है। उस बेचारी को अपनी घिनौनी हविस का शिकार बनाना चाहता है ।'

राजेश के मुँह से बोल तक नहीं फूंटा । इस बात को लेकर सुरेश तो क्या किसी भी औरत का पति मरने-मारने पर उतारू हो सकता था । वह समझ गया कि सुरेश की तमाम परेशानियों की जड़ यही थी ।

जहां तक देवराज मेहता का सवाल था, राजेश भी उसे अच्छा आदमी नहीं समझता था । हालांकि वह दौलतमन्द था । उसके वीकली पेपर की गिनती राष्ट्रीय स्तर पर सफलतम साप्ताहिक समाचार पत्रों में होती थी । लेकिन सैक्स के मामले में उसके बारे में कहा जाता था, अगर उसकी अपनी कोई सगी बहन होती तो उसने उसे भी महज औरत ही समझना था । आम अफवाह थी, अपने पैसे के दम पर वह हर उस औरत को हासिल कर लिया करता था जिसे हासिल करना चाहता था । विवाहित होने के बावजूद नई-नई औरतों का रसिया देवराज मेहता का सुन्दरी प्रतिमा पर डोरे डालने की कोशिश करना उससे अनपेक्षित नहीं था ।

स्थिति वास्तव में गम्भीर थी । क्योंकि राजेश की जानकारी के मुताबिक देवराज मेहता बेहद जिद्दी किस्म का आदमी था । किसी के समझाने-बुझाने अथवा डराने-धमकाने से वह अपने इस इरादे से हरगिज भी बाज आने वाला नहीं था । इधर सुरेश उसके खून का प्यासा हो रहा था । वह जो कुछ कह रहा था उसे कर गुजरने लायक मुनासिब हौंसले की कमी भी उसमें नहीं थी ।

राजेश ने देखा । सुरेश अब अपेक्षाकृत सामान्य नजर आ रहा था । मानो यह सब बताकर उसके दिलो-दिमाग का बोझ कुछ हल्का हो गया था ।

'लगता है, तुम पर व्हिस्की बुरी तरह हावी हो गई है ।' राजेश उसे और कुरेदने के विचार से बोला-'इसीलिए ऊलजलूल बक रहे हो ।'

'नहीं दोस्त, यकीन करो, मैं पूरे होशो-हवास में हूँ ।' सुरेश का स्वर संजीदा था ।

या फिर खूबसूरत बीवी का पति होने की वजह से शक्की हो गये हो ।'

'नहीं, ऐसी कोई भी बात नहीं है ।'

'फिर कैसी बात है ? तुम शायद नहीं जानते कि देवराज के इस कमीनेपन को बताकर तुम अपनी बीवी पर भी बदचलनी का इल्जाम लगा रहे हो ।'

'जानता हूँ । लेकिन प्रतिमा निर्दोष है । वही कमीना उसे बहका रहा है ।'

सुरेश की आंखों में पत्नी के प्रति अगाध प्रेम और विश्वास के भाव स्पष्ट परिलक्षित हो रहे थे ।

'तुम्हारी बात तर्क संगत नहीं है ।' राजेश बोला ।

'क्या मतलब ?'

'अगर प्रतिमा निर्दोष है तो वह बहक ही क्यों रही है ? वह नादान तो नहीं है कि अपना भला-बुरा न समझ सके । उसी को समझा दो, काम खत्म हो जाएगा । क्यों खून-खराबे के चक्कर में पड़ते हो ?'

'सुनो, मैं तुम्हें विस्तारपूर्वक बताता हूँ ।'

तत्पश्चात् सुरेश करीब दस मिनट तक बोलता रहा ।

राजेश ने गौर से उसकी एक-एक बात सुनी । वह इस नतीजे पर पहुँचा । सुरेश के सामने कोई ऐसा ठोस सबूत नहीं था, जिसके आधार पर कहा जा सके कि प्रतिमा और देवराज मेहता के आपस में गलत ताल्लुकात थे । लेकिन देवराज मेहता की फितरत को ध्यान में रखते हुए, ऐसे ताल्लुकात होने का जो भारी शक सुरेश को था, उसकी वजह ज़रूर तगड़ी और ठोस थी ।

'अब तुम समझे कि मैं क्यों उस हरामी के बच्चे का खून करना चाहता हूँ ?' अन्त में सुरेश ने पूछा ।

राजेश कुछ नहीं बोला । वह इस सिलसिले को निपटाने का कोई सहूलियत वाला तरीका सोचने की कोशिश कर रहा था । लेकिन कोई मुनासिब तरकीब नहीं सूझ सकी । उसने अपनी रिस्ट वाच पर निगाह डाली । पांच बजने वाले थे ।

'माई गुडनेस ।' वह खड़ा होकर बोला-'कितनी देर हो गई ।' फिर सुरेश से पूछा-'तुम अभी यहीं जमोगे या चल रहे हो ?'

सुरेश अपना ड्रिंक खत्म करके खड़ा हो गया ।

'चलो, चलते हैं ।'

राजेश ने अपनी शैम्पेन की बोतल उठाई और सुरेश के साथ बार से बाहर आ गया ।

'कहां जाओगे ?' राजेश ने पूछा ।

'घर ।'

'तब तो तुम्हारा मेरा रास्ता अलग-अलग है । स्कूटर लाये हो ?'

'हां ।' सुरेश ने पास ही बड़े अपने चेतक की ओर इशारा किया-'यह खड़ा तो है । क्या बात है मेरे स्कूटर को भूल गए हो ? या जो व्हिस्की मैंने पी है उसका नशा तुम्हें हो गया है ?'

'नहीं ।' राजेश ने विचारपूर्वक कहा फिर हिचकिचाता हुआ बोला-'एक बात मानोगे, सुरेश ।'

'क्या ?'

'देवराज मेहता को शूट करने की बात दिमाग से निकाल दो । इसका अन्जाम किसी के लिए भी अच्छा साबित नहीं होगा । उसे मारने के बाद...।'

'मुझे फांसी लग जायेगी और प्रतिमा बेवा हो जाएगी, यही न ?' एकाएक सुरेश भड़ककर बोला-'नामुमकिन, राजेश । मेरा फैसला अटल है । तुम्हें जो कुछ मैंने बताया है । उसके पीछे मेरी नीयत तुम्हारी हमदर्दी हासिल करने या तुमसे सलाह लेने की नहीं थी ।

राजेश की नजरों में उसका यह फैसला सरासर बेवकूफाना था । उसकी इस पागलपन भरी जिद्द पर उसे ताव आ गया ।

'फिर क्या नीयत थी तुम्हारी ?' उसने गुस्से को जब्त करके पूछा ।

'बताता हूँ ।' सुरेश शुष्क स्वर में बोला-'इत्तिफाक से तुम बार में मिल गये तो इस उम्मीद में सारा किस्सा सुना बैठा क्योंकि 'एडवेचरर' के एडीटर मि० जोशी के तुम काफी नजदीक हो । वह तुम्हारी बात मानता है ।'

'इस बात से तुम्हें क्या फर्क पड़ता है ? तुम तो खुदकुशी करने का फैसला कर चुके हो ।'

'खुदकुशी ?'

'जान-बूझकर किसी की हत्या करके फांसी पर चढ़ जाना और क्या है ?'

'तुम जो मर्जी कहो ।' सुरेश खोखले ढंग से हंसा-'मैं सिर्फ इतना चाहता हूं कि मेरे बाद जोशी से कह कर प्रतिमा को 'एडवेंचरर' में नौकरी दिला देना ।' फिर अपने स्कूटर की ओर बढ़ गया ।

राजेश स्तब्ध खड़ा रह गया ।

सुरेश ने पलट कर देखे बगैर स्कूटर स्टार्ट किया और चला गया ।

राजेश की मोटर साइकिल बार से थोड़े फासले पर खड़ी थी । वह धीरे-धीरे उधर ही बढ़ गया ।

* * * * * *

राजेश ने आखिर सुरेश की समस्या का हल ढूंढ ही लिया ।

वह घर लौटने की बजाए सीधा सुधीर के आफिस पहुँचा ।

उस वक्त साढ़े पांच बज रहे थे । सुधीर की सेक्रेटरी सपना सबरवाल छुट्टी करके जा चुकी थी । खुद सुधीर भी आफिस बन्द करके घर जाने ही वाला था ।

राजेश खामोशी से भीतर दाखिल हुआ । कागज में लिपटी शैम्पेन की बोतल डेस्क पर रख दी और सामने पड़ी कुर्सी पर धम्म से बैठ गया ।

आदतन चहकते रहने वाले राजेश को मुंह लटकाये आता देखकर सुधीर तनिक चौंका । आज न तो उसने 'शरलॉक होम्स' कहकर उसे सम्बोधित किया और न ही अन्य कोई फिकरा कसा था ।

'क्या बात है, डॉ० वाटसन ?' सुधीर उसके विचार पूर्ण चेहरे पर नजरें जमाकर बोला-'खैरियत तो है । तुम्हारी बोलती क्यों बन्द है ? तुम्हें तो बाकायदा भंगड़ा करते हुए यहां आना चाहिये था । आखिर आज तुम्हारा जन्म दिन जो है ।'

राजेश ने गहरी सांस लेकर सुधीर की ओर देखा । फिर एक-एक शब्द का चयन करता हुआ बोला-'आपकी थोड़ी सी मदद चाहिये ।'

'जन्म दिन के उपहार स्वरूप ?'

'प्लीज बी सीरीयस ।'

सुधीर ने नोट किया राजेश वास्तव में गम्भीर था । यह उसका अभिनय नहीं था ।

'ओ के । आयम सीरीयस ।' वह बोला-'कहो, कैसी मदद चाहते हो ?'

राजेश ने राहत की गहरी सांस ली । और बार में सुरेश से हुई मुलाकात के बारे में बता दिया । 'यकीन मानिये । उसकी बातों और रंग-ढंग से साफ जाहिर है ।' अन्त में राजेश बोला-'जो कुछ वह कह रहा था । उसे सौ फी सदी कर गुजरेगा । उस हालत में मैं खुद को कभी माफ़ नहीं कर सकूंगा । इसलिये नहीं कि सुरेश मेरा हमपेशा, दोस्त और कुलीग है ।'

'फिर किसलिए ?'

'इसलिए कि हत्या जैसे जघन्य अपराध की पूर्व सूचना होते हुए भी मैं उसे रोक नहीं सका ।'

'आई सी ।'

'इसी मामले में मुझे आपकी मदद की जरूरत है ।'

'मैं इसमें क्या कर सकता हूँ ?' सुधीर ने असमंजसतापूर्वक पूछा-'मैं एक प्राइवेट डिटेक्टिव हूँ । कोई मनः चिकित्सक या मैरिज काउंसलर नहीं । जबकि तुम्हारे दोस्त को इन्हीं की सहायता की आवश्यकता है ।'

'आप उसे चेतावनी तो दे ही सकते हैं ।'

'इससे क्या फायदा होगा ? जब खुद कह चके हो कि तुम्हारे समझाने बुझाने और चेतावनी देने के बावजूद वह अपने बेवकूफाना इरादे से बाज आता नहीं लगता । तुम उसके दोस्त हो । उसने तुम्हारी नहीं सुनी तो मेरी क्या सुनेगा ? जहां तक मैं समझता हूँ या तो वह बहुत ज्यादा नशे में रहा होगा या फिर इस हद तक पागल है कि जानबूझकर फांसी का फन्दा अपने गले में डालना चाहता है ।'

'मैं सुरेश की बात नहीं कर रहा हूं ।' राजेश ने प्रतिवाद किया ।'

'फिर किसे चेतावनी दिलाने के लिए कह रहे हो ?'

'प्रतिमा दुग्गल यानि उसकी बीवी को ।'

'मतलब ?'

'वही इस सारे रोग की जड़ है । अगर उसके दिमाग में यह बात बैठा दी जाए कि उसकी बेवकूफी की वजह से उसका पति हत्या जैसा भयानक अपराध करने वाला है तो इस मामले से फौरन खुद को अलग कर लेगी । मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ । बेहद खूबसूरत होने के साथ-साथ वह पढ़ी लिखी और समझदार भी है ।'

'अगर वह ऐसी है तो इतनी समझ खुद उसमें भी होगी ।'

'कई बार अच्छे, भले जिम्मेदार आदमी भी गुमराह हो जाते हैं और समझाने से सही रास्ते पर भी आ जाते हैं । मैं उन दोनों पति-पत्नी से भली भांति परिचित हूँ । वे अपने विवाहित जीवन से पूरी तरह सुखी एवं संतुष्ट थे । सारी गड़बड़ तभी शुरू हुई जब सुरेश ने देवराज मेहता के यहां पार्ट टाइम करना आरम्भ कर दिया । डेढ़ महीने पहले तक प्रतिमा सुरेश के प्रति पूरी तरह वफादार थी । आप जाकर उसे समझा देंगे तो मेरा ख्याल है वह जल्द समझ जाएगी और देवराज मेहता से बिल्कुल किनारा कर लेगी ।'

'तुम खुद ही जाकर उसे क्यों नहीं समझा देते ।' तुम्हारी बातों का उस पर ज्यादा और जल्दी असर होगा । मुझे तो वह जानती तक नहीं है । फिर भला मेरी बात सुनेगी ही क्यों ?'

'आप इस मसले को मेरे नजरिए से देखने की कोशिश नहीं कर रहे हैं । राजेश ने कहा-'प्रतिमा का आपको न जानना ज्यादा फायदेमंद साबित होगा । आपका नाम और परिचय ही उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम कर देगा । मेरा या सुरेश का जिक्र किए बगैर आप उसे कुछ भी बता सकते हैं । मसलन, यही कि देवराज मेहता की बीवी ने अपने पति की गति विधियां वाच कराने और प्रतिमा के साथ उसके ताल्लुकात खत्म कराने के लिये आपकी सेवाएं प्राप्त की हैं । आप उसके दिमाग में कील भांति यह गड़ा दीजिये कि अगर उसने देवराज के साथ अपनी रिश्तेदारी खत्म नहीं की तो सारी बात खुल जायेगी । और वह खुद बदनामी की शिकार हो जायेगी । इसके अलावा और भी दूसरे खतरनाक नतीजों से आप उसे आगाह कर सकते हैं ।'

'लेकिन तुम्हारे पास इसका क्या सबूत है कि प्रतिमा की वास्तव में देवराज मेहता से कोई रिश्तेदारी है । तुम्हारी बातों से सिर्फ इतना ही जाहिर होता है कि सुरेश उन दोनों के परस्पर सम्बन्ध होने का महज शक करता है । क्या प्रतिमा ने अपने पति के सामने कबूल किया है कि उसके देवराज के साथ कैसे भी ताल्लुकात हैं ?'

'नहीं । सुरेश अपनी बीवी को इस मामले में बेकसूर समझता है । हालांकि बार में मुझसे मुलाकात के समय उस पर व्हिस्की का खास असर था । और उसकी बातों में बेतरतीबी भी थी । लेकिन फिर भी उसे इस बात पर दृढ़ विश्वास था कि देवराज मेहता उसकी बीवी पर डोरे डाल रहा है और वह भी उसकी ओर आकर्षित हो रही है । अलबत्ता सुरेश नहीं जानता कि वाकई उन दोनों के आपस में शारीरिक सम्बन्ध हैं या नहीं । क्योंकि वह अभी भी प्रतिमा से बेइन्तहा मुहब्बत करता है । इसलिए यह बात उसे पगलाए दे रही है और वह देवराज मेहता के खून का प्यासा हो उठा है ।'

'अजीब-अजीब किस्म के पागल भरे पड़े हैं दुनियां में ।' सुधीर तनिक खीज मिश्रित ढंग से बोला-'तुम्हारा दोस्त सुरेश अक्ल से खारिज मालूम होता है । बेवकूफ आदमी खून करके फांसी चढ़ने को तैयार है लेकिन सारे फसाद की जड़ अपनी बीवी को टोकना तक नहीं चाहता । अगर बीवी की बदचलनी इतनी ही बुरी लगती है तो उससे तलाक क्यों नहीं ले लेता । फिर उसकी बला से वह चाहे जहां मुंह काला कराती फिरे । और अगर इसी कदर दीवाना है तो उसकी करतूतों से आंखे क्यों नहीं फेर लेता ?'

'इसलिये कि वह जवान है और बीवी से बेइन्तहा मुहब्बत करता है ।'

'तुम्हारी निगाह में, जो कुछ वह करना चाहता है, वो समझदारी का काम है ?'

'सवाल मेरी और आपकी निगाह का नहीं है ।'

'फिर किस बात का है ?'

'मेरे और आपके दर्शन शास्त्र बघारने से हालात नहीं बदलेंगे । सीधी सी बात है दो जवान व्यक्ति ऐसी बेढ़ब स्थिति में फंस गये हैं कि अगर मुनासिब कदम नहीं उठाया गया तो मामला हत्या तक पहुँच जायेगा ।'

'सुनो ।' सुधीर कुछ सोचता हुआ बोला-'तुम ऐसा-क्यों नहीं करते, इन दोनों मियां बीवी से कुछ कहने की बजाय देवराज से कहो कि वह इस किस्से को यहीं खत्म करके इससे अलग हट जाए ?'

'आप उस हरामजादे को नहीं जानते इसीलिये ऐसा कह रहे हैं ।' राजेश नफरत भरे स्वर में बोला-'वह रंगा सियार है । उसका अखबार तमाम साप्ताहिक पत्रों में सबसे ज्यादा बिकता है । जुआ-घरों, अय्याशी के अड्डों, गैर कानूनी शराब की खरीद फरोख्त के ठिकानों, नाइट क्लबों, बदनाम होटलों, वगैरा की ऐसी सनसनी खेज खबरें छापता है जिन्हें दूसरे अखबार वाले छूने तक का साहस नहीं कर सकते । क्योंकि सत्तारूढ़ दल के राजनीति बाजों से उसकी गहरी घुसपैठ है । विपक्षी दलों के नेताओं पर कीचड़ उछालने का कोई मौका वह नहीं छोड़ता । फलस्वरूप खासी दौलत इकट्ठी कर ली है । औरत खोर ऐसा है कि अगर उसकी अपनी कोई बहन भी होती तो उस कमीने ने उसे भी बहन नहीं समझना था । खुदा के फजल से व्यक्तित्व भी ऐसा पाया है कि उसके एक इशारे पर अधिकांश औरतें उसके साथ हम बिस्तर होने को तैयार हो सकती हैं । जिद्दी और अहंकारी इतना है कि आप तो समझाने की बात करते हैं लेकिन वह धमकी या दबाव में भी अपने इरादे से बाज आने वाला नहीं है ।'

सुधीर ने हैरानगी भरे अन्दाज में राजेश को देखा । देवराज मेहता सम्बन्धी ये बातें उसके लिये ताजा सूचनाओं से कम नहीं थी ।

'दूसरी ओर, प्रतिमा की खूबसूरती में भी वो सब कुछ है कि देखो तो बस देखते ही रह जाओ । ऊपर से वह है भी आधुनिका और स्वछन्द विचारों वाली ।' राजेश कहता गया-'भला औरतों का रसिया देवराज मेहता उसे अपनी हविस का शिकार बनाने से खुद को कैसे रोक सकता है । सबसे बड़ी दिक्कत की बात है कि सुरेश को प्रतिमा से दीवानगी की हद तक मुहब्बत है । उस बेचारे ने बीवी की फिजूलखर्ची से निबटने और उसे खुश रखने की खातिर ही उस कमीने के यहां पार्ट टाइम नौकरी ज्वाइन की थी । हो सकता है देवराज मेहता उसकी इस कमजोरी को भांप गया हो । इसलिये उसे प्रतिमा आसानी से हासिल हो सकने वाली नजर आई हो और उसने चक्कर चला दिया हो ।'

'तुम्हारी बातों से तो ऐसा लगता है कि देवराज मेहता वाकई गोली मार दिये जाने काबिल आदमी है ?'

'बेशक, वह है ही इस काबिल । उस जैसे नीच आदमी को तो बीच चौराहे पर शूट किया जाना चाहिये । लेकिन हमारा समाज इतना इन्कलाबी नहीं है ।' मौजूदा हालात में

उसे शूट करने वाले को मैडल नहीं फाँसी का फंदा मिलेगा । इसीलिये मैं चाहता हूं कि बात आगे बढने से पहले ही इस किस्से को खत्म कर दिया जाये । और इसका इकलौता तरीका वही है जो मैं आपसे अर्ज कर चुका हूं ।'

'यानि प्रतिमा दुग्गल को समझाने की कोशिश की जाए ?'

'कोशिश नहीं उसके दिमाग में यह बात ठोक-ठोक कर बैठा दी जाये कि देवराज से रिश्ता बनाये रखकर वह आग से नहीं बल्कि एटमबम से खेल रही है ।' राजेश बोला-'आप सुरेश को नहीं जानते । न ही आज आपने उसके दिल का दर्द आर खौफनाक इरादा सुना है । वह बहुत ही जिन्दादिल और यारों का यार आदमी है । लेकिन देवराज मेहता के कमीनेपन ने उसकी जिंदगी में जहर घोल दिया है । मुझे उस बेचारे से पूरी हमदर्दी है । देवराज को तो चाहे अभी मार दिया जाये । लेकिन मैं नहीं चाहता कि सुरेश को फांसी पर लटकना पडे । आप प्रतिमा से मिलकर उसे हालात की गम्भीरता का पूरा-पूरा एहसास करा दें । सुरेश ने देवराज मेहता को शूट कर देने के अलावा एक और भी बात नशे की झोंक में दोहराई थी । अगले सप्ताह वह दस दिन के लिये स्नोफाल देखने मंसूरी जा रहा है । प्रतिमा के बार-बार कहने पर ही उसने यह प्रोग्राम बनाया था । लेकिन अब वह जाना नहीं चाहती । कहती है सुरेश अकेला ही चला जाये वह यहीं रहेगी । इस बात ने सुरेश को बड़े पुख्ता ढंग से यकीन दिला दिया है कि देवराज मेहता और प्रतिमा मिलकर वाकई कोई खिचड़ी पका रहे हैं । प्रतिमा उसे बाहर भेज कर उसकी गैर मौजूदगी में देवराज के साथ खुलकर ऐश करना चाहती है । हो सकता है प्रतिमा की नीयत वाकई ऐसा कुछ करने की हो । लेकिन मैं इस पर हरगिज भी यकीन करने को तैयार नहीं हूँ कि प्रतिमा चाहती होगी, उसका पति देवराज मेहता को मारकर फांसी पर जा चढ़े । मेरा ख्याल है आप इस ढंग से उसे समझायेंगे तो उसका दिमाग ज़रूर सही ठिकाने पर आ जायेगा । आपके जाने से वह यह भी नहीं सोच सकेगी कि आपको सुरेश ने भेजा होगा । जबकि मेरे जाने से वह सीधा यही शक करेगी ।

सुधीर कुछ देर खामोश बैठा सोचता रहा ।

'मैं नहीं समझता कि तुम्हारी यह तरकीब कारगर साबित होगी ।' अन्त में वह बोला-'मेरे ख्याल से हमें इन्स्पेक्टर विजय कुमार की मदद लेनी चाहिये इस मामले में ।'

राजेश सुधीर को घूरने पर विवश हो गया ।

'वह इसमें क्या करेगा ?' उसने पूछा ।

'अपने पुलिसिया रोब से प्रतिमा दुग्गल का दिमाग मुकम्मल तरीके से दुरुस्त कर सकता है । सुरेश दुग्गल को गिरफ्तार कर सकता है । उसे उसके भयानक इरादे से बाज आने का ऐसा सबक सिखा सकता है जिसे वह कभी नहीं भूलेगा । देवराज की हिफाजत

के लिए बॉडीगार्ड भी दे सकता है । इनके अलावा और भी दर्जनों ऐसे तरीके वह सुझा सकता है । जो तुम्हारे तरीके से कई गुना बेहतर साबित हो सकते हैं ।'

'लगता है, आप सीरीयस नहीं हैं ।' राजेश क्षुब्ध भाव से बोला-'या फिर जानबूझकर अनजान बन रहे हैं ?'

'कैसे ?'

'कैसे क्या ? आप अच्छी तरह जानते हैं कि पुलिस इस मामले में कुछ भी नहीं कर सकती, न ही आपके बताये किसी तरीके से इस वारदात को रोका जा सकता है । इसे रोकने का इकलौता मुनासिब तरीका प्रतिमा को खुदा का खौफ दिखाकर उसके दिमाग को ठिकाने पर लाना है और इस काम को अन्जाम देने वाले इकलौते मुनासिब आदमी आप हैं ।'

'ठीक है, ठीक है । ज्यादा मस्का मत लगाओ' सुधीर अनिच्छापूर्वक बोला-'साफ-साफ बताओ मैंने करना क्या है ?'

राजेश ने राहत की पूरी एक मील लम्बी सांस ली । वह पहली बार मुस्कराया ।

'अभी पौने सात बजे हैं ।' वह अपनी रिस्ट वाच पर निगाह डालता हुआ बोला-'आप आठ बजे के करीब यहां से प्रतिमा के पास चले जाइये । उस वक्त सुरेश घर पर नहीं होगा । वह बता रहा था कि साढ़े आठ बजे उसका किसी के साथ अप्वाइन्टमेंट है । बार में सुरेश की बातचीत सुनने और उसके रंग-ढंग देख चुकने के बाद मैं समझता हूँ, इस मामले में लापरवाही बरतना या ज्यादा देर करना खतरनाक साबित हो सकता है । आप प्रतिमा के साथ सख्ती से पेश आकर उसे इस कदर डरा दें वह देवराज मेहता से फिर कभी मिलने का नाम न ले और अगले हफ्ते स्नोफाल देखने सुरेश के साथ चली जाये । तनिक रुककर बोला-'मैं भी आज रात में किसी वक्त सुरेश से मिल लूंगा । उसे इस बात के लिये रजामन्द करूँगा कि वह देवराज मेहता की नौकरी छोड दे । एडवेंचर जैसे प्रतिष्ठित अखबार के किसी खुद्दार रिपोर्टर का देवराज मेहता के बेहूदा वीकली के लिये रात में गलत ठिकानों और अड्डों में भटकना लानत की बात है । वैसे भी, एक अखबार में फुलटाइम नौकरी करते हुए दूसरे पेपर के लिये पार्ट टाइम करना सरासर गलत है । आप भी प्रतिमा से कहिए कि सुरेश पर पार्टटाइम नौकरी छोड़ने के लिए दबाव डाला जा रहा है । उसे समझाइए कि अतिरिक्त आमदनी के लालच को छोड़कर खैरियत इसी में है वह अपने पति सहित देवराज के साए तक से दूर रहे ।'

'लेकिन मैं उसे यह यकीन कैसे दिलाऊंगा कि वाकई...।'

'यह आप मुझसे पूछ रहे हैं ?' राजेश बेसब्री से उसे बीच में टोकता हुआ बोला-'जबकि गोली देने में आप मुझसे ज्यादा उस्ताद है । खुद को उसके पति का दोस्त जाहिर

करने के अलावा और जो चाहे कह दीजिये ।'

'फिर भी मुझे देवराज और प्रतिमा की आशनाई के बारे में थोड़े बहुत तथ्यों की जानकारी तो होनी ही चाहिये । वरना मैं यह दावा कैसे कर सकूंगा कि अपने पति को वाच कराने के लिये देवराज की बीवी ने मेरी सेवाएं प्राप्त की थीं । और मैं उसे वाच करता हुआ प्रतिमा तक पहुँच गया ।'

राजेश को मानना पड़ा कि सुधीर की बात वास्तव में दमदार थी ।

'ऐसी कोई ठोस जानकारी तो खुद मेरे पास भी नहीं है ।' वह बोला-'सुरेश की बातों से मैं सिर्फ इतना ही समझ सका हूं । यह सिलसिला करीब डेढ़ महीने पहले शुरू हुआ था । देवराज मेहता के निर्देश पर सुरेश ने एक रात नाइट क्लब में जाना था । लेकिन नाइट क्लब के नियमानुसार कोई भी आदमी वहां अकेला नहीं जा सकता । साथ में स्त्री होनी जरूरी है । देवराज ने सुझाव दिया, पेपर के खर्चे पर सुरेश अपनी बीवी को साथ ले जाए । सुरेश ने यही किया । बाद में किसी लड़की के साथ देवराज मेहता भी वहां पहुँच गया । इस तरह देवराज मेहता और प्रतिमा का पहली बार परिचय हुआ । एक सप्ताह के अंदर विभिन्न रात्रि स्थलों पर इसी ढंग से चार दफा दोनों की मुलाक़ातें हुई । आधुनिक और स्वच्छन्द विचारों वाली प्रतिमा कम्पनी पाकर बहुत खुश होती थी । फिर कई बार ऐसा हुआ कि सुरेश को शहर के दूसरे कोने में काम से भेजकर देवराज प्रतिमा से अकेला भी मिला । हो सकता है इन मुलाकातों के पीछे उन दोनों का कोई गलत मकसद न रहा हो । लेकिन सुरेश को पक्का यकीन है कि मालिक होने की अपनी हैसियत को देवराज मेहता गलत ढंग से इस्तेमाल करता है । उसे जानबूझ कर दूर ऐसी जगहों पर ऐसे कामों से भेजता रहता है ताकि वह जल्दी न लौट पाए और इस बीच खुद देवराज मेहता उसकी बीवी के साथ आशनाई की पूरी-पूरी सहूलियत पा सके । लेकिन इस सब कुछ के बावजूद वह यकीनी तौर पर नहीं जानता कि उन दोनों के बीच जिस्मानी ताल्लुकात हैं या नहीं ।'

'इसका मतलब यह हुआ अगर प्रतिमा मेरी कही गई हर बात से इंकार कर देती है तो मैं उसे कोई भी ऐसा सही वाकया नहीं सुना सकता । जिससे उसे यकीन हो जाये कि मैं वास्तव में देवराज मेहता पर नजर रखता रहा हूँ और उन दोनों की काली करतूतों का ठोस तो दूर मामूली सबूत भी मेरे पास नहीं है ।'

'हां कुछ ऐसी ही स्थिति है ।' राजेश विवशतापूर्वक बोला-आपको ऐसा जाहिर करना पड़ेगा वह समझ बैठे कि गोलमोल ढंग से जितना आप उसे बता रहे हैं उससे कई गुना ज्यादा और ठोस जानकारियां आपके पास हैं ।'

'तुम खामखाह हवा-बाजी की बातें कर रहे हो, राजेश ।' सुधीर बोरीयत एवं खीज भरे स्वर में बोला-'तुम्हारा यह तरीका एकदम बकवास है । अगर वह औरत जरा भी

समझदार हुई तो फौरन समझ जायेगी कि मैं जबरदस्ती झूठ बोलने की कोशिश कर रहा हूँ ।'

'ऐसा नहीं होगा ।'

'क्यों ?'

'इसलिये कि मैं प्रतिमा से अच्छी तरह वाकिफ हूँ ।'

'तो इससे क्या फर्क पड़ता है ।'

'बहुत भारी ।'

'कैसे ?'

'सुनिए सुरेश के कहने के मुताबिक यह तय बात है कि देवराज मेहता और प्रतिमा के बीच कुछ ऐसा वैसा ज़रूर है । यह ऐसा वैसा किस हद तक है हम नहीं जानते । अब आप इस ढंग से सोचिए कि पति को धोखा देकर गैर मर्द के साथ आशनाई करने वाली प्रतिमा के मन में क्या अपराध भावना घर नहीं कर गई होगी । मेरा दावा है, किसी डिटेक्टिव को अपने दरवाज़े पर पाकर ज़रूर प्रतिमा छक्के छूट जायेंगे ।'

'तुम बहुत ही बेहूदा और बेसर पैर किस्म का काम कराना चाहते हो मुझसे ।' सुधीर बड़े ही निरुत्साहित ढंग से बोला-खैर, कोई बात नहीं । तुम्हारी खातिर यह भी करूंगा । यह बताओ सुरेश दुग्गल रहता कहां है ?'

'लिटन रोड पर बत्तीस नम्बर की चार मंजिल इमारत में ग्राउन्ड फ्लोर पर दांयी ओर पहला फ्लैट उसी का है ।'

सुधीर ने एक कागज पर नोट कर लिया ।

'ठीक है ।' वह बोला-'कल सुबह चला जाऊंगा ।'

'नहीं, नहीं । तब तक हो सकता है बहुत देर हो जाये ।' राजेश ने हड़बड़ाकर कहा । फिर अपनी रिस्टवाच पर निगाह डाली-'साढ़े सात बज रहे हैं । आप अभी चले जाइये । पहुँचने में पैतीस चालीस मिनट लगेंगे । तब तक करीब आठ बज जायेंगे । उस वक्त सुरेश भी घर पर नहीं होगा ।'

'अच्छा भई ।' सुधीर खड़ा होकर बोला-'जैसी तुम्हारी मर्जी ।'

'और सुनिए प्रतिमा से मिलने के बाद आप सीधे अपने फ्लैट पर ही पहुँचीएगा ।'

'वो किसलिये ?

'इसलिये कि राजेश दी ग्रेट अपनी साल गिरह का जश्न बड़ी धूम-धाम से आपके दरे दौलत पर ही मनायेंगे ।' राजेश मूड में आता हुआ बोला ।

'इस मेहरबानी की कोई खास वजह है ?'

'बेशक ।'

'क्या ?'

'खाकसार नहीं चाहता ।' राजेश ठेठ लखनवी अंदाज़ में बोला-'जनाब शरलॉक होम्स को इस नाचीज के झोंपड़े पर तशरीफ लाने की जहमत उठानी पड़े ।'

'लेकिन सपना का क्या रहेगा ? वह तो तुम्हारे घर पहुँच भी चुकी होगी ।'

'यह नाचीज गुलाम उस हसीना को भी हुजूरे आला की खिदमत में पेश कर देगा ।' राजेश ने बड़ी अदा से सर झुका कर कहा ।

सुधीर उसकी इस हरकत पर मुस्करा दिया ।

'ठीक है । मैं जा रहा हूँ ।' वह अपने डेस्क के पीछे से निकलता हुआ बोला-'तुम ऑफिस लॉक करके चाबी साथ ले आना ।' और दरवाज़े की ओर बढ़ गया ।

'जो हुक्म, मेरे आका ।' राजेश बड़े अदब से सर झुका कर बोला ।

सुधीर मुस्कराता हुआ ऑफिस से बाहर निकल गया ।

* * * * * *

सुधीर लिटन रोड पहुँचा ।

उस इलाके में नगर विकास प्राधिकरण की ओर से बहुत सी चार मंजिला इमारतें हाल ही में बनाई गई थीं । हर एक इमारत में खुले हवादार तीन कमरों वाले चौदह फ्लैट थे । ग्राउण्ड फ्लोर पर दो और बाकी फ्लोरों पर चार-चार । ये सभी फ्लैट माध्यम आय वर्ग वाले व्यक्तियों को अलाट किये गये थे ।

सुधीर को बत्तीस नम्बर की इमारत ढूंढने में कोई दिक्कत नहीं हुई । उसने करीब डेढ़ सौ गज आगे जाकर अपनी ब्यूक रोकी । दरवाज़े लॉक करके बेमन से पैदल वापस चल दिया ।

हालांकि राजेश की जिद के मुताबिक वह प्रतिमा दुग्गल से मिलने जा तो रहा था । लेकिन उस मुलाकात का कोई आशाजनक परिणाम निकलेगा । ऐसी उम्मीद उसे जरा भी नहीं थी ।

इस सिलसिले में एक और बात उसके गले से नीचे नहीं उतर पा रही थी । उसका तजुर्बा कहता था, अगर कोई आदमी किसी की हत्या करने का दृढ़ निश्चय कर लेता है तो वह हत्या करने से पहले यूँ उसका प्रचार करता नहीं फिरता । शराब पीकर किसी को कत्ल करने की धमकी देते फिरना महज दिल का गुब्बार निकालने वाली बात थी । ऐसे आदमी से किसी का खून करने की अपेक्षा नहीं की जा सकती ।

राजेश ने जो ढोल गले में डाल दिया था । उसे तो बजाना ही पड़ेगा । सुधीर ने सोचा । प्रतिमा पर अपनी मुलाकात की प्रतिक्रिया नोट करने के बाद, राजेश की मर्जी के खिलाफ वह सुरेश दुग्गल से मिलेगा । अपने ढंग से उसे समझायेगा । फिर अगर जरूरत पड़ी तो देवराज मेहता से भी मिलेगा । उस दौलतमंद जिद्दी अहंकारी आदमी को अपने गलत इरादों से बाज आने को कहेगा ।

इसी सोच में खोया सुधीर इमारत में दाखिल हो गया ।

सामने ऊपर जाने के लिए सीढ़ियां थीं । सीढ़ियों के दोनों तरफ एक-एक फ्लैट था ।

सुधीर दांयी ओर वाले फ्लैट के सम्मुख पहुँचा । पलभर हिचकिचाया-सा खड़ा रहा फिर प्रवेश द्वार में लगा घण्टी का बटन दबा दिया ।

भीतर कहीं घण्टी बजने की आवाज़ उसे सुनाई दी ।

चन्द क्षणोंपरांत खुद प्रतिमा दुग्गल ने दरवाजा खोला ।

सुधीर ने देखा करीब तेइस वर्षीय वह युवती वास्तव में अनिंद्य सुन्दरी थी । संगमरमर को तराशकर बनाई गई किसी कुशल शिल्पी की अनुपम रचना । सौंदर्य एव आकर्षण का अद्भुत सम्मिश्रण । अगर राजेश की भाषा में कहा जाए तो वह एकदम हाय-हाय करा देने वाली थी।

हालांकि सुधीर आश्चर्यजनक रूप से प्रभावित हुआ या । लेकिन उसने अपने किसी हाव-भाव से ऐसा कुछ भी जाहिर होने नहीं दिया ।

'मिसेज प्रतिमा दुग्गल ?' उसने शुष्क स्वर में पूंछा ।

प्रतिमा ने सर से पाव तक उसका निरीक्षण किया । उसके खूबसूरत चेहरे पर तनिक खीज-मिश्रित असमंसतापूर्ण भाव थे ।

'मैं ही हूँ । वह सर्द स्वर में बोली-'कहिये ?'

'तुम से कुछ बातें करनी हैं ।' सुधीर ने जान-बूझकर आपकी जगह तुम प्रयोग किया था ।

प्रतिमा के चेहरे पर बीज के भाव गहरे हो गये ।

'सॉरी, मिस्टर ।' वह पूर्ववत स्वर में बोली-'मैं अपरिचितों से कोई बात नहीं किया करती हूं ।' और तनिक पीछे हटकर दरवाजा बन्द कर लेना चाहा ।

सुधीर ऐसी किसी हरकत के प्रति पूरी तरह सावधान था । उसने अपना भारी बूट दरवाज़े में अड़ा दिया । फलस्वरूप वो पूरी तरह बन्द नहीं हो सका ।

'और किसी से करो न करो ।' वह डोर नॉब पर हाथ रखकर प्रतिमा के बन्द दरवाजा रखने के प्रयत्न को विफल करके पीछे की तरफ दरवाज़े के पल्ले को धकेल कर खोलता हुआ बोला-'मुझसे बातें करनी ही पड़ेगी ।'

प्रतिमा ने क्षुब्ध भाव से उसकी ओर देखा ।

'क्यों ?'

'इसलिये कि मैं देवराज मेहता के बारे में बातें करना चाहता हूँ ।' सुधीर ने उसी स्वर में जवाब दिया ।

प्रतिमा एकदम पीछे हट गई ।

'अगर तुम फौरन यहां से दफा नहीं हो गए...।' उसने कठोरतापूर्वक धमकी दी-'मैं पुलिस को फोन कर दूंगी ।'

सुधीर ने भीतर आकर द्वार बन्द कर दिया ।

'तुम क्यों तकलीफ करती हो ? यह काम मैं ही किये देता हूं । फोन कहां है ?'

'तुम ? कौन हो तुम ?'

'मैं डिटेक्टिव हूँ ।'

प्रतिमा ने चौंककर यूँ सुधीर की ओर देखा मानो एकाएक वह किसी दूसरे लोक का प्राणी नजर आने लगा था ।

'डिटेक्टिव ?' उसने अविश्वासपूर्वक पूछा-'लेकिन तुम यहां क्यों आये हो ? मि० मेहता के बारे में क्या कहना चाहते हो ?'

'मैं तुम दोनों के बारे में बहुत कुछ कहने आया हूँ ।'

'हम दोनों ? क्या मतलब ?'

'अनजान बनने की कोशिश मत करो । तुम खूब समझ रही हो कि मेरा मतलब तुमसे और देवराज मेहता से है । उस अफेयर से है जो तुम लोगों के बीच चल रहा है ।'

'लेकिन किसी डिटेक्टिव का मेरे जाती मामलों से क्या ताल्लुक है ?'

'अभी जान लोगी ।' सुधीर शुष्क स्वर में बोला-'मैं एक प्राइवेट जासूस हूँ । मेरा नाम सुधीर रंजन है । अब तुम फटाफट सोचकर जवाब दो । मुझसे बातें करना चाहती हो या फिर मैं तुम्हारे पति सुरेश दुग्गल के पास जाऊँ ?'

प्रतिमा ने हिकारत भरी नजरों से उसे घूरा ।

'सुरेश तुम्हारी बातों पर जरा भी कान नहीं देगा । वह मि० मेहता के लिये काम करता है ।'

'सुरेश की बात तो दर-किनार रही, तुम्हें भी मेरी बातों पर कान देने पड़ेंगे ।' सुधीर ने सख्ती से कहा-'तुम यह तो जानती हो कि तुम्हारा पति तुमसे पागलपन की हद तक मुहब्बत करता है । लेकिन यह नहीं जानती कि वह इतना घनचक्कर नहीं है जितना तुम उसे समझती हो । दुनियां में अभी इतना अन्धेर नहीं है जितना तुम समझ रही हो । सुनो, अगर मेरी रिपोर्ट उसे मिल गई तो तुम्हारी जान को वो बवाल खड़ा होगा जिसे जिन्दगी भर याद रखोगी ।'

प्रतिमा के चेहरे पर बौखलाहट साफ नजर आने लगी ।

'तुम्हारी रिपोर्ट ?' वह फंसी-सी आवाज़ में बोली-'तुम कहना चाहते हो कि उसने मुझे वाच कराने के लिये डिटेक्टिव की यानि तुम्हारी सेवायें हासिल की हुई हैं ?'

'बेशक ।'

'नहीं, यह नहीं हो सकता । सुरेश को मुझ पर पूरा भरोसा है ।'

'तभी तो तुम ऐसे गुल खिलाती रही हो । और उसके भरोसे का नाजायज फायदा उठाते हुए उसकी आंखों में मिर्च झोंकती रही हो । लेकिन तुम भूल गई कि वह गांठ में थोड़ी बहुत अक्ल भी रखता है ।'

प्रतिमा ने सर झुका लिया । कुछ देर खामोश खड़ी सोचती रही ।

'तुम मेरे पास किसलिये आये हो ?' अन्त में उसने पूछा-'मुझे ब्लैक मेल करने ?'

सुधीर मुस्कराया । इस अन्दाज में प्रतिमा की ओर देखा, मानो उसकी अक्ल पर अफसोस जाहिर कर रहा था ।

'औरत जितनी ज्यादा खूबसूरत होती है उतनी ही बेवकूफ भी होती है ।' वह उपहासपूर्वक बोला-'और तुम इस बात की जीती-जागती मिसाल हो ।' अचानक उसका स्वर कठोर हो गया-'मैं यहाँ तुम्हें ब्लैकमेल करने नहीं बल्कि तुम्हारे भेजे में थोड़ी अक्ल ठूँसने आया हूँ । पहले तो यह अच्छी तरह समझ लो कि सभी प्राइवेट जासूस न तो ब्लैकमेलर होते हैं और न ही दूसरों की कमजोरियां जानकर अन्य नाजायज फायदे उठाने वाले । तुम्हारी खुशकिस्मती है कि मैं तुम्हारे पति को बहुत ही अच्छा आदमी समझता हूँ । मुझे अफसोस है कि उसने तुम जैसी औरत से शादी की । जो उस बेचारे की जिन्दगी को नर्क बनाने पर तुली हुई है । कान खोलकर सुन लो, मैं तुम्हें एक मौका दे रहा हूँ । इससे पहले कि सुरेश को सच्चाई का पता लगे और वह खुदकुशी कर ले या तुम्हारी जान ले ले या देवराज मेहता को शूट कर दे या फिर तुम दोनों को ही मार डाले । तुम दिमाग से काम लो और देवराज मेहता के साथ अपने ताल्लुकात फौरन खत्म कर लो । मैं नहीं जानता, तुम सुरेश से कितना प्यार करती हो या करती भी हो कि नहीं । लेकिन किसी भी सूरत में तुम उस बेचारे को फांसी के फन्दे पर लटकता नहीं देखना चाहोगी, या चाहोगी ?'

प्रतिमा सर से पांव तक कांप गई ।

'नहीं ।' वह लगभग चिल्लाती हुई-सी बोली-'ओह, मेरे भगवान ! नहीं, कभी नहीं...मैंने सोचा तक भी नहीं था...।' और अचानक हाथों में चेहरा छुपाकर रोने लगी ।

'रोने से नहीं, सोचने से काम चलेगा ।' सुधीर ने कहा-'मुझे पता चला है, सुरेश अगले हफ्ते स्नोफाल देखने के लिये मंसूरी जा रहा है । यह प्रोग्राम उसने तुम्हारी जिद्द पर और तुम्हारी खातिर बनाया था । लेकिन अब तुम चाहती हो कि वह अकेला ही चला जाए ताकि तुम अकेली यहां रहकर देवराज के साथ खुलकर गुलछर्रे उड़ा सको ।'

'यह झूठ है ।' प्रतिमा पागलों की भांति चीखी-'मैं यहां अकेली रहकर कुछ सोच-विचार करना चाहती थी ।'

'झूठ है या सच । लेकिन सुरेश यही समझता है । और मेरी रिपोर्ट देखने के बाद उसे पूरा यकीन हो जायेगा ।' तनिक रुककर सुधीर ने पूछा-'जानती हो फिर क्या होगा ?'

प्रतिमा ने जवाब नहीं दिया । वह सिसकती रही ।

'वह देवराज मेहता को शूट कर देगा ।' सुधीर बोला-'फिर जो कुछ भी होगा तुम खुद अन्दाजा लगा सकती हो ।'

प्रतिमा ने अपनी सिसकियों पर काबू पाकर आंसुओं से तर आहत चेहरा ऊपर उठाया ।

'सुरेश को बताने के लिए...कोई खतरनाक बात तुम्हारे पास नहीं हो सकती ।' वह इस ढंग से बोली मानो खुद से ही बातें कर रही थी-'यह बिल्कुल गलत है...मेरा और देवराज का...।' फिर एकाएक चुप हो गई ।

'तुम दोनों की करतूतों का ऐसा कच्चा चिट्ठा मेरे पास है जिसे देखने के बाद तुम्हारा पति आपे से बाहर होकर कुछ भी कर गुजर सकता है ।'

सुधीर का सख्त स्वर ऐसा था कि यकीन आ ही जाये ।

प्रतिमा ने इन्कार करने की जरा भी कोशिश नहीं की ।

'तुम मुझसे क्या चाहते हो ?' वह क्षीण स्वर में बोली-'अगर सुरेश को पता चल गया कि तुम यहां आये थे..।'

'तुम हरगिज कबूल मत करना कि कभी मेरी सूरत भी देखी है ।' सुधीर ने तुरन्त जवाब दिया-'हालांकि यह बात मेरे पेशे के उसूलों के सरासर खिलाफ है । लेकिन इस मामले की नजाकत को देखते हुए तुम्हारी बेहतरी की खातिर मजबूरन मुझे ऐसा करना पड़ा है । तुम सुरेश को इस बात का शुब्हा भी मत होने देना कि तुम्हें पता है, उसने किसी प्राइवेट जासूस से तुम्हें वाच कराया है । वरना सब गड़बड़ हो जायेगा । तुमने ऐसा जाहिर करना है

जैसे खुद ही सोचने-विचारने के बाद तुम्हें अक्ल आ गई है । और उस मनहूस दिन को कोस रही हो जब पहली बार देवराज मेहता से तुम्हारी मुलाकात हुई थी । तुमने सुरेश को इस बात का भी पूरा यकीन दिला देना है, उसके साथ मंसूरी जाओगी । साथ ही उस पर यह भी दबाव डालो । वह देवराज की नौकरी जल्दी से जल्दी छोड़ दे । सुरेश एक अच्छा रिपोर्टर है । 'एडबेंचरर' से उसे खासी तनख्वाह मिलती है । जिसमें तुम चाहो तो दोनों का गुजारा बड़ी आसानी से और अच्छी तरह हो सकता है । आखिर तुम्हारे ऐशो-आराम की ज्यादा से ज्यादा सहूलियतें जुटाने की खातिर ही तो उस बेचारे ने पार्ट टाइम करना शुरू किया था ।' सुधीर प्रभावपूर्ण स्वर में कहता गया-'हो सकता है, तुम्हें अपने पति से रत्ती भर भी प्यार न हो और तुम उससे अलगाव चाहती हो । लेकिन ये सब बाद की बातें हैं । मौजूदा हालात में तुम्हारा सुरेश को यह यकीन दिलाना निहायत जरूरी है कि तुम उससे बेहद मुहब्बत करती हो तथा देवराज मेहता के साथ तुम्हारी मुलाकातें पूर्णतया औपचारिक रही हैं ।'

प्रतिमा एकदम से कुछ नहीं बोली । वह मन ही मन किसी निष्कर्ष पर पहुँचने की कोशिश करती प्रतीत हो रही थी ।

'अगर मैं ऐसा कर देती हूं ।' अन्त में वह धीमी-सी आवाज़ में बोली-'तो क्या तुम अपनी रिपोर्ट में ऐसा फेर-बदल कर दोगे कि सुरेश को कभी सच्चाई का पता न लग सके ?'

'हां, मैं वादा करता हूँ । लेकिन तुम्हें आज रात में ही यह सब कुछ करना होगा । क्योंकि मैं उसे ज्यादा देर नहीं लटका सकूंगा । कल सुबह फ़ोन द्वारा मुझे बता देना की तुम मेरे कहने के मुताबिक उसे यकीन दिला चुकी हो । । मेरा नम्बर नोट कर लो ।'

प्रतिमा थके से कदमों से चलकर छोटी-सी उस मेज के पास पहुँची । जहां टेलीफोन उपकरण के पास राइटिंग पैड और पैंसिल मौजूद थे ।

सुधीर ने अपने घर और ऑफिस के फोन नम्बर नोट करा दिये ।

'यह मेरे घर का नम्बर है ।' वह बोला-'आमतौर से सुबह साढ़े नौ बजे तक मैं घर पर रहता हूँ । फिर शाम साढ़े पांच, छ: बजे तक आफिस में । अगर तुमने कल दोपहर तक मुझे फोन नहीं किया तो फिर जो कुछ होगा उसकी जिम्मेदार तुम ही होगी ।'

प्रत्युत्तर में प्रतिमा ने सर हिलाकर सहमति दे दी ।

सुधीर फ्लैट से बाहर आ गया ।

इमारत से निकलकर निश्चिन्ततापूर्वक अपनी ब्यूक की और चल दिया । उसने रिस्ट वाच पर निगाह डाली । सवा आठ बजे थे ।

* * * * * *

सुधीर अपने फ्लैट पर पहुँचा ।

प्रवेश द्वार खोलते ही उसे ठिठक जाना पड़ा ।

ड्राइंगरूम में रेडियोग्राम से खासा तेज जॉज संगीत उभर रहा था । फर्श पर बिछा कालीन बण्डल की शक्ल में एक ओर लिपटा पड़ा था । सपना और राजेश एकदूसरे की बांहों में फँसे बड़ी तन्मयता से डांस कर रहे थे । प्रत्यक्षतः वे सुधीर के आगमम से पूरी तरह बेखबर थे ।

सुधीर ने दरवाज़े में खड़ा रहकर इन्तजार किया ।

राजेश और सपना पूर्ववत थिरकते रहे ।

अन्त में सुधीर गूँजते हुए नाटकीय स्वर में बोला 'स्टॉप इट, यू फूल ।'

दोनों के जिस्मों की हरकत में तुरन्त ब्रेक लग गया । उन्होंने एक साथ सर घुमाकर दरबाजे की दिशा में देखा । अगले ही क्षण सपना ने स्वयं को राजेश की बांहों से मुक्त करना शुरू कर दिया और राजेश शरारतन उसे और भी ज्यादा मजबूती से कसने की कोशिश करने लगा । आखिर सपना को उसे जबरदस्ती परे धकेलकर खुद को छुड़ाना पड़ा । फिर उसने आगे बढ़कर रेडियोग्राम का स्विच ऑफ कर दिया ।

तब तक सुधीर कमरे में आकर दरवाजा बन्द कर चुका था ।

राजेश ने कृत्रिम क्रोधपूर्वक उसे घूरा ।

'सत्यानाश कर दिया आपने ।' वह झुंझलाने का अभिनय करता हुआ बोला-'दो जवान दिल बेहद करीब आकर एक-दूसरे की धड़कनें गिन रहे थे कि आप कबाब में हड्डी की तरह आ गिरे ।' फिर सपना की ओर पलट गया-क्यों डार्लिंग ? शरलक होम्स की बेवक्त एन्ट्री ने सब गुड़ गोबर कर दिया न ?'

सपना कुछ नहीं बोली । बस आग्नेय नेत्रों से उसे घूर कर रह गई ।

'अरे, तुम्हें क्या हुआ ?' राजेश चौंकता हुआ-सा 'बोला-'अभी-अभी तो तुम कह रही थीं-आई वांट किस यूअर लिप्स टू रैस्ट यू मोर एन्ड मोर । और अब तेवर चढ़ा लिये हैं ।

वो मैं कह रही थी ?' सपना ताव खाकर बोली ।

'नाराज क्यों होती हो ? चलो, मैं ही कह रहा था । लेकिन मेरी इस बात से सहमत तो तुम भी थीं ।'

'मैं और सहमत थी ?' सपना हाथ नचाकर बोली 'शक्ल देखी है । अपनी ?'

'बिल्कुल देखी है । थोड़ी देर पहले तुम्हारी आंखों में भी देखी थी । अगर जासूस साहब न आए होते तो खुद को तुम्हारे दिल में बसता हुआ भी देख लेता । लेकिन, हाय री तकदीर !' राजेश गहरी सांस लेकर चुप हो गया ।

'इसका मतलब है चीटी के पर निकलने लगे हैं ।'

'कैसे ?'

'तुम जैसा जोकर भी ऐसे ख्वाब जो देखने लगा है ।'

'मैं जोकर हूँ ?'

'और क्या हो ?'

'तुम दोनों अपनी यह नोंक-झोंक किसी और वक्त लिये उठा रखो तो बेहतर होगा । सुधीर हस्तक्षेप करता हुआ बोला-'मुझे क्यों खामाखाह बोर कर रहे हो ?'

'सॉरी, मैं भूल गया था कि आप भी बोर हो जाते हैं ।' राजेश ने मजाकिया ढंग से कहा फिर अधिकारपूर्वक बोला-'सपना, केक उठाकर लाओ । राजेश दी ग्रेट अपना बर्थ डे केक काटेंगे ।'

'खुद ले आओ ।' सपना ने दो टूक स्वर में कहा 'मैं तुम्हारी नौकर नहीं हैं ।

'नौकर तुम्हें कहा किस उल्लू के पट्टे ने है ? तुम तो मेरी मलिका...सॉरी... आई मीन मालिक हो ।'

'राजेश !' सपना दांत पीसती हुई बोली-'माइंड युअर लैंगुयेज ।'

'एज यू से, मैडम !' राजेश ने कदमों में बिछ जाने वाले अन्दाज में कुछ इस ढंग से झुक कर कहा कि सपना बरबस मुस्कराने पर विवश हो गई ।

'रिपोर्टर साहब !' सुधीर ने टोका ।

'फरमाइये, जासूस साहब ।' राजेश तत्पर स्वर में बोला ।

'अगर जन्मदिन आज ही की तारीख में मनाना चाहते हो तो यह ड्रामेबाजी बन्द करो ?' सुधीर ने कहा-'केक ले आओ और काटो ।'

'मिस सपना, विल य प्लीज हैल्प मी ?' राजेश बड़े ही शिष्ट ढंग से खुशामदी लहजे में सपना को सम्बोधित करता हुआ बोला-'देखो न आज अपन का बर्थ डे है । अगर तुम मुझे खुले दिल से कोआपरेट करोगी तो तुम्हारे जन्मदिन पर दिल के तमाम दरवाज़े, खिड़कियां ही नहीं बल्कि रोशनदान तक भी. खोलकर तुम्हे कोआपरेट करूंगा । मैं वादा करता हूँ ।

मानो इसी बात का इन्तजार था । सपना उठकर किचन की ओर चली गई ।

थोड़ी देर बाद केक, छुरी, मोमबत्तियाँ वगैरा लेकर लौटी ।

केक मेज पर रखकर उस पर मोमबत्तियां सजाकर दीं । 'हैप्पी बर्थ डे टू यू' का रिकार्ड डिस्क पर चढ़ाकर रेडियोग्राम का स्विच ऑन कर दिया ।

राजेश ने बड़े ही ड्रामाई अन्दाज में मोमबत्तियां बुझाकर छुरी उठाई और इस ढंग से केक काटा मानो कोई महान कार्य कर रहा था ।

सुधीर और सपना ने तालियां बजाते हुये उसे मुबारकबाद दी ।

राजेश ने अपने हाथ से एक-एक केक पीस उन्हें खिलाया । फिर एक पीस अपने मुंह में रखकर छुरी सपना को दे दी ।

सपना ने केक के बड़े-बड़े तीन टुकड़े तीन प्लेटों में सजा दिये । फिर तीनों सोफे पर बैठकर केक खाने लगे ।

'माई बर्थ डे, प्रेजेंट, मिस सपना !' राजेश ने पठानी ढंग से तकाजा किया ।

'सब्र से काम लो ।' सपना बोली-'ज़रूर मिलेगा ।'

सपना केक खत्म करके उठी । रेडियोग्राम के ऊपर रखा अपना हैंडबैग खोल कर एक खूबसूरत पैकेट निकाला । पुनः मुबारकबाद देते हुए राजेश को थमा दिया ।

राजेश ने आतूरपूर्वक पैकेट खोला । लेकिन अन्दर से निकली चीज पर नजर पड़ते ही वह तो सचमुच बुरी तरह खिसिया गया और सुधीर तथा सपना का जोरदार संयुक्त ठहाका ड्राइंगरूम मे गूंज गया ।

प्लास्टिक की खूबसूरत कारीगरी का नमूना वो एक उल्लू था । और लगातार राजेश की ओर सर हिलाए जा रहा था ।

राजेश के चेहरे से खिसियाहट गायब हो गई । हंसती हुई सपना को उसने इस ढंग से घूरा मानों कच्ची चबा जायेगा ।

'तुम्हारे लिये यह एक नायाब तोहफा है ।' सपना हंसी पर काबू पाकर बोली-'पसन्द आया'

'हां, बहुत ज्यादा ।' राजेश भुनभुनाया ।

'आना भी चाहिये था ।' सपना ने फब्ती कसी 'आखिर तुम्हारा हमशक्ल ही नहीं हमअक्ल भी तो है ।'

राजेश की सूरत सचमुच देखने वाली थी । वह कुछ नहीं बोला ।

'वंडरफुल... "मैचलस प्रेजेंट ।' सुधीर अभी भी हंसता हुआ कह रहा था-'तोहफे के चुनाव में तुमने सचमुच कमाल किया है, सपना ।'

'रिपोर्टर साहब ।' सपना बोली-'आज तुम्हारा जन्मदिन है । तुम्हें तो खुश होना चाहिये । इस तरह मुहर्रमी सूरत क्यों बनाए बैठे हो ?'

राजेश का जी चाहा उस उल्लू को सपना के मुंह पर दे मारे । मगर किसी प्रकार खुद को जब्त कर गया ।

सपना ने उसके हाथ से उल्लू ले लिया ।

'तुम्हारा यह बिरादर इतना करामाती है कि अभी तुम्हे खुश कर देगा । वह बोली और एक हाथ में उल्लू का पट वाला भाग दबाकर दूसरे हाथ से उसका सर ऊपर खींचा तो उसके दो भाग हो गए । उसके अन्दर से निकले पार्कर पैन सेट पर नजर पड़ते ही राजेश वाकई मुस्कराने पर विवश हो गया ।

उसकी यह मुस्कराहट उस वक्त तो बिल्कुल एक कान से दूसरे तक खिंच गई जब सुधीर ने सोने का खूबसूरत टाईपिन बतौर तोहफा उसे दिया ।

राजेश ने गिनकर पूरे दस बार उन दोनों का शुक्रिया अदा किया । फिर भागकर किचन में पहुँचा । शैम्पेन का बोतल ओपनर और तीन गिलास लेकर उल्टे पैरों वापस लौट आया ।

यूं वे तीनों मदिरापान से परहेज करते थे । लेकिन राजेश के जन्मदिन पर उसका दिल रखने के लिये सुधीर और सपना ने भी कोई आपत्ति प्रकट नहीं की ।

राजेश ने बोतल सपना को थमा दी ।

सपना ने बड़ी एहतियात से बोतल का कार्क उड़ाया और तीनों गिलास भर दिये ।

शैम्पेन की चुस्कियों के बीच, सुधीर ने, प्रतिमा दुग्गल से हुई अपनी मुलाकात के बारे में विस्तारपूर्वक राजेश को बता दिया ।

'मैंने उसे न सिर्फ समझाया है बल्कि बेहद डरा भी दी है ।' अन्त में सुधीर बोला-'मुझे यकीन है, अब वह देवराज मेहता को भुलाकर सुरेश की वफादार बीबी बनकर रहेगी ।'

'वैरी गुड । थैक्यु वैरी मच ।' राजेश ने कृतज्ञतापर्वक कहा । तनिक रुककर बोला-'डिनर के बाद मैं सुरेश को पकड़ने की कोशिश करूंगा । अगर वह मिल गया तो उसे मैं समझा दूँगा ।'

'बाई दी वे, राजेश ने देवराज मेहता के बारे में जो कुछ मुझे बताया है ।' सपना ने मत व्यक्त किया-'उसे देखते हुए उस जैसे आदमी को मार डालना ही बेहतर है ।'

'तुम्हारी यह चाहत जल्दी पूरी हो जायेगी ।' राजेश ने कहा-'फिलहाल इतना ही समझो कि वक्ती तौर पर उसकी मौत टल गई है । वरना देवराज मेहता की खुराफातों की वजह से दर्जनों लोग उसके खून के प्यासे हो सकते हैं । और उनमें से कोई न कोई देर-सवेर उसे ठिकाने ज़रूर लगा देगा । मैं सिर्फ इतना चाहता था कि यह नेक काम सुरेश दुग्गल न करे ।'

बोतल में बची शैम्पेन सपना ने तीनों खाली गिलासों में डाल दी ।

'नौ बज रहे हैं ।' सुधीर रिस्टवाच पर निगाह डालता हुआ बोला-'इसे खत्म करो और चलो । भूख लगने लगी है ।'

तभी टेलीफोन की घण्टी की आवाज़ सुनाई दी ।

सुधीर ने रिसीवर उठा लिया ।

'सुधीर रंजन ।' वह बोला ।

'मि०. सुधीर रंजन !' नारी कंठ से निकली भयभीत चीखती-सी आवाज़ लाइन पर उभरी-भगवान के लिये सुरेश को रोको ! वह अभी-अभी रिवाल्वर लेकर देवराज मेहता की हत्या करने गया है ।'

'तुम मिसेज दुग्गल बोल रही हो ?'

'हां, मैं ही हूँ । कुछ करो, प्लीज ! सुरेश गुस्से में पागल हो रहा है । वह सीधा देवराज मेहता के घर गया है । फॉर गॉड्स सेक । उसे किसी तरह रोको ।'

'तुमने पुलिस को इत्तिला कर दी है ?'

'पुलिस ? नहीं...नहीं...। मैं उसे गिरफ्तार कराना नहीं चाहती । आप जल्दी से जाकर उसे रोक लो प्लीज!'

'देवराज मेहता रहता कहाँ है ?'

'उनतीस बीच रोड पर एक पीली दो मंजिला कोठी मैं ।

'मैं फौरन जा रहा हूँ ।'

सुधीर ने रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया ।

'सपना, फ्लाइंग स्कवाड को फोन कर दो ।' वह जल्दी-जल्दी बोला-'सुरेश दुग्गल पिस्तौल लेकर उन्नतीस बीच रोड पर देवराज मेहता की हत्या करने गया है ।' फिर राजेश से कहा-'आओ, राजेश ।

दोनों फ्लैट से निकले । दौडकर सीढियां उतरे और इमारत के बाहर खड़ी ब्यूक में जा बैठे ।

ब्यूक तोप से छूटे गोले की तरह भाग चली ।

दिसम्बर की कड़कड़ाती सर्दी की वजह से सड़के इस वक्त लगभग वीरान थीं । कार अस्सी किलो मीटर फी घण्टा की रफ्तार से दौड़ रही थी । और सुधीर था कि एक्सीलेटर पर दबाव बढ़ाता जा रहा था ।

'थोड़ा आराम से चलिए । ऐसा न हो कि हमारे ही अंजर-पंजर रास्ते में बिखर जायें ।' राजेश बोला-'सपना ने पुलिस को फोन कर दिया होगा । अगर बीच रोड के आस-पास कोई गश्ती पुलिस कार हुई तो रेडियो मैसेज मिल जाएगा । और वे लोग उस बेवकूफ को रोक लेंगे ।

'तुम आंखे बन्द कर लो ।' सुधीर ने उसे झिड़क दिया ।

राजेश ने देखा स्पीडोमीटर की सुई सौ के अंक के आस-पास थरथरा रही थी । उसने सचमुच आंखे बन्द कर ली ।

ब्यूक अब शहर से बाहर जाने वाली सड़क पर दौड़ रही थी ।

'अगर कोई गश्ती कार आस-पास नहीं हुई तो गड़बड़ हो जाएगी ।' सुधीर बड़बड़ाया- 'वह बेवकूफ हमें मैसेज मिलने से पहले ही घर से चल चुका था ।'

'समझ में नहीं आता इस सुरेश के बच्चे को अचानक हो क्या गया ? जिस ढंग से आपने प्रतिमा को समझाया था । उससे मैं तो आश्वस्त हो गया था कि सुरेश अपना इरादा बदल देगा ।'

'मेरा भी यही ख्याल था ।' सुधीर बीच रोड पर कार मोड़ता हुआ बोला-'प्रतिमा ने फोन पर इस बारे में कुछ नहीं बताया । सिर्फ इतना कहा था कि सुरेश रिवाल्वर लेकर देवराज मेहता को मारने गया है । हो सकता है ऐन वक्त पर उस औरत ने अपना विचार बदल दिया हो । और उसे कोई ऐसी पट्टी पढ़ा दी हो जिससे वह आपे से बाहर होकर फौरन यह फैसला कर बैठा ।' चन्द क्षण मौन रहने के बाद उसने पूछा-'सुरेश के पास मोटरसाइकिल वगैरा है ?

'क्रीम कलर का चेतक है ।'

सुधीर ने कार की स्पीड कम करनी शुरू कर दी ।

'अगर वहां पुलिस पहुँच गई हो । वह बोला-'और सुरेश पकड़ा गया हो तो तुम बीच में टांग मत अड़ाना । उस आदमी का दिमाग दुरुस्त होने तक जेल ही उसके लिए सबसे बढ़िया जगह है ।'

'ठीक है ।' राजेश ने सहमति दे दी । 'तुम्हें पता है देवराज मेहता की कोठी कौन-सी है ?'

'हां, पिछले साल एक बार मुझे उसके यहां आना पड़ा था । अभी काफी आगे है ।

सुधीर राजेश के निर्देशानुसार कार ड्राइव करता रहा ।

आगे दूर-दूर तक किसी वाहन की टेल लाइट्स नजर नहीं आ रही थी । सर्दी की अधिकता की वजह से लोग अपने-अपने घरों में बन्द थे । उच्चवर्गीय इस पूरे इलाके में निस्तब्धता व्याप्त थी ।

अन्तिम बार बांयी तरफ कार घूमते ही राजेश बोल पड़ा-'दांयी तरफ चौथी कोठी है ।'

कोठी का गेट खुला पड़ा था ।

ब्यूक तेजी से भीतर दाखिल हो गई ।

पोर्टिको में काली चमचमाती नई एम्बेसेडर कार के पीछे क्रीम कलर का चेतक खड़ा था ।

'सुरेश का स्कूटर खडा है ।' राजेश उत्तेजित स्वर में बोला-'वह आ चुका है ।'

तभी कोठी का प्रवेश द्वार खुला, एक मानवकृति दौड़ती हुई-सी भीतर दाखिल हुई और दरवाजा पुनः बन्द हो गया । ठीक तभी ब्यूक स्कूटर के पीछे पहुँचकर रुकी ।

सुधीर ने इन्जिन बन्द कर दिया । दोनों फटाफट बाहर कूदे और प्रवेश द्वार की ओर दौड़ गए ।

अचानक अन्दर से तेज चीख और फिर कोई चीज फर्श पर टकराने की साफ आवाजें सुनाई दीं ।

आशा के विपरीत प्रवेश द्वार भीतर से लॉक्ड नहीं था । दबाव डालते ही वो भड़ाक से खुला । सुधीर और राजेश ठिठक गए ।

सामने लम्बे-चौड़े कमरे में टयूबलाइटों की दूधिया रोशनी दिन की भांति फैली हुई थी । दरवाज़े से करीब आठ फिट दूर फर्श पर पीठ के बल पड़ा एक अपटुडेट युवक उठने की चेष्टा कर रहा था । उसका मुँह खुला, कुछ कहना चाहा, लेकिन शब्द गले से बाहर नहीं आ सके । अन्त में उसने कांपती उंगली से कोने में बनी सीढ़ियों की ओर इशारा कर दिया ।

सुधीर ने इंगित दिशा में देखा । सीढियों के दहाने के पास चांदी की एक ट्रे पड़ी थी । पास ही ट्रे गिलास और बोतल का कांच बिखरा हुआ था । फर्श पर शराब फैली पड़ी थी । सफेद लिबास वाला एक आदमी तेजी से सीढ़ियां चढ़ रहा था ।

सुधीर और राजेश भी सीढ़ियों की ओर झपटे ।

वह आदमी ऊपर जाकर गायब हो गया । ऊपर कहीं जोर से दरवाजा बन्द होने की आवाज़ सुनाई दी ।

सुधीर कांच के टुकड़ों से बच कर भरसक तेजी से सीढ़ियों पर दौड़ा । राजेश ने भी उसी का अनुकरण किया ।

ऊपर लम्बे गलियारे में बांयी ओर अन्तिम सिरे पर सफ़ेद लिबास वाला एक बन्द दरवाज़े को दोनों हाथों से पीट रहा था । दरवाज़े के ऊपर लाल बल्ब जल रहा था ।

कदमों की आहट पाकर सफेद लिबास वाला पलटा और भयभीत स्वर में बोला-भीतर से लाक्ड है ।'

सुधीर, अधेडावस्था के उस आदमी के लिबास से समझ गया कि वह घर का नौकर था ।

लगभग दौड़ता हुआ वह उसके पास पहुंचा । उसे एक ओर धकेल कर दरवाज़े पर जोर से कंधे का प्रहार किया ।

तभी बन्द दरवाज़े के पीछे फायर की आवाज़ गूँज गई ।

सुधीर पलभर हिचकिचाया फिर दोबारा प्रहार किया । दरवाजा सिर्फ चरमराकर रह गया ।

उसी वक्त गलियारे के दूसरे सिरे पर भड़ाक से एक अन्य दरवाजा खुला । सुधीर ने पलटकर देखने की कोशिश नहीं की ।

राजेश भी दौड़ता हुआ आ पहुँचा था ।

अधेड़ नौकर अब दीवार का सहारा लिए अलग बैठा लम्बी-लम्बी सांसें ले रहा था ।

सुधीर ने राजेश को इशारा किया ।

दोनों पीछे हटे और एक साथ पूरे जोर से दरवाज़े पर कंधे से प्रहार कर दिया ।

'फटाक' की आवाज़ करता हुआ दरवाजे का पल्ला भीतर की तरफ झूल गया । कब्जों से उखड़कर पल्ला अलग हो चुका था ।

सुधीर और राजेश चौखट का सहारा लेकर खुद को बचा गए वरना अपने ही वेग के कारण उन्होंने मुँह के बल अन्दर फर्श पर जा गिरना था ।

सुधीर ने बारूद की गंध महसूस करते हुए भीतर चारों ओर निगाहें दौड़ाई ।

लम्बा-चौड़ा कमरा स्टडी के अनुरूप सुसज्जित था । सामने काफी बड़े एक डेस्क के पीछे रिवाल्विंग चेअर पर नीला शानदार सूट पहने एक आकर्षक व्यक्तित्व वाला आदमी मौजूद था । करीब चालीस वर्षीय उस आदमी का जिस्म कुर्सी में बांयी ओर तनिक झुका हुआ था । सर कंधे पर ढलका हुआ था । उसकी छाती पर कोट में बांयी तरफ एक सूराख साफ नजर आ रहा था । स्पष्ट था कि वह मर चुका था ।

वह देवराज मेहता था ।

उसके ठीक सामने डेस्क के पास एक युवक खड़ा था । युवक के दांए हाथ में लापरवाही से लटके रिवाल्वर की नाल से अभी भी धुए की पतली-सी लकीर निकलती नजर आ रही थी । वह दरवाज़े की ओर से पीठ किये खड़ा कुर्सी में पड़े आदमी को घूरता प्रतीत हो रहा था ।

वह सुरेश दुग्गल था ।

सुधीर को उसका चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था ।

सहसा सुरेश दुग्गल दरवाज़े की ओर पलटा । उसके तमतमाए चेहरे पर विचित्र से असमंजसतापूर्ण भाव थे ।

'तुमने दरवाजा क्यों तोड़ दिया ?' वह भारी स्वर में बोला-'इस हरामजादे को शूट कर चुकने के बाद मैंने खुद ही दरवाजा खोल देना था ।'

सुधीर ने गहरी सांस ली । वह पलभर हिचकिचाया फिर सुरेश पर नजरें जमाए कमरे में दाखिल हुआ ।

'बेहतर होगा कि यह रिवाल्वर डेस्क पर रख दी । सुधीर हाथ फैलाता हुआ बोला ।

सुरेश दुग्गल ने खामोशी के साथ रिवाल्वर डेस्क पर रख दी ।

सुधीर आगे झुका, सावधानीपूर्वक रिवाल्वर को नाल पकड़ कर उठाया और अपने कोट की जेब में डाल लिया ।

सुरेश दुग्गल ने उसकी तरफ ध्यान न देकर मिचमिचाती आँखों से दरवाज़े की ओर देखा ।

'हैलो, राजेश ।' वह भारी स्वर में बोला । निकट खड़े सुधीर ने उसके मुंह से शराब के भभके छूटते महसूस किए और तनिक पीछे हट गया । सुरेश कहता गया 'मैंने तुमसे कहा था न कि इसे शूट कर दूँगा ? सो मैंने कर दिया । अब यह कोई खुराफात नहीं कर सकेगा ।'

'मैं जानता हूँ ।' राजेश थके-से स्वर में बोला 'लेकिन तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था, सुरेश ।' और धीरे-धीरे चलकर डेस्क के पास आ खड़ा हुआ ।

सुधीर एकटक देवराज मेहता की लाश को घूर रहा था ।

देवराज के चेहरे पर मृत अवस्था में भी आश्चर्य एवं अविश्वास के गहन भाव परिलक्षित हो रहे थे । मानो हत्यारे को सामने पाकर भी उसे अन्तिम क्षण तक भी कतई उम्मीद नहीं थी कि वह उसकी जान ले लेगा ।

सुधीर ने नोट किया । कोट में बने सूराख के आसपास खून का जरा-सा भी निशान तक नजर नहीं आ रहा था । मानो रिवाल्वर से निकली गोली ने सीधा दिल में घुसकर तत्क्षण उसकी जान ले ली थी ।

सुधीर डेस्क का चक्कर काटकर कुर्सी के पास पहुँचा ।

उसने देवराज का गाल छुआ । लाश अनपेक्षित रूप से कम गर्म महसूस हुई ।

अचानक पुलिस सायरन की तेज चीख नजदीक ही कहीं सुनाई दी । सुधीर फौरन लाश से परे हट गया ।

सायरन की लगातार तेज होती जा रही आवाज़ इमारत के सामने आकर एकाएक सुनाई देनी बन्द हो गई । फिर ऐसा प्रतीत हुआ कि कोई कार जोर से ब्रेक लगाकर रोकी गई थी । संक्षिप्त खामोशी के बाद कदमों की अस्पष्ट-सी आहट सुनाई दी ।

सहसा जोरदार कहकहा सुनकर सुधीर पलटा और सुरेश दुग्गल की ओर देखने लगा ।

वह राजेश की ओर देखता हुआ वहशियाना ढंग से हंस रहा था ।

'हंस क्यों रहे हो ?' राजेश ने शुष्क स्वर में पूछा । सुरेश दुग्गल की हंसी में ब्रेक लग गया ।

'देवराज मेहता भी मुझे देखकर इसी तरह हंसा था ।' सुरेश गम्भीरतापूर्वक बोला । नशे की वजह उसकी आवाज़ थरथरा रही थी-'जब मैंने उससे कहा कि मैं उसकी जान लेने वाला हूं तो वह सिर्फ हो हो करके हंस पड़ा था । और कुर्सी पर आराम से बैठा रहा था । उसे मेरी बात पर जरा भी विश्वास नहीं हुआ । उसके खोखले घमन्ड ने उसे स्वीकार नहीं करने दिया कि जो कुछ मैं कह रहा था कर भी गुजरूँगा ।' उसने कुर्सी में पड़ी देवराज मेहता की लाश की ओर घृणापूर्वक देखा 'यह इस कमीने की खसलत थी । अपने बड़प्पन की वजह से यह मेरी बात को महज मजाक ही समझता रहा । लेकिन आज तुम भी देख सकते हो कि यह खुद ही मजाक बन चुका है । यह मर चुका है । मैंने इसे मार डाला है और अब हंसने की बारी मेरी है ।'

सुरेश पुनः हंस पड़ा । प्रतिपल उसके अट्टहास तीव्रतर होते चले गये ।

अचानक उसकी हंसी रुक गई । दोनों हाथों से चेहरा ढंककर वह धीरे-धीरे नीचे बैठ गया और रोना शुरू कर दिया ।

राजेश या सुधीर ने उसे दिलासा देने की कोई कोशिश नहीं की ।

सीढ़ियों पर ऊपर आते भारी कदमों की आहट सुनाई दे रही थीं । फिर वे आहटें दरवाज़े के सामने आ रुकीं ।

राजेश और सुधीर दरवाज़े की तरफ पलट गये ।

बाहर कई पुलिसमैन मौजूद थे । वे निश्चय ही सपना के फोन के जवाब में वहां पहुंचे थे ।

* * * * * *

भारी बदन के अधेड पुलिस इन्स्पेक्टर ने सर्विस रिवाल्वर हिलाते हुए बारी-बारी से उन तीनों पर दृष्टिपात किया । फिर उसकी निगाहें देवराज की लाश पर केन्द्रित हो गयीं ।

'हैंडस अप ।' वह अधिकारपूर्वक बोला-'कोई भी अपनी जगह से न हिले ।'

राजेश ने प्रतिवाद करना चाहा लेकिन सुधीर ने उसे रोक दिया ।

दोनों ने हाथ ऊपर उठा दिए ।

'ऐ...तुम..!' इन्स्पेक्टर ने सुरेश दुग्गल को सम्बोधित किया-'यह रोना-धोना बंद करो । खड़े हो जाओ और इन दोनों की तरह हाथ ऊपर उठा लो ।'

सुरेश ने हाथ चेहरे के आगे से हटा लिये । उसने पहले अजूबे की तरह इन्स्पेक्टर को घूरा फिर सहमकर राजेश की ओर देखा और फिर चुपचाप खड़ा होकर हाथ ऊपर उठा दिये ।

इन्स्पेक्टर सावधानी से एक-एक कदम उठाकर भीतर आ गया ।

उसने गहरी सांस ली । मानो हवा को सूघ रहा था । फिर मुंह बिगाड़कर बोला-'हूँ, तो गोली चलाई गई है ? और इस आदमी का खून किया जा चुका है ।' उसने देवराज मेहता की लाश की ओर संकेत किया । फिर तनिक रुककर रोबीली आवाज़ में पूछा-'खून किसने किया है ?'

'मैंने ।' सुरेश फंसे से स्वर में बोला ।

राजेश को इन्स्पेक्टर की नाटकीयता पर ताव आ रहा था ।

सुधीर मन्द-मन्द मुस्करा रहा था । उसने देखा दरवाजे में एक सब-इन्स्पेक्टर खड़ा था । उसके तनिक पीछे दो पुलिसमैन तत्परता से खड़े थे । उनके पीछे गलियारे में तीन आदमी और मौजूद थे । उनमें एक सफेद लिबास वाला नौकर था, दूसरा वो अपटुडेट युवक था जो आते वक्त नीचे हॉल में पड़ा मिला था और तीसरा गोल चेहरे तथा धूर्त आंखों वाला अधेड़ न जाने कहां से आ टपका था । उन तीनों के चेहरों पर व्याकुलतापूर्ण भाव थे । वे दबी जबान में बातें कर रहे थे ।

'हूं, तो खूनी तुम हो ?' इन्स्पेक्टर ने सुरेश दुग्गल को सर से पांव तक घूरा-'तुम शक्ल से ही बदमाश नजर आते हो । गोली किससे चलाई थी ? रिवाल्वर से या पिस्तौल से ?'

'रिवाल्वर से ।' सुरेश दुग्गल बोला ।

'कहां है वो रिवाल्वर ?'

सुरेश दुग्गल ने सर हिलाकर सुधीर की ओर सँकेत किया ।

'इनके पास ।'

इन्स्पेक्टर ने सुधीर को घूरा । फिर सुरेश की तरफ पलट गया ।

'ये दोनों तुम्हारे साथी है ? बाकायदा गिरोह बनाकर हत्या करने आए थे । खैर, कोई बात नहीं । अच्छा हुआ मैं वक्त पर आ गया और तुम सबको रंगे हाथों पकड लिया । उसने कड़े स्वर में सुधीर को सम्बोधित किया-'ए मिस्टर, रिवाल्वर तुम्हारे पास है ?'

'हां ।' सुधीर ने कहा और अपना दांया हाथ नीचे गिराकर जेब की तरफ ले जाना चाहा ।

'ठहरो ।' इन्स्पेक्टर कड़ककर बोला-'हाथ ऊपर ही रखो ।' और अपने रिवाल्वर से सुधीर को कवर कर लिया-'मुझे बेवकूफ बनाना चाहते हो ?' तीस साल से पुलिस की नौकरी कर रहा हूँ । तुम जैसों की नस-नस पहचानता हूँ । चलो, तीनों दीवार के पास पहुँचो । मेरी तरफ पीठ करके अपने-अपने हाथ दीवार पर रखो और थोड़ा झुककर खड़े हो जाओ ।'

राजेश ने फौरन हाथ नीचे गिरा दिये ।

'व्हाट नानसेन्स ?' वह भड़ककर बोला-'अक्ल से काम लो, इन्स्पेक्टर । हमलोग चोर-उचक्के नहीं, शरीफ और इज्जतदार लोग हैं । यह प्राइवेट डिटेक्टिव...।'

'शरलक होम्ज है ?' इन्स्पेक्टर भौंहे चढ़ाकर बोला -'तुम इसके सहकारी डॉक्टर, वाटसन हो ?' फिर सुरेश दुग्गल की ओर संकेत किया-'यह खुद कानन डायल हैं ?' और देवराज की लाश की ओर इशारा किया' और यह तुम तीनों की सामूहिक शराफत का दस्तावेज है ?' एकाएक उसका स्वर कठोर हो गया-'यह खून का मामला है । ज्यादा स्मार्ट बनने की कोशिश मत करो । वरना खूनी के साथ-साथ तुम भी नप जाओगे ।' फिर वह सुधीर की ओर मुखातिब हो गया-'सुना नहीं तुमने ? दीवार के पास पहुँचो ।'

पूर्ववत मुस्कराता सुधीर इन्स्पेक्टर के कथनानुसार, दीवार के पास जा खड़ा हुआ ।

राजेश ने आग्नेय नेत्रों से इन्स्पेक्टर की ओर देखा ।

'तुम उस आदमी की जेब से रिवाल्वर निकालो ।' उसने एस० आई० को आदेश दिया-'फिक्र मत करना, मैं इसे बराबर कवर किए रहूंगा ।' और अपनी रिवाल्वर का रुख सुधीर की पीठ की ओर कर दिया ।

सब-इन्स्पेक्टर अनिच्छापूर्वक भीतर आया । उसके चेहरे पर साफ लिखा था कि इन्स्पेक्टर के काम करने का यह ड्रामाई ढंग उसे भी पसन्द नहीं आ रहा था ।

उसने सुधीर की जेब से रिवाल्वर निकाल ली ।

'लाओ, इसे मुझे दे दो ।' इन्स्पेक्टर ने कहा- 'लेकिन ठहरो, पहले इसकी बाकी जेबें भी थपथपाकर तसल्ली कर लो कि इसके पास कोई और हथियार तो नहीं है ।'

सब-इन्स्पेक्टर ने सुधीर की तमाम जेबें थपथपाई ।

'और कोई हथियार नहीं है ।' वह तनिक खीज मिश्रित स्वर में बोला । और रिवाल्वर लेजाकर इन्स्पेक्टर को दे दी ।

इन्स्पेक्टर ने रिवाल्वर की नाल सूंघी ।

'ठीक है, थोड़ी बहुत देर पहले ही इससे फायर किया गया है ।' वह इस ढंग से बोला मानो कोई बहुत बड़ा रहस्य प्रगट कर रहा था-'मैं समझता हूँ यही मर्डर वैपन है । अब तुम कुर्सी में पड़े उस आदमी को भी एक निगाह देख लो । हालांकि वह यहीं से मुर्दा नजर आ रहा है । फिर भी एहतियातन तसल्ली कर लो । क्योंकि मामला खून का है । और इन मामलों में जरा-जरा सी बातें भी बड़ी भारी एहमियत रखती हैं ।

सब-इन्स्पेक्टर डेस्क की ओर बढ़ गया ।

सुधीर भी पलट कर उसे देखने लगा ।

सब-इन्स्पेक्टर ने देवराज की नीचे लटकती मुर्दा बांह में नब्ज टटोलने की नाकाम कोशिश की ।

'यह मर चुका है ।' अन्त में उसने घोषणा की । लगता है गोली सीधी दिल में घुसी थी । कोट पर दिल के ऊपर सुराख तो बना हुआ है लेकिन खून जरा भी नजर नहीं आ रहा है । इसलिये लगता है गोली लगते ही मर गया था । उसने पलट कर इन्स्पेक्टर की ओर देखा -'अब क्या करना है ?'

'मैं बताता हूँ ।' राजेश बोला-'नीचे जाओ । अपने कार रेडियो पर हैडक्वाटर्स से सम्बन्ध स्थापित करो । यह तुम लोगों का नहीं होमी साइड वालों का केस है । और बेहतर होगा कि उन लोगों के आने तक इस कमरे की किसी चीज को हाथ तक न लगाओ ।'

सब-इन्स्पेक्टर तो सिर्फ उसे घूरकर रह गया । लेकिन इन्स्पेक्टर का चेहरा क्रोध से तमतमाने लगा ।

'तुम हमें हमारा धन्धा सिखा रहे हो ?' वह गर्ज कर बोला ।

'मैं सिर्फ नेक सलाह दे रहा हूँ ।' राजेश बोला' जहां तक धंधा सिखाने वाली बात है । ऐसी बेवकूफी मैं नहीं करूंगा । क्योंकि मैं जानता हूँ जो तोता जवानी में नहीं पढ़ सका । वो भला बुढ़ापे में क्या पढ़ेगा ?"

अधेड़ इन्स्पेक्टर अपने मातहतों के सामने यह सब सुनने के लिये तैयार नहीं था । उसने रिवाल्वर अपने होलस्टर में रख ली । निकट ही था कि वह राजेश पर हाथ उठा बैठता । लेकिन ऐन वक्त पर उसे एक ऐसी बात सूझ गई जो आरम्भ से ही खटक रही थी । हत्या जैसी बारदात के घटना स्थल पर रंगे हाथों पकड़े जाने के बावजूद तीनों भयभीत होना तो दूर पुलिस से जरा भी प्रभावित नहीं थे ।

'तुम आखिर अपने आपको समझते क्या हो ?' वह दांत पीसता हुआ बोला-'जानते हो, अगर तुम्हारा इस केस से ताल्लुक न भी हो तो भी मैं तुम्हें जेल की हवा खिला सकता हूं ।

'मैं अपने आपको वही समझता हैं जो मैं हूँ । यानि राजेश वर्मा, क्राइम रिपोर्टर, एडवेंचरर । राजेश उसी के स्वर की नकल करता हुआ बोला-'जानते हो, अगर मैं चाहूँ तो तुम्हें सुबह का अखबार देखकर अपना सर पीट लेने पर मजबूर कर सकता हूँ ? जिसमें तुम्हारी काबलियत, कार्यकुशलता, व्यवहार का चिट्ठा छपा होगा ।'

'तुम मुझे धमकी दे रहे हो ?'

'मैं तुम्हें असलियत बता रहा हूं ।' राजेश ठोस स्वर में बोला-'हम भी तुम्हारी तरह कानून के मुहाफिज हैं । उसने सुधीर की ओर इशारा किया-'इनका नाम सुधीर रंजन है । तुम्हें यहां पहुँचने की सूचना इन्हीं की सेक्रेटरी के माध्यम से प्राप्त हुई थी । हमने यहां आकर हत्या की एक वारदात को रोकने की कोशिश की थी । और तुम हो कि आते ही हम पर चढ़ना शुरू कर दिया और चढ़ते ही चले गये ।'

इन्स्पेक्टर कुछ नहीं बोला ।

'अगर अभी भी कोई शक शुबहा तुम्हारे दिमाग में है ।' राजेश कहता गया-'तो इन्स्पेक्टर विजय कुमार को आने दो । वह हमारे बारे में सब कुछ बता देगा ।

इन्स्पेक्टर के चेहरे पर खिसियाहट भरे भाव उत्पन्न हो गये । उसकी सारी फुंफां तेजी से खत्म होती जा रही प्रतीत होती थी ।

'मुझे किसी से कुछ नहीं पूछना है ।' वह शुष्क स्वर में बोला-'मैं सिर्फ इतना जानता हूँ कि यहां एक आदमी की हत्या हुई है । तुम लोग मौके पर मौजूद पाये गये हो । और एक रिवाल्वर, जिससे कुछ देर पहले ही फायर किया गया था भी बरामद हुई है । इन हालात में क्या करना होता है । यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ ।' उसने सब-इन्स्पेक्टर की ओर देखा-'तुम नीचे जाओ और हैडक्वाटर्स को सूचित कर दो ।'

सब-इन्स्पेक्टर तेजी से बाहर निकल गया ।

इन्स्पेक्टर ने सुरेश दुग्गल की ओर देखा । वह हाथ नीचे किये गुमसुम सा खड़ा था ।

'हूं, तो खूनी तुम हो ?' इन्स्पेक्टर ने अपने पेटेंट लहजे में पूछा-'इस आदमी का खून तुमने क्यों किया ?'

सुधीर आगे बढ़ा । और सुरेश दुग्गल के कन्धे पर हाथ रख दिया ।

'किसी भी सवाल का जवाब मत देना ।' वह बोला -'जो कुछ हम अब कहेंगे वही थोड़ी देर के बाद फिर दोहराना पड़ेगा । जबकि इस वक्त कुछ भी बताना जरूरी नहीं है ।

उसके स्वर में दृढ़ता थी-'बेहतर होगा कि हम सब इस कमरे को इसी तरह छोड़कर बाहर चले जाएं । मेरा ख्याल है इन्स्पेक्टर, तुम भी ताव-पेंच खाना छोड़कर हालात को सरसरे तौर पर समझ लो । ताकि इन्स्पेक्टर विजय कुमार के सामने बुत बने न खड़े रहो ।' उसने सुरेश की ओर सर हिलाया-'यह सुरेश दुग्गल है । राजेश की तरह यह भी एडवेंचरर का क्राइम रिपोर्टर है । मैं और राजेश अगर एक मिनट पहले भी यहां पहुँच जाते तो इसे देवराज मेहता यानि मृतक को शूट करने से रोक सकते थे । बाहर गलियारे में मौजूद तीन आदमियों में भी दो हमारी इस बात की गवाही दे सकते हैं । मैं नहीं जानता उनमें से तीसरे आदमी ने भी कुछ देखा था या नहीं ।'

इन्स्पेक्टर ने सुधीर को घूरा मानो वह पूछना चाहता था कि सुधीर ने यह सब उसे पहले ही क्यों नहीं बताया लेकिन फिर उसने अपना इरादा बदल दिया ।

'और कुछ ?' उसने पूछा ।

'नहीं ।' सुधीर बोला-'अब अगर इजाजत हो तो हम लोग नीचे बैठकर इन्तजार करना चाहते हैं ।'

'ठीक है ।' इन्स्पेक्टर शुष्क स्वर में बोला-'लेकिन नीचे से कहीं और रफू चक्कर मत हो जाना ।'

सुधीर, राजेश और सुरेश दुग्गल सहित कमरे से बाहर आ गया । सुरेश दुग्गल लड़खड़ाता सा चल रहा था । और सुधीर ने उसे सहारा दे रखा था ।

वे गलियारे में खड़े तीनों आदमियों के पास पहुँचे ।

'मि० मेहता मर चुके हैं ।' सुधीर ने उन तीनों से कहा-'यहां खड़े रहने का कोई फायदा नहीं है । आओ, नीचे चल कर बैठते हैं । अभी और पुलिस अधिकारी आयेगा और हम सबको अपना-अपना बयान देना होगा ।'

वे तीनों कुछ नहीं बोले ।

सुधीर सुरेश को सहारा दिये सीढ़ियों की तरफ बढ़ा ।

पल भर हिचकिचाने के बाद वे तीनों भी उनके पीछे चल पड़े ।

तभी इन्स्पेक्टर दरवाज़े में प्रगट हुआ ।

'मैं यहीं रहकर घटना स्थल की निगरानी करूंगा ।' वह दरवाज़े के पास खड़े दोनों पुलिसमैनों से बोला-'तुम नीचे जाकर इन लोगों पर नजर रखो । ये न तो आपस में बातें करने पायें और न ही इनमें से कोई भी मकान से बाहर कदम रखे ।'

अब तक मात्र दर्शकों की भांति खड़े दोनों पुलिसमैन पलट कर सीढियों की ओर चल दिये ।

सीढ़ियों के नीचे चांदी की ट्रे और बोतल तथा गिलासों का कांच पूर्ववत बिखरा पड़ा था ।

सफेद लिबास वाला अधेड़ नौकर कांच के टुकड़े उठाकर ट्रे में भरने लगा ।-शेष लोग हाल में पड़े दो सोफा सैट पर सुविधानुसार बैठ गये ।

दोनों पुलिसमैन भी नीचे आ कर प्रवेश द्वार के पास खड़े हो गये ।

सुधीर ने अपना और राजेश का परिचय देने के बाद अपडेट युवक और घूर्त आंखों वाले अधेड़ की ओर देखा ।

'आप लोगों का परिचय जान सकता हूँ ?'

'मेरा नाम बलराज मेहता है ।' अपटुडेट युवक बोला-'मृतक देवराज मेहता मेरा बड़ा भाई था । मुझे अफसोस है कि मैं तत्परता से काम नहीं ले सका वरना मेरे भाई ने इस वक्त जीवित होना था ।'

सुधीर ने नोट किया । बलराज मेहता के चेहरे अथवा आवाज़ से ऐसा कतई नहीं लग रहा था कि अपने भाई की मौत का उसे जरा भी अफसोस था ।

'जब यह आदमी रिवाल्वर हिलाता हुआ बगोले की तरह भीतर दाखिल हुआ ।' वह सुरेश की ओर इशारा करके कह रहा था-'मैंने इसे रोकने की कोशिश की । लेकिन कामयाब नहीं हो सका । यह मुझे जोर से धकेलकर ऊपर दौड़ गया था ।'

'मैं तो इस बारे में कतई कुछ नहीं जानता ।' धूर्त आंखों वाला बोला । उसके मुंह से शराब की तेज गन्ध आ रही थी । और लहजा खीज मिश्रित था-'मैं ऊपर अपने कमरे में रामलाल द्वारा ड्रिंक लाये जाने का इन्तजार कर रहा था ।'

"रामलाल कौन है ?' सुधीर ने टोका ।

'नौकर है ।' बलराज ने कहा और ट्रे में कांच भरकर ले जाते सफेद लिबास वाले अधेड़ की ओर संकेत कर दिया ।

'आई सी ।' सुधीर ने कहा और पुन: धूर्त आंखों वाले की ओर मुखातिब हो गया-'फिर क्या हुआ ?'

'होना क्या था ? पहले नीचे फिर ऊपर गलियारे में भागने की आवाजें सुनाई दीं ।' कहकर उसने सुरेश की ओर सर हिलाकर पूछा-'उधर बैठा खतरनाक नौजवान कौन है ? हत्या उसने की है न ?'

'हां । उसका नाम सुरेश दुग्गल है ।' सुधीर ने कहा फिर पलट कर पूछ बैठा-'आपकी तारीफ ?',

'इनका नाम जयन्त नाथ है ।' बलराज मेहता जल्दी से बोला-दिल्ली में एडवोकेट हैं । देवराज से किसी मामले पर विचार विमर्श करने आज शाम ही हवाई जहाज द्वारा यहां पहुंचे थे ।

तभी प्रवेश द्वार खुला । सब-इन्स्पेक्टर भीतर दाखिल हुआ । उसने उन चारों को इस ढंग से घूरा मानो उनकी वहां मौजूदगी से हैरान हुआ था ।

'मैंने हैडक्वाटर्स को सूचित कर दिया है । वह सुधीर की ओर देखता हुआ बोला-'वे लोग आने ही वाले है । उनके आने तक आप सबने यहीं रुकना है ।'

'तुम भी इन्हीं के पास ठहरो । सीढ़ियों के ऊपर से इन्स्पेक्टर की गूंजती सी आवाज़ आई-ध्यान रखना, ये लोग आपस में मिलकर कोई कहानी न गढ़ ले ।

'राइट सर ।' सब-इन्स्पेक्टर ने उसी के स्वर में जवाब दिया । फिर वह उन सब की ओर पलटकर बोला-सुन लिया आप लोगों ने ?' और एक सोफा चेअर पर बैठ गया ।

जवाब में सुधीर मुस्कराया और उठकर राजेश की बगल में बैठे सुरेश दुग्गल के सामने जा खड़ा हुआ ।

कुर्सी में निढाल सा पसरा सुरेश दुग्गल एकदम तन कर बैठ गया ।

'मैं पूछता हूँ यह सब हो क्या रहा है ?' वह कड़वे स्वर में बोला-'देवराज की हत्या मैंने की है । क्योंकि वह इसी काबिल था, इसलिये मैंने उसे मार डाला । अब ये लोग मुझे हथकड़ी लगा कर ले क्यों नहीं जा रहे हैं ।'

'इतनी बेसब्री क्यों दिखा रहे हो ?' सुधीर बोला-'थोड़ी देर और इन्तजार करो । तुम्हारा यही अन्जाम होगा ।'

'देखिये, आप सब मर्डर सस्पैक्ट हैं ।' सब-इन्स्पेक्टर गुर्राया-'मैं आखरी बार चेतावनी देता हूँ कि बयान देने से पहले आप लोगों का आपस में बातें करना सरासर गलत है ।'

सुधीर वापस अपनी कुर्सी पर आ बैठा ।

अचानक उसके दिमाग में एक विचार कौंधा ।

'मिसेज मेहता यानि आपकी भाभी घर में नहीं हैं ?' उसने बलराज मेहता से पूछा ।

'वह क्लब गई है ।' बलराज ने जवाब दिया फिर बुरी तरह चौंकता हुआ उठकर खड़ा हो गया-'ओह, माई गॉड! उसे इस वारदात की खबर देने का तो मुझे ध्यान ही नहीं रहा ।'

'आप दोनों बार-बार मना करने के बावजूद आपस में बातें कर रहे हैं ?' सब-इन्स्पेक्टर क्रोधित स्वर में बोला ।

बलराज मेहता फौरन उसकी ओर पलट गया ।

'मैं मृतक की पत्नी को फोन द्वारा इस हादसे की इत्तिला देना चाहता हूँ ।' वह बोला ।

सब-इन्स्पेक्टर ने पलभर सोचा फिर पूछा-'फोन कहां है ?'

'बराबर वाले कमरे में एक्सटेंशन लाइन है ।'

'चलो ।'

दोनों दांयी ओर बने दरवाज़े से एक अन्य कमरे में चले गये ।

करीब तीन मिनट बाद वापस लौटे । और अपनी अपनी कुर्सी पर बैठ गये ।

सुधीर ने नोट किया । बलराज मेहता एकाएक गहरी सोचों में घिर गया नजर आता था ।

राजेश भी एकटक उसी को घूर रहा था ।

'वह क्लब से अपनी किसी सहेली के साथ जा चुकी हैं ।' बलराज मेहता चिंतित स्वर में बोला-'पता नहीं कब लौटेगी ? मैंने सहेली के बारे में पता लगाने की भी कोशिश की । लेकिन कुछ मालूम नहीं हो सका । मैंने क्लब के सेक्रेटरी को इस हादसे की सूचना दे दी है और कह दिया है कि अगर मिसेज मेहता का फोन आए या वह खुद आए तो उसे सूचित कर दें । ठीक किया न ?'

इससे पहले के सुधीर कोई जवाब दे पाता । बाहर एक जीप आकर रुकी ।

इन्स्पेक्टर विजय कुमार अपने दल बल सहित आ पहुँचा था ।

सब-इन्स्पेक्टर एकदम उछल कर खड़ा हो गया ।

* * * * * *

विजय कुमार भीतर दाखिल होने के बाद भी प्रवेश द्वार के पास खड़ा रहा ।

सब-इन्स्पेक्टर सहित दोनों पुलिसमैनों के सैल्यूट के जवाब में उसने मात्र तनिक सर हिला दिया था । प्रत्यक्षतः उसकी तेज निगाहें वहां मौजद प्रत्येक व्यक्ति का बारीबारी से जायजा ले रही थीं ।

सुधीर और राजेश की मौजदगी पर उसने जरा भी हैरानी जाहिर नहीं की । अलबत्ता उसके चेहरे पर किंचित मिश्रित भाव ज़रूर पैदा हो गये ।

उन दोनों को सरासर नजर अन्दाज करते हुए वह सब-इन्स्पेक्टर की ओर आकर्षित हुआ ।

'क्या हो रहा है ?' उसने पूछा ।

'ऊपर एक आदमी की हत्या की गई है. सर ।' सबइन्स्पेक्टर सम्मानित स्वर में बोला-'उसे रिवाल्वर से शूट किया गया था । उसने सुरेश की ओर इशारा किया-'हत्यारा वो आदमी है । फिर सुधीर और राजेश की ओर हाथ हिलाया-'ये हमारे आने से पहले ही घटनास्थल पर मौजूद थे ।'

विजय कुमार ने सुरेश दुग्गल पर दृष्टिपात किया फिर सुधीर की ओर देखा ।

'मृतक कौन था ?' उसने पूछा ।

'देवराज मेहता ।' सुधीर ने जवाब दिया ।

'मुझे बताया गया है कि इस वारदात से पहले ही तुम्हारी सेक्रटरी ने फ्लाइंगस्कवाड को फोन किया था ?'

'बिल्कुल सही बताया गया है ।'

'इसका मतलब है अब हत्यारे तुम्हें पूर्व सूचना देकर हत्या करने लगे हैं ?'

'इस मामले में तो ऐसा ही लगता है । वैसे बात दरअसल यह है...।'

'नो एक्सप्लेशन्स प्लीज ।' विजय कुमार उसे रोकता हुआ बोला-'पहले मैं ऊपर जाकर देखना चाहता हूँ । और सब-इन्स्पेक्टर को वहीं ठहरने के लिये कहकर सीढ़ियों की ओर बढ़ा ।

'मैं भी साथ चल सकता हूँ ?' सुधीर ने टोका ।

विजय कुमार तनिक हिचकिचाया फिर सहमति सूचक सर हिला दिया । और फिर राजेश की ओर पलट कर दरियादिली दिखाता हुआ बोला-'तुम भी आ जाओ । वरना अपने अखबार में प्रेस के अधिकार हनन की हाय तौबा मचानी शुरू कर दोगे ।'

'थैंक्यू ।' राजेश हर्षित स्वर में बोला-'थैंक्यू वैरी मच, इन्स्पेक्टर ।

दोनों विजय कुमार के पीछे सीढ़ियों की तरफ बढ़ गये ।

ऊपर पहले से मौजूद इन्स्पेक्टर बड़े ही हाकिमाना अन्दाज में स्टडी के दरवाज़े के बाहर खड़ा था ।

'हैलो, यादव ।' विजय कुमार उससे सम्बोधित हुआ ।

'हैलो ।' इन्स्पेक्टर ने कहा । फिर सुधीर और राजेश पर निगाह पड़ते ही उसके माथे में बल पड़ गये । उसने जेब से सुरेश दुग्गल का बत्तोस बोर का रिवाल्वर निकाला-'यह लो मर्डर वैपन । यह इस आदमी की जेब से बरामद हुआ था । उस वक्त रिवाल्वर की नाल गर्म थी और बारूद की तेज गन्ध आ रही थी ।

विजय कुमार ने नाल पकड़कर रिवाल्वर सूंघा फिर जेब में डाल लिया ।

'बिल्कुल सीधा-सादा केस है । यादव कह रहा था-'तुम्हें जरा भी मगजपच्ची नहीं करनी पड़ेगी । अच्छा, अब तुम सम्भालो मैं चलता हूँ अगर मेरी मदद की जरूरत पड़े तो नि:संकोच बता देना ।'

'बहुत-बहुत शुक्रिया, इन्स्पेक्टर यादव ।' विजय कुमार उससे हाथ मिलाता हुआ बोला-'नीचे जीप में एक हैड कांसिटेबल बैठा है । उसे नीचे मौजूद लोगों की निगरानी के लिये भेजते जाना ।'

'अच्छा ।'

यादव चला गया । लेकिन जाने से पहले सुधीर और राजेश को घूरना नहीं भूला ।

विजय कुमार ने कब्जों से उखड़े दरवाज़े के पल्ले पर निगाह डाली ।

'लगता है, हत्या के साथ-साथ सेंधमारी भी हुई है ?'

'इसके लिये हम दोनों कसूरवार हैं ।' सुधीर ने कहा -'भीतर से फायर की आवाज़ सुनकर मजबूरन हमें दरवाजा तोड़ना पड़ा था ।'

'हूं ।' विजय कुमार दरवाज़े से भीतर देखता हुआ बोला-'यह देवराज मेहता कोई व्यस्त और खुद को महत्वपूर्ण समझने वाला आदमी था ।'

सुधीर और राजेश ने भी उसकी दृष्टि का अनुकरण किया । दरवाज़े के ऊपर लाल बल्ब जल रहा था । जाहिर था कि मरने से पहले देवराज मेहता किसी काम में व्यस्त था । और खुद को डिस्टर्ब किया जाना नहीं चाहता था ।

विजय कुमार स्टडी में दाखिल हुआ । और सीधा डेस्क के पास पहुंचा ।

देवराज की लाश का गौर से मुआयना करने के बाद बोला-'कोट पर बने सुराख के आसपास खून का जरा भी निशान नहीं है । बत्तीस बोर के रिवाल्वर की गोली शायद सीधी दिल में जा घुसी थी । और तुरन्त इसकी जान ले थी ।'

'मैं और राजेश फायर होने के करीब एक मिनट बाद दरवाजा तोड़कर भीतर दाखिल हुए थे । सुधीर बोला-'वह उस वक्त भी इसी हालत में था । जिस्म के किसी भी हिस्से में जरा सी भी हरकत नहीं थी ।'

विजय कुमार ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया । उसकी खोजपूर्ण निगाहें कमरे में चारों तरफ दौड़ रही थीं ।

'कमरे में घुसने का यही एक रास्ता है ?' उसने टूटे दरवाज़े की ओर इशारा दिया । फिर कमरे के पृष्ठ भाग की ओर देखता हुआ बोला-'उधर भी एक बन्द दरदाजा है । वो शायद बाल्कनी में खुलता होगा ।'

उस दरवाज़े के बगल में दो बड़ी-बड़ी खिड़कियां थीं । वे दोनों मजबूती के साथ अन्दर से बन्द थीं ।

विजय कुमार दरवाज़े के पास पहुँचा । यह भी प्रदेश द्वार जैसा ही मजबूत था । अन्दर की तरफ से दोनों सिटकनियां मजबूती से चढ़ी हुई थीं । उसमें एक 'मैजिक आई' भी फिट थी ।

विजय कुमार ने दरवाज़े के हैंडिल को छूए बगैर मैजिक आई से आँख सटा दी । बाहर की रोशनी में बाल्कनी की रेलिंग का थोड़ा-सा भाग साफ दिखाई दिया ।

वह पीछे हट गया ।

'मेरा ख्याल है । वह बोला-'इधर से नीचे जाने के लिये शायद सीढ़ियां भी हैं । और इस दरवाज़े को भी प्रवेश द्वार की तरह प्रयुक्त किया जाता है ?'

'हो सकता है ।' सुधीर ने कहा-लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है ?'

'कुछ नहीं । दरवाज़े और खिड़कियां मजबूती से बन्द हैं ।' विजय कुमार बड़बड़ाया-'बाहर लाल बल्ब जल रहा है ।'

वह पुनः डेस्क के पास आ खड़ा हुआ ।

वहां हर चीज बड़े करीने से अपने सही स्थान पर मौजूद थी ।

देवराज मेहता के कुर्सी के सामने बांयी तरफ छोटी सी ट्रे में रखे एक कांच के गिलास में किसी रंगीन तरल पदार्थ के चन्द कतरे अभी भी मौजूद थे । विजय कुमार ने नीचे झुककर सुंघा ।

'व्हिस्की ।' वह धीरे से बोला ।

गिलास के पास ही डाक बगैरा रखने के लिये प्रयुक्त होने वाली दो खूबसूरत ट्रेपरस्पर थोड़े से फासले पर रखी हुई थीं । उन दोनों के बीच में बड़े सलीके से काटकर खोले गये बीस-पच्चीस खाली लिफाफे ऊपरनीचे रखे थे । एक ट्रे में करीब इतने ही पत्र मौजूद थे । स्पष्ट था वे सब उन्हीं कटे हुए लिफाफों से निकाले गए थे ।

मृत देवराज मेहता के ठीक सामने एक 'इम्पोर्टेड डिक्टाफोन मौजूद था । जिसका चमकदार माइक्रोफोन डेस्क के सिरे पर इस स्थिति में फिट था कि कुर्सी पर बैठा आदमी आसानी से डिक्टेशन दे सकता था ।

दो टेली फोन उपकरण भी डेस्क पर मौजूद थे ।

विजय कुमार देर तक हर एक चीज को बड़ी बारीकी से देखता रहा । लेकिन संदिग्ध बात नजर आना तो दूर रहा कोई भी चीज गलत जगह या बेतरतीब रखी नजर नहीं आई ।

वह डेस्क से पीछे हट गया ।

सुधीर अभी भी डेस्क के दांये सिरे के पास खड़ा था ।

'विजय, जरा इधर आओ ।' एकाएक वह बोला ।

विजय कुमार और तटस्थ दर्शक की भांति तनिक अलग खड़ा राजेश भी उसके पास आ खड़ा हुआ ।

'क्या बात है ?' विजय कुमार ने पूछा ।

'इस डेस्क पर प्रत्येक चीज बड़े व्यवस्थित ढंग से रखी हुई है ।' सुधीर बोला-'लेकिन क्या चांदी का कलमदान तुम्हें कुछ अजीब नहीं लगता ?'

विजय कुमार और राजेश की निगाहें चांदी के खूबसूरत कलमदान पर केन्द्रित हो गई । लेकिन उन्हें उसमें कोई खास बात नजर नहीं आ सकी ।

'हमें तो इसमें कुछ भी अजीब नहीं लगता ।' दोनों ने एक साथ कहा ।

पहली बात तो यही है कि चांदी के कलमदान में पैन खड़े करके रखने के लिये जो चार स्टैण्ड लगे हैं । ये सफेद प्लास्टिक के बने हैं । जबकि ये चांदी के भी हो सकते थे । दूसरे यहां सिर्फ तीन पेन हैं । जो कि तीनों स्टैण्डों में मौजूद हैं । चौथा पैन यहां कहीं नजर नहीं आ रहा है । तीसरा...।'

'ये सब मामूली बातें हैं ।' विजय कुमार लापरवाही से बोला-'क्यों बेकार वक्त जाया कर रहे हो ?'

'बेकार नहीं विजय ।' सुधीर दृढ़तापूवक बोला-'सिरे वाला जो चौथा पेन स्टैण्ड खाली नजर आ रहा है । असल में वह पेन स्टैण्ड है ही नहीं ।

'फिर क्या है ?' विजय कुमार ने खीजते हुए पूछा ।

'यह एक माइक्रोफोन है । यकीन न हो तो कलमदान को थोड़ी ऊपर उठाकर देख लो । डेस्क के अन्दर जाती हुई एक तार तुम्हें दिखाई देगी । और डेस्क की ऊपरी ड्राअर में एक टेप रिकार्डर भी रखा मिलेगा ।'

विजय कुमार ने जेब से रुमाल निकाला । उससे पकड़कर कलमदान तनिक ऊपर उठाया तो डेस्क की सतह से भीतर जाता पतला-सा काला तार भी नजर आ गया । फिर वह डेस्क की दांयी तरफ बाली ड्राअर्स के पास पहुँचा । रुमाल की सहायता से सावधानीपूर्वक ऊपरी ड्राअर खोला । सचमुच उसमें पाकेट साइज का एक जापानी टेप रिकार्डर मौजूद था । उसने ड्राअर पूर्ववत् बन्द कर दिया ।

इस माइक्रोफोन और टेप रिकार्डर की मौजूदगी से तुम क्या नतीजा निकालना चाहते हो ?' विजय कुमार ने पूछा-क्या तुम नहीं जानते ये सब पैसे वाले लोगों के चोंचले हैं

?

'मैं समझता हूं कि किन्हीं खास किस्म के लोगों से बात करते वक्त देवराज मेहता उनकी बातचीत करने के लिये टेप रिकार्डर ऑन कर देता होगा । माइक्रोफोन का रुख डेस्क के सामने पड़ी दोनों कुर्सियों की ओर होना इसी तरह संकेत करता है ।'

'मैं पूछता हूँ ।' विजय कुमार भिन्नाकर बोला 'तुम क्यों बेकार बाल की खाल खीच रहे हो ? अगर वह ऐसा करता भी था तो कौन-सा गजब करता था ?'

सुधीर कुछ नहीं बोला ।

'आओ, नीचे चलते हैं ।' विजय कुमार बोला 'पता नहीं फिंगर प्रिंट्स सेक्शन वाले और फोटोग्राफर कहाँ रह गये ?'

तभी हैड कांस्टेबिल ने आकर फिंगर प्रिंटस वालों और फोटोग्राफर के आगमन की सूचना दी ।

विजय कुमार ने उन्हें फौरन ऊपर भेजने का आदेश दे दिया ।

हैडकांस्टेबिल वापस लौट गया ।

ज्यों ही वे लोग ऊपर पहुँच विजय कुमार ने उन्हें आवश्यक निर्देश दिये और सुधीर तथा राजेश सहित स्टडी से निकलकर सीढ़ियों की ओर बढ़ गया ।

नीचे सुरेश दुग्गल अपनी कुर्सी में पड़ा खर्राटे ले रहा था । शायद नशे की अधिकता की वजह से उसे गहरी नींद आ गई थी ।

जयन्त नाथ के चेहरे पर थकान, बोरियत और परेशानी के मिले-जुले गहन भाव थे । वह रह-रह कर कुर्सी में पहल बदल रहा था ।

बलराज मेहता नर्वस भाव से सिगरेट फूक रहा था । उसकी आँखें सोचपूर्ण थीं और चेहरे पर अजीब से कुछ ऐसे भाव थे । मानो वह ऐसा कुछ होने की उम्मीद कर रहा था जिसके हो सकने की उसे जरा भी उम्मीद नहीं थी ।

इन्स्पेक्टर यादव के साथ आए पुलिस मैन जा चुके थे ।

'विजय कुमार नीचे पहुँचकर सीढ़ियों के पास ही रुक गया ।'

'तुम इन सबको जानते हो ?' उसने सुधीर से पूछा ।

'हां ।' सुधीर ने कहा और तीनों का परिचय दे दिया ।

'मि० मेहता ।' विजय कुमार ने बलराज से पूछा 'इस घर के बाकी लोग कहां हैं ?'

'मिसेज मेहता क्लब गई थीं । वहां से अपनी किसी सहेली के साथ कहीं चली गई ।' बलराज ने जानकारी दी- 'और देवराज का सेक्रेट्री जगमोहन भी कहीं गया हुआ है ।'

'आप इसी घर में रहते हैं ?'

'नहीं ।' बलराज ठोस स्वर में बोला-'हम दोनों भाई आपस में एक-दूसरे से बेहद नफरत करते थे । मैंने आज शाम महीनों बाद इस घर में कदम रखा है । उसके लहजे में नापसंदगी का गहरा पुट था

'आई सी । आप कोई ऐसा कमरा बता सकते हैं जहां बैठकर मैं बारी-बारी आप लोगों से बातचीत कर सकूं ?'

'बगल वाला कमरा ठीक रहेगा । वो जगमोहन का आफिस है ।'

बलराज मेहता ने बांयी ओर का एक बन्द दरवाजा खोला और कमरे में जाकर लाइट ऑन कर दी ।

'रामसिंह !' विजय कुमार हैडकांस्टेबिल से बोला 'जीप से सत्यनारायण को बुला लाओ ।'

'राइट सर ।'

हैडकांस्टेबिल बाहर चला गया ।

चन्द क्षणोंपरांत वह एक अन्य पुलिसमैग के साथ वापस लौटा । नवागंतुक के हाथ में एक बड़ी-सी डायरी थी ।

'पहले तुम दोनों ही आओ ।' विजय कुमार ने सुधीर और राजेश से कहा और उस कमरे की ओर बढ़ा जिसे बलराज ने खोला था ।

नवांगतुक सत्यनारायण ने भी उनका अनुकरण किया ।

कमरा काफी बड़ा था और किसी जिम्मेदार आदमी का आफिस नजर आता था ।

विजय कुमार उधर बढ़ा जहां एक दीवार के पास आठ-दस कुर्सियां पड़ी थीं ।

बलराज मेहता भी अभी तक वहीं मौजूद था ।

'मि० मेहता ।' विजय कुमार बोला-'आपसे मैं थोड़ी देर बाद बातें करूंगा ।'

बलराज मेहता खामोशी के साथ बाहर निकल गया ।

सुधीर और राजेश विजय कुमार के दांए-बांए बैठे । सत्यनारायण तीन कुर्सियां छोड़कर चौथी पर बैठ गया । उसने अपनी डायरी खोलकर जेब से पैन निकाल लिया ।

'मि. सुधीर रंजन ।' विजय कुमार बोला-'अब तुम शुरू हो जाओ और इस बारे में जो कुछ भी जानते हो फटाफट बयान कर दो । ध्यान रखना मैं सिर्फ तथ्य जानना चाहता हूँ ।

सत्यनारायण का पैन अपनी डायरी पर तेजी से फिसलने लगा ।

सुधीर ने साढ़े पांच बजे के करीब राजेश के अपने आफिस में आने, सुरेश दुग्गल की मदद की अपील करने, खुद को प्रतिमा दुग्गल से मिलने जाने प्रतिमा का देवराज मेहता

से ताल्लुकात खत्म कर देने के लिये सहमत हो जाने, अपने फ्लैट पर लौटने और सपना सहित राजेश की सालगिरह का छोटा-सा जश्न मनाने के बारे में संक्षेप में बता दिया ।

'ठीक नौ बजे प्रतिमा दुग्गल ने मुझे फोन किया ।' सुधीर कहता गया... उसने बताया कि उसका पति सुरेश दुग्गल रिवाल्वर लेकर देवराज मेहता को मारने गया था । मैंने रिसीवर पटका, सपना से फ्लाइंग स्कवाड को फोन करने के लिये कहा और राजेश सहित नीचे दौड़ा । फिर यथासम्भव तेजी से ब्यूक दौड़ाते हुये हम यहा आ पहुंचे ।

'तुम्हें यहां पहुंचने में कितना वक्त लगा होगा ?' विजय कुमार ने टोका ।

'कोई दस-बाहर मिनट ।'

'यानि करीब सवा नौ बजे ?'

'हा ।' सुधीर बोला-'पोर्टिको में नई काली एम्बेसडर के पीछे क्रीम कलर का चेतक खड़ा दिखाई देते ही राजेश ने बताया कि वो सुरेश दुग्गल का स्कुटर था । ब्यूक रोकते-रोकते हमने कोठी का प्रवेश द्वार खुलता देखा । फिर एक मानवाकृति दौड़कर भीतर दाखिल होती दिखाई दी । दरवाजा पुनः बन्द हो गया । चन्द क्षणोपरांत अन्दर से किसी की चीख और फर्श पर कोई चीज टकराने की आवाज़ें हमें सुनाई दी । ब्यूक से उतरकर हम दौड़ते हुए भीतर दाखिल हुये । हमने बलराज मेहता को बाहर हॉल में दरवाज़े के पास पीठ के बल फर्श पर पड़ा पाया । सीढ़ियों के दहाने के पास चाँदी की एक ट्रे और व्हिस्की की एक बोतल तथा गिलासों का कांच बिखरा पड़ा था । सफेद लिबास वाला एक आदमी, जिसका नाम बाद में पता चला कि रामलाल है और वह इस का नौकर है । तेजी से सीढ़ियों पर भागता दिखाई दिया । हम भी उसके पीछे दौड़ पड़े । जब हम ऊपर पहुँचे तो वह स्टडी का बन्द दरवाजा दोनों हाथों से जोर-जोर से पीट रहा था । दरवाज़े के ऊपर लाल बल्ब जल रहा था । मैंने रामलाल को एक तरफ धकेलकर दरवाज़े पर प्रहार किया । तभी भीतर फायर की आवाज़ गूज गई । राजेश की मदद से दरवाजा तोड़ने के बाद मैंने देखा । सुरेश दुग्गल डेस्क के पास खड़ा था । उसके हाथ में बत्तीस बोर की रिवाल्वर थीं, जिससे धुंए की पतली-सी लकीर उस वक्त भी निकलती नजर आ रही थी । देवराज मेहता के कुर्सी में पड़े रहने के ढंग और छाती पर कोट में झांकते सुराख से साफ जाहिर था कि वह मर चुका था । मैंने सुरेश से रिवाल्वर लेकर अपने कोट की जेब में डाल ली ।' सुधीर रुका । देवराज मेहता की लाश का मुआयना करने की बात को गोल करता हुआ बोला-'फिर तुम्हारा वह इन्सपेक्टर यादव दल-बल सहित घटना स्थल पर आ पहुंचा । बाद में जब हम स्टडी से निकले तो बाहर गलियारे में रामलाल के अलावा बलराज मेहता और जयन्त नाथ भी मौजूद थे । जयन्त नाथ ने बताया कि जब नीचे और सीढ़ियों पर भाग दौड़ मची । वह गलियारे के दूसरे सिरे पर अपने कमरे में बन्द था । तत्पश्चात हम सब नीचे हॉल में आ गये । इन्स्पेक्टर यादव ऊपर ही रह गया था ।'

'तुम्हारा मतलब है ।' विजय कुमार कुछ सोचता हुआ बोला-'तुम्हारे और राजेश के आगे-आगे सुरेश दुग्गल दौड़ता हुआ भीतर कोठी में दाखिल हुआ, बलराज मेहता को नीचे गिराया और रामलाल के हाथों से ट्रे गिराई, दौड़कर ऊपर देवराज मेहता की स्टडी में पहुँचा और दरवाजा भीतर से बन्द करके उसे शूट कर दिया ?'

'नहीं ।' सुधीर ने जवाब दिया ।

'फिर ?'

'हो सकता है ऐसा ही हुआ हो । लेकिन यह सब खुद मैंने नहीं देखा । इसीलिये ऐसा कोई दावा मैं नहीं कर सकता ।

'क्या दावा कर सकते हो ?'

'सिर्फ यही कि जब हमने स्टडी का दरवाजा तोड़ा । सुरेश दुग्गल डेस्क के पास खड़ा था । उसके हाथ में रिवाल्वर थी । जिससे धुआं तब भी निकल रहा था । देवराज मेहता अपनी कुर्सी में मरा पड़ा था । और सुरेश ने कहा कि हत्या उसी ने की थी ।'

'अच्छा ! उसने कबूल किया था ?'

'उसने शेखी बघारी थी । वह शराब के नशे में धुत्त था । मेरा ख्याल है कि शायद खुद भी नहीं जानता था कि क्या कह रहा था ।'

'आईसी ।' कहकर विजय कुमार ने राजेश की ओर देखा-सुधीर के इस बयान में तुम कुछ और जोड़ना चाहते हो ?'

'हां ।' राजेश कडवे स्वर में बोला-'मैं बताना चाहता हूँ कि देवराज मेहता का जो अन्जाम हुआ है वह कमीना उसी के काबिल था । उस हरामजादे ने बेचारे सुरेश को ऐसा करने के लिये मजबूर कर दिया था । उस जलील आदमी की वजह से सुरेश खुद को शराब में गर्क करने पर तुल गया था । उसकी हालत पागलों जैसी हो गई । देवराज मेहता की हत्या न्यायोचित ठहराई जानी चाहिये और सुरेश...।'

'रिपोर्टर साहब !' विजय कुमार ने अधीरतापूर्वक कहा-'न तो यह अदालत का कमरा है न ही मैं जज हूँ और तुम वकील सफाई । मुझे दूसरे लोगों से बातें करनी हैं । इसलिये बेहतर होगा कि अब तुम दोनों मेहरबानी करके यहाँ से फूट जाओ ।

'फूट जायें ?' सुधीर ने चौंककर पूछा ।

'हां ।'

'क्या हम यहां नहीं बैठे रह सकते ?'

'यहां किसलिये बैठना चाहते हो ? यह सीधा-सीधा ओपन एण्ड शट केस है । बस सारे सिलसिले को तरतीब से समझना भर बाकी है ।'

'विजय ।' सुधीर गम्भीरतापूर्वक बोला—'दरअसल इस हादसे और बेचारे सुरेश दुग्गल के होने वाले अन्जाम के लिये मैं खुद को भी कमोबेस जिम्मेदार समझता हूँ । अगर मैंने राजेश की बातों पर और ज्यादा ध्यान दिया होता तो यह घटना टल सकती थी ।'

'और क्या ध्यान देना था तुमने ?' विजय कुमार ने पूछा-'राजेश के कथनानुसार प्रतिमा दुग्गल को समझाने के लिये गए तो थे ?'

'लेकिन उतना ही काफी नहीं था । मुझे सुरेश दुग्गल से भी मिलना चाहिये था । ऐसा कुछ करना चाहिए था कि वह अपने इरादे से बाज आ जाता । यहां आते समय कार और तेज चलानी चाहिये थी ताकि उससे पहले हम यहां पहुँच सकते होते ।'

'कार की रफ्तार और ज्यादा बढ़ाने का मतलब होना था कि हमने देवराज मेहता से भी पहले ऊपर पहुँच जाना था ।' राजेश बोला ।

'ओ के, ओ के !' विजय कुमार बेसब्री से बोला-'ज्यादा ड्रामा मत करो । यहां बैठना है तो अलग हट कर बैठो । और रिपोर्टर साहब तुम जरा बलराज मेहता को यहां बुलाने की तकलीफ करो ।'

सुधीर और राजेश ने अपनी कुर्सियां विजय कुमार से काफी फांसले पर खिसका लीं । फिर राजेश बलराज मेहता को बुलाने के लिये दरवाज़े की ओर बढ़ा ।

तभी हैड कांस्टेबल ने आकर सूचना दी कि फोटोग्राफर का काम खत्म हो चुका था और एम्बूलैस आ पहुँची थी ।

विजय कुमार लाश को भिजवाने के लिये रामसिंह के साथ चला गया ।

* * * * * *

बलराज मेहता बड़े इत्मिनान के साथ कमरे में दाखिल हुआ ।

'आइए मि० मेहता ।' विजय कुमार बांयी ओर पड़ी कर्सी की ओर संकेत करता हुआ बोला-'तशरीफ रखिये ।'

बलराज मेहता इंगित कुर्सी पर बैठ गया ।

सुधीर और राजेश ने उस पर उचटती सी निगाह डाली फिर वे विजय कुमार की ओर देखने लगे ।

'आप मृतक देवराज मेहता के भाई हैं ?' विजय कुमार ने पूछा ।

सत्यनारायण का पैन पुनः डायरी पर खिसकने लगा ।

'जी हां ।' बलराज मेहता शुष्क स्वर में बोला'उससे दस साल छोटा ।'

'आपका नाम बलराज मेहता है ?'

'जी हां ।'

'आपने बताया था कि आप इस घर में नहीं रहते ?'

'जी हां ।' बलराज मेहता ठोस स्वर में बोला 'और यह भी बताया था कि हम दोनों भाई एक-दूसर से बेहद नफरत करते थे ।'

विजय कुमार ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की ।

'आपका एड्रेस ?' उसने पूछा ।

'६४, विशालपुरी कॉलोनी ।'

'इसका मतलब राजनगर में ही रहते हो ?'

'जी हां ।'

'क्या काम करते हैं आप ?'

'लिंक रोड पर मेरा अपना रेस्तरां है-वैलकम ।'

'वैलकम' राजनगर के मशहूर रेस्तराओं में से एक था ।

'आपने बताया था कि महीनों बाद आज शाम यहां आये हो ?' विजय कुमार ने पूछा-'आने की वजह बता सकते हो ?'

'देवराज से कुछ बातें करनी थीं ।'

'किस सिलसिले में ?'

'माफ कीजिए, यह मेरा जाती मामला है ।' पल भर हिचकिचाने के बाद बलराज मेहता बोला-'इस बारे में मैं कुछ नहीं बता सकता ।'

'आई सी । आप यहां पहुँचे किस वक्त थे ?'

'करीब सवा आठ बजे ।'

'अपने भाई से मुलाकात हुई ?'

'नहीं ।' बलराज मेहता के स्वर में कड़वाहट का भारी पुट था-'हालांकि देवराज मेहता को पता था कि मैंने आठ बजे के करीब आना था । लेकिन उसने अपनी स्टडी के दरवाज़े पर लाल बल्ब जला रखा, जो इस बात का सूचक था कि वह मसरूफ था और खुद को डिस्टर्ब किया जाना नहीं चाहता था । इसलिये मजबूरन मुझे उसके फ्री होने का इन्तजार करना पड़ा ।

'बाहर खड़ी काली एम्बेसेडर कार आपकी है ?'

'जी नहीं । वो देवराज की है । मैं यहां टैक्सी से आया था ।'

'जब आप पहुँचे यहां कौन-कौन था ?'

'देवराज की पत्नी नीना, उसका सेक्रेटरी जगमोहन और नौकर रामलाल । ये तीनों यहीं रहते हैं । इनके अलावा उस वक्त जयन्त नाथ भी यहीं था । उसने कुछ ही देर पहले नीना और जगमोहन के साथ डिनर लिया था । और बाहर हाल में बैठा बड़ी बेसब्री से देवराज द्वारा बुलाए जाने का इन्तजार कर रहा था । संक्षिप्त सी मुलाकात के दौरान जयन्त नाथ ने बताया कि वह दिल्ली से हवाई जहाज द्वारा खास तौर से देवराज से मिलने आया था । इन्तजार कराया जाने की वजह से उसे बेहद खीज आ रही थी । शायद इसीलिये उसने डिनर से पहले चन्द ड्रिंक लिये थे । यह मेरा अन्दाजा है । क्योंकि बातें करते वक्त उसके मूह से शराब की तेज गन्ध आ रही थी । फिर वह यह कहकर, कि इन्तजार ही करना है तो अपने कमरे में आराम से लेटकर करेगा, ऊपर चला गया ।'

'और आप बाहर हाल में बैठे अकेले इन्तजार करने लगे ?'

'हां । फिर पहले जगमोहन इस कमरे में आकर कुछ टाइप करने लगा । नीना मेरे पास आ बैठी । वह नर्वस और परेशान सी नजर आ रही थी । इस तरह इन्तजार कराने के लिये उसने देवराज की तरफ से मुझसे माफी मांगी । चंदेक मिनट में रामलाल एक छोटी सी ट्रे में नीट व्हिस्की का आधे से ज्यादा भरा गिलास लेकर आया, जो कि देवराज के पास पहुँचाया जाना था । देवराज की यह वर्षों पुरानी आदत थी । रोज शाम को व्हिस्की पीने की शुरूआत वह इसी ढंग से किया करता या । नीना ने रामलाल से वो ट्रे ले ली । क्योंकि स्टडी के बाहर लाल बल्ब जला होने की सूरत में सिर्फ अकेली उसे ही बगैर बुलाये अन्दर जाने की इजाजत थी । वह ट्रे लेकर ऊपर चली गई और मैं अकेला हाल में बैठा रह गया ।' बलराज मेहता ने जेब से पांच सौ पचपन का पैकेट निकाला । विजय कुमार को सिगरेट ऑफर की । उसके द्वारा इन्कार कर दिये जाने पर वह सिगरेट सुलगा के बाद बोला-'साढे आठ बजे के करीब एक स्कूटर रूकने की आवाज़ हुई । फिर डोर बेल बजी । जगमोहन फौरन इस कमरे से निकला । उसने हाल से गुजर कर प्रवेश द्वार खोला । और बाहर चला गया । मुझे समझते देर नहीं लगी कि आगंतुक जो भी था । देवराज को उसके आगमन की अपेक्षा थी । और जगमोहन उसे स्टडी के पिछले दरवाज़े की ओर बाहर कोठीकी साइड से जाने वाली सीढ़ियों तक पहुंचाने गया था ।'

'इसका मतलब स्टडी के पिछले दरवाज़े तक पहुंचने का अलग से भी कोई रास्ता है !'

'जी हां । कोठी की साइड में सीधा ऊपर जाने के लिये सीढ़ियां हैं । दरअसल इस कोठी का भूगोल ऐसा है कि ऊपर की मंजिल पर स्टडी के अलावा तमाम कमरे बैडरूम हैं । नीना और देवराज का बैडरूम एकदम स्टडी की बगल में है । उसमें भी दो दरवाज़े हैं । मुख्य दरवाजा उसी गलियारे में खुलता है जिसमें स्टडी का खुलता है । स्टडी और बैडरूम के पिछली ओर एक चौड़ी बाल्कनी है । दोनों के पिछले दरवाज़े उसी बाल्कनी में खुलते हैं ।

कोठी की साइड में बनी जिन सीढ़ियों का जिक्र किया है उनके द्वारा मुख्यतः इन्हीं दोनों कमरों तक पहुंचा जा सकता है ।

'आई सी ।' विजय कुमार बोला-'लेकिन आपने यह कैसे समझ लिया कि उस आगंतुक का आगमन अपेक्षित था ?'

बलराज मेहता कटुतापूर्वक मुस्कराया ।

'देवराज इस मामले में बड़ी भारी एहतियात बरतता था । वह बोला-'उससे वक्त बेवक्त अच्छे बुरे लोग मिलने आते रहते थे । उनसे पूछताछ करना, उन्हें भलीभांति चैक करना और अगर वे अपेक्षित थे तो उन्हें बाहरी सीढ़ियों से ऊपर भेजना वरना बाहर से बाहर ही चलता कर देना । यह सब जगमोहन की जिम्मेदारी थी । अपेक्षित व्यक्ति को सीढ़ियों तक पहुँचाने के बाद जगमोहन रेलिंग में लगे किसी गुप्त बटन को दबा दिया करता था । इसका सम्बन्ध देवराज के डेस्क के नीचे लगे ऐसे उपकरण से है जिससे किर्र...किर्र... की धीमी आवाज़ निकलती है । यह आवाज़ देवराज को आगंतक की पूर्व सूचना इस गारंटी के साथ दे दिया करती थी कि उसे चैक किया जा चुका था । फलस्वरूप उसे रिसीव करने के लिये देवराज खुद स्टडी के पिछले दरवाज़े पर रहा करता था । इस सिलसिले का एक ही फायदा था कि कोई अवांछित या अनपेक्षित व्यक्ति उस तक नहीं पहुँच सकता था ।'

'वाकई अच्छा इन्तज़ाम था ।' विजय कुमार बोला ।

'आगंतुक को पहुंचाने के बाद जगमोहन वापस लौटा । बलराज मेहता वर्तालाप का तारतम्य जोड़ता हुआ बोला-'वह चन्द मिनट मेरे पास बैठा फिर ऊपर अपने कमरे में चला गया । कोई पांच-सात मिनट बाद बाहर स्कूटर स्टार्ट होने की आवाज़ हुई । और स्कूटर चला गया । मैं समझ गया कि देवराज से मिलने आया व्यक्ति वापस जा रहा था । उस वक्त मुझे पूरी उम्मीद थी कि देवराज स्टडी का दरवाजा खोलेगा और मुझे ऊपर बुला लेगा । लेकिन उस कमीने ने ऐसा नहीं किया ।' उसने तनिक रुककर पहली सिगरेट के अवशेष से ताजा सिगरेट सुलगाया-फिर करीब दस मिनट पश्चात नीना नीचे आई । वह घुटनों से नीचे तक लम्बा सफेद ऊनी कोट और हल्की नीली साड़ी पहने थी । सर पर नीला स्कार्फ़ बांध रखा था और हाथ में नीला पर्स लटकाये हुई थी । उसके चेहरे पर बेहद बोरीयत और व्याकुलता के मिले-जुले भाव थे । उसने मुझसे कहा अगर देवराज पूछे तो बता दूं कि वह क्लब गई है और शायद देर से लौटेगी । वह प्रवेश द्वार की ओर बढ़ी ही थी कि जगमोहन जल्दीजल्दी सीढ़ियां उतर कर नीचे हाल में आया । वह चिंतित और उत्तेजित सा प्रतीत हो रहा था । उसने मुझसे कहा कि वह अपने किसी दोस्त से मिलने जा रहा है । मुझे याद है नीना ने उससे पूछा था कि क्या उसने देवराज से जाने की इजाजत ले ली थी । इस पर जगमोहन न जवाब दिया कि इजाजत लेने की जरूरत नहीं थी । क्योंकि आज रात किसी

और विजीटर ने नहीं आना था । वे दोनों साथ-साथ बाहर निकले और अपनी-अपनी कार में बैठकर चले गये ।'

'जगमोहन के पास भी अपनी कार है ?' विजय कुमार ने टोका ।

'कार का मालिक तो देवराज ही था लेकिन जगमोहन को उसे इस्तेमाल करने की पूरी छूट थीं ।'

'उनके जाने के बाद हाल में आप अकेले रह गए ?'

'बलराज मेहता ने सहमति सूचक सर हिला दिया ।'

'थोड़ी देर बाद जयन्त नाथ से सीढ़ियों के ऊपर से ऊंची आवाज़ में रामलाल को हाँक लगाते हुए व्हिस्की की बोतल और एक गिलास लाने की मांग की ।' वह सिगरेट का गहरा कश लेकर ढेर सारा धुंआ उगलता हुआ बोला-'साथ ही कहा कि अगर देवराज का इरादा उससे तमाम रात इन्तजार कराने का था तो वह भी फैसला कर चुका था कि इस सारी बोरियत को व्हिस्की में घोल कर ही रहेगा । उसके चिल्लाने के ढंग से उसकी झल्लाहट साफ जाहिर हो रही थी । और मुझे यूँ लगा कि वह इस तरह चिल्लाकर स्टडी में मौजूद देवराज मेहता का ध्यान आकर्षित करके अपनी उपस्थिति का आभास कराना चाहता था । ताकि देवराज यह सब सुनकर दरवाजा खोले और उसे भीतर बुला ले । लेकिन जयन्त नाथ मेरे भाई की खसलत से नावाकिफ था । वह चुपचाप अपने कमरे में लौट गया और भडाक से दरवाजा बन्द कर लिया । उसकी हांक के जवाब में आ पहुँचे रामलाल से मैंने कहा कि मेरे लिये भी व्हिस्की का एक लार्ज पैग लेता आए । क्योंकि मैं भी बहुत ज्यादा बौरीयत महसूस कर रहा था । रामलाल आदेश पालन करने चला गया । मुश्किल से डेढ़ मिनट बाद कोठी के गेट में दाखिल होते एक स्कूटर की आवाज़ मुझे सुनाई दी । फिर बाहर स्कूटर रुकता सुना । तभी रामलाल हाल में दाखिल हुआ । मैं दरवाजा खोलने की नीयत से उठा । मैं भूल गया था कि नीना और जगमोहन के जाने के बाद मैंने अन्दर से कुंडी नहीं लगाई थी । अचानक प्रवेशद्वार भड़ाक से खुला और बदहवास सा एक नौजवान दौड़ता हुआ भीतर दाखिल हुआ । उसके हाथ में रिवाल्वर था और वह चिल्ला रहा था कहां है वो हरामजादा ? मैं उस कमीने को शूट कर दूंगा । मैंने उसे रोकने की कोशिश की । लेकिन सच्ची बात यह है कि मैंने उसे रोकने की खास कोशिश की ही नहीं थी क्योंकि उसके हाथ में रिवाल्वर था । आँखें अंगारों की तरह दहक रही थी । मुह से शराब के भभूके छूट रहे थे । और अपनी जान गंवाकर देवराज की जान बचाने का मेरा कतई कोई इरादा नहीं था । उसने मुझे जोर से अलग धकेल दिया । मैं पीठ के बल फर्श पर जा गिरा । नौजवान मेरी तरफ ध्यान दिये बगैर सीढ़ियों की तरफ़ दौड़ चुका था । रामलाल उसके रास्ते में आ गया और उसकी ट्रे हाथ से छूटकर फर्श पर जा पड़ी । जब तक रामलाल सम्हला नौजवान दो-दो सीढ़ियां फलांगकर ऊपर चढ़ना शुरू कर कर चुका था । रामलाल भी उसके पीछे लपका ।

ऐन उसी वक्त प्रवेश द्वार फिर खुला और ये दोनों सज्जन ।' उसने सुधीर और राजेश की ओर इशारा किया, 'भीतर दाखिल हुए । मैं उस वक्त फर्श से उठने की चेष्टा कर रहा था । और उंगली द्वारा सीढ़ियों की तरफ इशारा करने के अलावा कुछ नहीं कर सका । ये दोनों तत्क्षण ऊपर दौड़ गए । फिर चन्द क्षणोपरांत मुझे फायर की आवाज़ सुनाई दी ।

बलराज मेहता ने खामोश होकर विजय कुमार की ओर देखा । और बड़े इतमिनान से एक और सिगरेट जला ली ।

'जब मैं फर्श से उठकर सीढ़ियाँ तय करके ऊपर पहुँचा ।' उसने पुनः कहना शुरू किया-'मैंने देखा जयन्त नाथ गलियारे में स्टडी की ओर भाग रहा था । और रामलाल स्टडी के दरवाज़े के पास दीवार से लगा हुआ था । अन्दर ये मि० सुधीर रंजन, मि० राजेश वर्मा और वही नौजवान खड़े थे । मैंने इन्हें कहते सुना कि देवराज मर चुका था । जानते हो, इन्सपेक्टर, उस वक्त मेरे दिमाग में सबसे पहला विचार क्या आया ?'.

'नहीं ।'

'कल सुबह का अखबार देखने के बाद सैकड़ों भले लोग रात में चैन की नींद सो सकेंगे ।'

'क्या देवराज मेहता वाकई इतना बुरा आदमी था ।'

बलराज मेहता घृणा से सिकुड़ गया ।

'जिसका दीन ईमान सिर्फ पैसा हो और जिसमें दुनियां भर के तमाम ऐब हों और जो अपनी हवस और खुदगर्जी के लिये बुरे से बुरा काम करने में भी जरा नहीं हिचकता हो । उसने पूछा-'उसे आप क्या कहेंगे ?'

विजय कुमार ने एकाएक कोई जवाब नहीं दिया ।

'बस ?' उसने पूछा-'क्या आप कुछ और बताना चाहते हैं ।'

'सिर्फ इतना और कि चन्द क्षणोंपरांत पुलिस आ पहुंची थी ।'

'ठीक है सहयोग के लिये बहुत-बहुत शुक्रिया । अभी आप यहीं रहें । मेरी इजाजत के बगैर यहां से जायें नहीं ।'

'नीना के आने तक तो मुझे यहां रहना ही पड़ेगा ।'

बलराज मेहता उठकर खड़ा हो गया ।

'आप मि० जयन्त नाथ को यहां भेजने की तकलीफ करेंगे ?' विजय कुमार ने पूछा ।

'ओह, श्योर ।'

बलराज मेहता ने कोट की जेब में हाथ ठूँसे और बाहर निकल गया ।

विजय कुमार ने प्रश्नात्मक दृष्टि से सुधीर की ओर देखा ।

'क्या समझे, मि० जासूस ?' उसने पूछा ।

सुधीर ने पैन रखकर उंगलियों को चटकाते सत्यनारायण पर निगाह डाली फिर विजय कुमार से मुखातिब हो गया ।

'कुछ नहीं ।' वह बोला-'सिवाए इस बात के कि बलराज मेहता ने अपने मृत भाई के प्रति अपनी नफरत छुपाने की कतई कोशिश नहीं की ।'

'और इस नफरत की वजह देवराज मेहता की बीबी भी हो सकती है । राजेश बीच में दखल देता हुआ बोला ।

विजय कुमार चौंका ।

'मतलब ?'

'राजेश राजदाराना ढंग से मुस्कराया ।'

'अखबार से सम्बन्धित लोगों की दुनिया में देवराज से ताल्लुक रखती ढेरों अफवाहों में से एक यह भी है अपनी बीवी के साथ उसके ताल्लुकात अच्छे नहीं थे । और जब देवराज मेहता दूसरी सुन्दरियां लेकर अपना पहलू आबाद कर रहा होता था तो बलराज मेहता अपनी भाभी के साथ दिल जोई किया करता था ।

विजय कुमार ने राजेश को घूरा ।

'तुम कहना चाहते हो कि बलराज मेहता का अपनी भाभी से अफेयर था ?'

'मैं कुछ नहीं कहना चाहता । सिर्फ अफवाहों की बात कर रहा हूं । राजेश बोला- वैसे, मैंने नीना मेहता को भी देखा है । और बेहिचक कह सकता हूँ कि वह वाकई देखने दिखाने से ताल्लुक रखने वाली चीज है । जबकि देवराज मेहता उन जाहिलों में से था जो घर की मुर्गी को दाल भी नहीं बल्कि दाल में पड़ा महज एक कंकड़ समझते हैं ।'

दरवाज़े पर आहट सुनकर वे खामोश हो गए ।

जयन्त नाथ कमरे में दाखिल हुआ । वह निराश और उत्तेजित नजर आ रहा था । उसका चेहरा तनाव पूर्ण था । होठों से सिगरेट दबा था और हाथ मुठिटयों की शक्ल में भिचे हुए थे ।

'इन्स्पेक्टर मेरे पास ऐसी कोई जानकारी नहीं है ।' वह शुष्क स्वर में बोला-'जो इस मामले में आपकी जरा भी मदद कर सके ।'

'आप तशरीफ रखिए । विजय कुमार बोला- 'मैं ज्यादा वक्त नहीं लूंगा ।'

जयन्त नाथ अनिच्छापूर्वक बैठ गया ।

'आपका नाम ?' विजय कुमार ने पूछा ।

'जयन्त नाथ ?'

'पेशा ?'

'वकालत ।'

'पता ?'

जयन्त नाथ ने दिल्ली का अपना एड्रेस बता दिया ।

'देवराज मेहता आपका क्लायंट था ?"

जयन्त नाथ ने कोई जवाब नहीं दिया । एकाएक वह उठकर खड़ा हो गया ।

'यह आदमी प्रेस रिपोर्टर है ।' वह राजेश की तरफ इशारा करके बोला-'और मैं नहीं समझता कि इस वक्त इसकी यहां मौजूदगी जरूरी है ।

'आपके इस एतराज की वजह जान सकता हूँ ?'

'मैं नहीं चाहता कि मेरा नाम हत्या की इस वारदात के जोड़ा जाए ।'

विजय कुमार मुस्कराया ।

'वकील साहब हत्या के वक्त आपकी यहां मौजूदगी की वजह से आपका नाम तो पहले ही जुड़ चुका है । इस लिये किसी प्रेस रिपोर्टर के यहां मौजूद होने से अब कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है फिर भी मैं वादा करता हूँ कि जब तक कोई माकूल वजह नहीं होगी आपका नाम बीच में नहीं लाया जाएगा । आप बेफिक्र होकर बैठिये ।'

जयन्त नाथ विवशतापूर्वक बैठ गया ।

'अब आप मेरे सवाल का जवाब दीजिए ।' कहकर विजय कुमार ने दोहराया-'क्या देवराज मेहता आपका क्लायंट था ।'

'नहीं ।'

'आपके यहां आने की वजह देवराज मेहता से मुलाकात करना थी ।'

'हां ।'

'किसलिये ?'

'मैं अपने एक क्लायंट की ओर से उसके साथ एक कानूनी मसले पर बात करना चाहता था ।'

'उस कानूनी मामले की जानकारी दे सकते हैं आप ?'

'सॉरी । यह मेरे पेशे के उसूलों के खिलाफ है । वैसे मैं यकीनी तौर पर कह सकता हूं कि उसका इस हादसे से जरा भी ताल्लुक नहीं है ।'

'हूँ । क्या देवराज मेहता जानता था कि आप उससे मिलने आने वाले थे ?'

'बेशक । मेरे क्लायंट ने कल मेरे सामने आज शाम साढ़े छह बजे का अप्वाइन्टमेंट लिया था उससे ।'

'आज आप राजनगर किस वक्त पहुँचे ?'

'मेरा प्लेन छह बजे यहां पहुंचा था ।'

'एयरपोर्ट से आप सीधे यहीं आये थे ?'

'हां । मैंने टैक्सी पकड़ी और सीधा यहां आ गया । उस वक्त शायद छह बजकर बीस मिनट हुये थे । मुझे पूरी उम्मीद थी कि देवराज मेहता से फौरन मुलाकात हो जायेगी और मैं सवा सात बजे वाला वापसी प्लेन पकड़ लूंगा । लेकिन यहां पहुँचने पर मुझे देवराज मेहता के सेक्रेटरी जगमोहन ने बताया कि मि० मेहता से तीन घंटे से पहले मुलाकात नहीं हो सकेगी । इसलिये बेहतर होगा मैं तब तक बतौर गेस्ट यहीं ठहरूँ । क्योंकि देवराज मेहता से मुलाकात करना ही मेरे यहां आने का इकलौता मकसद था । इसलिये मजबूरन मुझे उसका सुझाव मानना पड़ा । दूसरे, मुझे यह भी उम्मीद थी कि अगर यहां ठहरा रहूँगा तो मुमकिन था कि देवराज मेहता से तीन घण्टे से पहले मिलने का अवसर भी पा सकूं ।'

'जाहिर है कि यह आपको पसन्द नहीं आया होगा ।'

'बेशक । मैंने जगमोहन से काफी प्रतिवाद भी किया । लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ । क्योंकि सवाल पसन्द का न होकर जरूरत का था ।' जयन्त नाथ तनिक रुका फिर बोला- 'मुझे ऊपर स्टडी के सामने गलियारे के दूसरे सिरे पर एक गैस्टरूम में ठहरा दिया गया । जब देवराज मेहता को शूट किया गया उस वक्त भी मैं उसी कमरे में बन्द पड़ा कुढ़ रहा था ।'

'मुझे बताया गया है कि आपने डिनर यहीं लिया था ?'

'हां । डिनर से पहले चन्द ड्रिंक भी मैंने लिये थे ।'

'डिनर के वक्त भी आपकी देवराज मेहता से मुलाकात नहीं हुई ।'

'नहीं । क्योंकि वह डिनर लेने ही नहीं आया । मैंने उसकी पत्नी और सेक्रेटरी के साथ डिनर लिया था । मुझे बताया गया कि देवराज मेहता रात का खाना हमेशा देर से और बाहर ही खाया करता था । वह शाम पांच छह बजे से पहले सोकर नहीं उठता था । फिर स्नानादि से निवृत होकर नाश्ता करता और अपनी स्टडी में जाकर बन्द हो जाया करता था । साढ़े आठ बजे के करीब व्हिस्की का पैग लेता था । अपनी डाक देखने मुलाकातियों से फारिग होने और अपने अन्य काम निबटाने के बाद वह दस बजे के करीब बाहर चला जाता था । फिर सारी रात नाइट क्लबों, बदनाम रेस्तरांओं और गैर कानूनी धन्धों के अड्डों पर अपने अखबार के लिये खबरें सूंघता फिरता रहा करता था ।'

'डिनर के बाद आप अपने कमरे में चले गये ?'

'सीधा नहीं । थोड़ी देर बाहरी हाल में बैठा रहा था ।'

'उस वक्त वहां कोई और भी था ?'

'नहीं । लेकिन कुछ देर बाद बलराज मेहता आ गया था । उससे औपचारिक बातें करने के बाद मैं अपने कमरे में चला गया । मैंने यह सोचकर, कि देवराज मेहता के फारिग होते ही जगमोहन मुझे बुला लेगा, थोड़ी देर ऊं घने की कोशिश की ।

'यानि आप सो गये ?'

'नहीं । सोने का सवाल ही पैदा नहीं होता था । मैं तो देवराज मेहता से बातें करने के लिये मरा जा रहा था । और जो लटकाऊ व्यवहार मेरे साथ किया जा रहा था । उसकी वजह से बेहद क्षुब्ध था ।'

'इसका मतलब आप अपने कमरे में लेटे इन्तजार करते रहे ?'

'हां ।'

'फिर क्या हुआ ?'

'करीब एक घण्टे बाद जब मेरे सब्र और बर्दाश्त की इन्तिहा हो गयी तो मैं अपने कमरे से बाहर निकला । मुझे यह देखकर बेहद गुस्सा आया कि देवराज मेहता की स्टडी के बाहर तब भी बल्ब जल रहा था । गुस्से की उसी हालत में मैंने सीढ़ियों के दहाने से नौकर को हांक लगाई और उससे व्हिस्की की बोतल तथा गिलास लाने के लिये कहा ।'

'आप जानबूझकर इतनी ऊँची आवाज़ में बोले कि अन्दर स्टडी में मौजूद देवराज मेहता आपको सुन ले ?'

'हां । और अगर वह बहरा नहीं था तो सुन भी ज़रूर लिया होगा । मैं उसे उसके घर में अपनी मौजूदगी की याद दिलाना चाहता था लेकिन वह मेरे इस एक्शन को भी पूरी तरह नजर अन्दाज कर गया । मजबूरन मैं वापस अपने कमरे में लौटा और दरवाजा जोर से बन्द कर लिया ।

'उस वक्त क्या टाइम हुआ होगा ?'

'सही टाइम तो मैं नहीं बता सकता । लेकिन अन्दाजन करीब सवा नौ बजे होंगे ।'

'फिर ?'

'करीब दो भिनट बाद नीचे हाल में काफी हलचल और सीढ़ियों पर लोगों की भागने की आवाजें सुनकर मैं अपने कमरे से निकला ।' जयन्त नाथ ने सुधीर की ओर इशारा किया-'इन्हे और घर के नौकर को स्टडी के दरवाज़े के बाहर खड़ा पाया । फिर अन्दर से फायर की आवाज़ सुनी । और दोनों उसने पुनः सुधीर को और राजेश की ओर इशारा किया-दरवाजा तोड़कर स्टडी में दाखिल हो गये । फिर मैं भी स्टडी की तरफ दौड़ गया ।'

'अब आप क्या करेंगे ?'

जयन्त नाथ चौंका ।

'क्या मतलब ?'

'आप यहां सिर्फ देवराज मेहता से मिलने आये थे । लेकिन वह मर चुका है । इसलिये मौजूदा हालात में आपका क्या प्रोग्राम है ?'

जयन्त नाथ मन ही मन देवराज मेहता को बुरी तरह कोस रहा था ।

'यहां आकर सिवाय वक्त की बरबादी के और कुछ मुझे हासिल नहीं हुआ है ।' वह मुँह बिगाड़कर बोला 'ऊपर से खुदा की मार यह हैं कि इस वक्त दिल्ली लौटने के लिये न तो कोई फ्लाइट है और न ही कोई ट्रेन जाती है । पहली फ्लाइट सुबह आठ बजे जाएगी ।'

'इसका मतलब आप यहीं ठहरेंगे ?'

'हां । लेकिन इस मनहूस घर में नहीं । मैं किसी होटल में जाकर सुबह तक आराम करूंगा ।'

'कौन से होटल में ?'

'किसी भी अच्छे होटल में ।' जयन्त नाथ ने कहा और खड़ा हो गया ।

'बहुत-बहुत शुक्रिया ।' विजय कुमार खड़ा होकर उससे हाथ मिलाता हुआ बोला- 'मुझे उम्मीद है कि थोड़ा और सहयोग देने में आपको कोई ऐतराज नहीं होगा ?'

जयन्त नाथ ने सन्देह पूर्वक उसे घूरा ।

'कैसा सहयोग चाहते हो ?'

'आप जिस होटल में भी ठहरें पुलिस हैडक़्वाटर्स को सूचित कर दें । और सुबह राजनगर जाने से पहले भी मुझसे सम्पर्क स्थापित कर लें ।'

'ठीक है ।'

जयन्त नाथ चला गया ।

तत्पश्चात नौकर रामलाल को बुलाया गया ।

वह पहला आदमी था जो देवराज मेहता की हत्या से तनिक गमगीन नजर आया था ।

उसने बताया कि वह तीन साल से देवराज मेहता की सेवा में था । कोठी में मेहता दम्पत्ति के अलावा सेक्रटरी और वह ही रहते थे । वह कोठी की बगल में सर्वेन्टस क्वार्टर में रहता था । वैसे घर में सुबह शाम महरी भी आती थी । एक रसोइया भी था जो सुबह आकर नाश्ता बनाता था । सारा दिन यहीं रहता था और शाम को डिनर तैयार करके चला जाया करता था ।

उसने इस बात की भी पुष्टि की कि देवराज मेहता शाम को पांच-छ: बजे के करीब सो कर उठता था, घर में रात का खाना नहीं खाता था । और रात में दस बजे के करीब घर से जाकर सारी रात बाहर ही रहता था । आज वह लगभग छ: बजे सोकर उठा था, स्नानादि से निवृत होकर कपड़े बदले और सीधा अपनी स्टडी में चला गया । दरवाजे के बाहर लाल बल्ब जला दिया । इसका मतलब था कि मिसेज मेहता के अलावा और कोई अंदर नहीं जा सकता था । रोजाना की भांति साढ़े आठ बजे के करीब वह नीट व्हिस्की का आधे से थोड़ा ज्यादा भरा गिलास ट्रे में रखकर बाहरी हाल में लाया । जिसे लेकर मिसेज मेहता अपने पति के स्टडी में चली गई । उसकी जानकारी के मुताबिक मिसेज मेहता के अलावा हाल की सीढियों से ऊपर स्टडी में जाने वाला सिर्फ सुरेश दुग्गल ही था । जो कि भीतर आने के बाद जबरदस्ती ऊपर चला गया था और स्टडी में घुसकर दरवाजा अन्दर से लॉक कर लिया था ।

उसने बताया कि आमतौर से स्टडी का वो दरवाजा अन्दर से लॉक नहीं किया जाता था । क्योंकि अकेला लाल बल्ब ही देवराज मेहता की प्राइवेसी की गारन्टी के लिये काफी था ।

शाम को आने वाले विजीटर्स को जगमोहन हमेशा प्रवेश द्वार पर चेक करता था और उन्हें बाहर से बाहर ही साइड में बनी सीढ़ियों द्वारा ऊपर स्टडी में भेज देता था । जहां देवराज मेहता खुद उन्हें रिसीव किया करता था । उसकी जानकारी के मुताबिक ऐसा विजीटर साढ़े आठ बजे के करीब भी आया था । क्योंकि डोर बैल की आवाज़ के जवाब में उसने जगमोहन को बाहर जाते और फिर थोड़ी देर बाद ही वापस आते भी देखा था । लेकिन वह नहीं जानता कि वो विजीटर कौन था ? और उसके अलावा कोई और भी आया था या नहीं ।

उसने जयन्त नाथ के एयरपोर्ट से आने, तीनों को डिनर सर्व करने, डिनर के बाद बलराज मेहता के आने और फिर जयन्त नाथ के ऊपर अपने कमरे में चले जाने के समय की भी पुष्टि की ।

रामलाल ने यह भी बताया कि नौ बजे के करीब मिसेज मेहता और जगमोहन साथ-साथ घर से निकले थे । मिसेज मेहता तो स्टडी में व्हिस्की का गिलास पहुँचाने के बाद आमतौर से बाहर चली जाया करती थी । लेकिन देवराज मेहता के रात में दस बजे के आसपास घर से चले जाने से पहले जगमोहन को कहीं जाते उसने पहली बार देखा था ।

उसने यह भी स्वीकार किया कि जयन्त नाथ ने उसे सीढ़ियों के ऊपर से बड़ी ऊंची आवाज़ में हांक लगाकर व्हिस्की की बोतल और गिलास लाने के लिये कहा था । तभी हाल में अकेले बैठे देवराज मेहता से मुलाकात करने का इन्तजार करते बलराज मेहता ने भी एक लार्ज पंग की फरमाइश की थी । उस वक्त अन्दाजन सवा नौ बजे होंगे ।

करीब दो मिनट बाद जब वह बोतल और गिलास ट्रे में लिये हॉल में दाखिल हुआ, प्रवेश द्वार एकदम से खुला और सुरेश दुग्गल रिवाल्वर हाथ में लिए दौड़ता हुआ भीतर आया । बलराज मेहता को एक तरफ धकेल कर वह सीढ़ियों की ओर झपटा तो रामलाल से टकरा गया । फलस्वरूप ट्रे उसके हाथ से छूट गई । फिर सुरेश दुग्गल तेजी से सीढ़ियों पर दौड़ गया । रामलाल ने यथासम्भव तेजी से उसका पीछा किया । लेकिन फिर भी सुरेश दुग्गल को स्टडी में दाखिल होकर अन्दर से दरवाजा लॉक करने से नहीं रोक सका । वह स्टडी का दरवाजा पीट रहा था जब सुधीर और राजेश वहां पहुंचे । फिर अन्दर फायर हुआ । और फिर सुधीर और राजेश दरवाजा तोड़कर भीतर घुस गये ।

क्या देवराज मेहता और उसकी पत्नी के आपसी सम्बन्धों में मधुरता नहीं थी ? क्या उसने कभी ऐसा कुछ नोट किया था जिसकी वजह से मिसेज मेहता और बलराज मेहता के सम्बन्धों पर शक किया जा सके ? विजय कुमार के इन दोनों सवालो के ही जवाब में रामलाल ने अनभिज्ञता प्रगट कर दी थी । बलराज मेहता के बारे में उसका कहना था कि अपनी तीन साल की नौकरी में से आज दूसरी बार इस घर में देखा था ।

विजय कुमार ने यह भी पूछा कि क्या देवराज मेहता खुद से मिलने आए व्यक्तियों से आमतौर से इसी तरह इन्तजार कराता था जैसा कि उसने जयन्त नाथ और बलराज मेहता से आज कराया था ।

इसके जवाब में रामलाल ने बताया कि उसकी जानकारी में ऐसा पहले भी कई लोगों के साथ हो चुका था ।

रामलाल को बाहर भेज दिया गया ।

फिर हैडकांस्टेवल रामसिंह सुरेश दुग्गल को कमरे में पहुँचाकर लौट गया ।

सुरेश दुग्गल की हालत अजीब थी । बाल बिखरे हुए, सूट में सिलवटें और नशे की खुमारी से बोझिल आँखें मिची जा रही थीं । चेहरा तनावपूर्ण था और होंठ कसे हुए । ऐसा लगता था मानो वह अपने अन्जाम से खबरदार होने के बावजूद उसके प्रति लापरवाह था ।

विजय कुमार का संकेत पाकर वह एक कुर्सी में निढाल-सा पड़ गया । उसने आँखें मिचमिचाते हुए कमरे में चारों ओर निगाह डाली । राजेश की ओर देखते समय उसके होठों पर पलभर के लिए फीकी-सी मुस्कराहट उभरी फिर वह विजय कुमार की तरफ देखने लगा ।

'अब और क्या कसर बाकी रह गई है इन्स्पेक्टर ?' उसने पूछा-'मैं बता तो चुका हूँ कि देवराज मेहता को मैंने शूट किया है । क्या यह काफी नहीं है ?'

विजय कुमार ने सर्द निगाहों से उसे घूरा ।

'तुमने अभी तक मुझे कुछ नहीं बताया है ।'

सुरेश दुग्गल ने इस ढंग से आँखें मिचमिचाई मानो उसे पहचानने का यत्न कर रहा था ।

'पूछिये । आप क्या पूछना चाहते हैं ?' अन्त में वह बोला ।

'तुम्हारा नाम ?'

'सुरेश दुग्गल ।'

'पता ?'

सुरेश दुग्गल ने नोट करा दिया ।

'क्या काम करते हो ?'

'राजेश की तरह 'एडवेंचरर' में रिपोर्टर हूँ ।'

'आज रात सवा नौ बजे के करीब देवराज मेहता की उसके घर में उसकी स्टडी में रिवाल्वर से गोली मारकर तुमने हत्या की थी ?'

'हां ।'

'क्यों ?'

'क्यों का क्या मतलब है ? मैं इकबाल करता हूँ कि उसकी हत्या मैंने की है ।'

'तुम्हारे इस तरह इकबाल करने से क्या होता है ?' विजय कुमार धैर्य पूर्वक बोला-'सवाल तो यह है कि तुमने हत्या की क्यों ? इसके पीछे तुम्हारा मोटिव क्या है ? और क्या तुमने यह पहले से सोच-विचार कर किसी पूर्व नियोजित ढंग से की थी ?'

सुरेश दुग्गल ने हिकारत भरी नजरों से राजेश को घूरा ।

'आई सी ।' वह बोला-तो यह तुम्हारी करतूत है ।' और विजय कुमार की ओर पलट गया-'आपको यह सब राजेश ने बताया है न ? इत्तिफाक से आज दोपहर बाद यह मुझे एक बार में मिल गया था । और मैं नशे की झोंक में भावुकतावश इसके सामने बक बैठा था । इसने खूब नमक-मिर्च लगाकर आपको बता दिया होगा । कोई बात नहीं, अब इससे फर्क भी क्या पड़ता है ?'

मि० सुरेश दुग्गल, प्लीज डू आन्सर माई क्वेश्चन ? व्हाई डिड यू किल हिम ?'

'सॉरी इन्स्पेक्टर, प्लीज डोन्ट आस्क मी ।'

'बट व्हाई ?'

सुरेश दुग्गल ने याचनापूर्वक उसकी ओर देखा ।

'क्योंकि मैं अपनी बीबी का नाम बीच में लाकर उस पर गन्दगी उछालना नहीं चाहता । क्या सिर्फ इतना ही काफी नहीं है कि मैंने उसकी हत्या इसलिए की क्योंकि वह

कमीना ज़िन्दा रहने के काबिल ही नहीं था ।'

'जिस रिवाल्वर से तुमने गोली चलाई थी, वो तुम्हें कहां से मिली ?'

'मिली कहां से थी ? मेरी अपनी है ।'

'उसके रखने का लायसेंस है तुम्हारे पास ?'

'हाँ ।'

'तुम वो लोडेड रिवाल्वर लेकर इस घर में इसलिए आये थे क्योंकि देवराज मेहता की हत्या करना चाहते थे ?'

'हां ।'

'और तुम आज दोपहर बाद से तब तक ऐसा करने की योजना बनाते रहे थे ?'

'योजना ?'

'हां । मेरा मतलब है, तुमने यह हत्या किसी क्षणिकआवेश में या बगैर सोचे-समझे नहीं की । बल्कि तुम आज दोपहर बाद से या उससे भी पहले से ही ऐसा करने के बारे में सोचते रहते थे । फिर सोच-समझकर फैसला करने के बाद ही यहां आये थे । यही कहना चाहते हो न तुम ?'

'मैं जो कुछ कहना चाहता था, सीधे-सीधं लफ्जों में कह चुका...।'

'क्या जाहिलों जैसी बातें कर रहे हो, सुरेश ?' अचानक राजेश उसे डांटता हुआ बोला- यह कोल्ड ब्लडडमर्डर नहीं था । ज़रूर तुम्हें एकाएक किसी बात पर इतना जोश और गुस्सा आ गया होगा कि तुम आपा खो बैठे और यह सब कर गुजरे । बताओ क्या तुमसे प्रतिमा ने ऐसा कुछ कहा था ?'

एकाएक विजय कुमार का चेहरा तमतमा गया । उसने खा जाने वाले भाव में राजेश को घूरा । पलभर के लिए ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह राजेश को उठाकर बाहर फेंक देने वाला था ।

राजेश को फौरन अपनी गलती का एहसास हो गया । उसे इस तरह दखल देकर सुरेश को लीड नहीं देनी चाहिए थी ।

'सॉरी, इन्स्पेक्टर ।' उसने बड़ी शराफत से स्वीकार किया-आयम जेनुअली सॉरी । आई शुड नॉट हैव इंटरफेयर्ड लाइक दिस ।

विजय कुमार उसकी ओर से निगाहें घुमा कर पुनः सुरेश दुग्गल की ओर आकर्षित हो गया ।

'प्रतिमा ने ? नहीं ।' वह कह रहा था-'इसके लिए वही हरामजादा देवराज जिम्मेदार था । जब मैंने उससे कहा कि वह प्रतिमा से दूर ही रहे तो वह बड़े ही रहस्यपर्ण ढंग से

मुस्कराया था । फिर मैंने उसे जान से मारने की धमकी दी तो वह हंसने लगा था । उसकी हंसी ने मेरा खून खौला दिया और मैंने रिवाल्वर लाकर उसे ठिकाने लगा दिया ।

विजय कुमार ने असमंजसतापूर्बक उसकी ओर देखा ।

'एक मिनट ।' उसने पूछा-'यह कब की बात है ?'

'आज शाम की ।'

'किस वक्त की ?'

'यही कोई आठ बजकर बत्तीस-तेंतीस मिनट की । वह सजा-धजा बड़ी शान से अपनी एग्जीक्यूटिव चेअर में डेस्क के पीछे बैठा था । अपना कोट उतारकर कुर्सी की पुश्त पर टांग रखा था । उस घमण्डी ने मेरी तरफ आँख उठा कर भी नहीं देखा । हंसता हुआ बड़ इतमिनान के साथ लम्बे, तेज नोकीले पेपर कटर से लिफाफे काट-काट खोलता रहा । मेरी मौजूदगी की उसने रत्ती भर भी परवाह नहीं की । काश ! उस वक्त मेरे पास रिवाल्वर होती तो मैंने उसे तभी शूट कर देना था ।'

विजय कुमार के चेहरे पर अभी भी असमंजसतापूर्ण भाव थे ।

तुम्हारा मतलब यह है कि तुम यहां एक बार पहले भी आए थे ?' उसने विचारपूर्वक पूछा-'और उसे धमकी देकर रिवाल्वर लेने घर चले गए ? और फिर दोबारा वापस आकर उसे शूट कर दिया ?'

'आफ कोर्स । और आप क्या समझ रहे हैं कि मैं किस वक्त की बात कर रहा हूँ ? क्या आपको नहीं बताया गया कि मैं यहां पहले भी आया था ?'

'नहीं ।'

'जनाब साढ़े आठ बजे का मेरा उससे अप्वाईटमेंट फ़िक्स था। और उस वक्त मैं रिवाल्वर साथ नहीं लाया था । इसलिए आप यह साबित नहीं कर सकते कि मैं दिन भर या दोपहर बाद से उसकी हत्या की योजना बनाता रहा था, या कर सकते हो ?'

विजय कुमार कुछ नहीं बोला ।

राजेश ने राहत-सी मससूस की ।

'दरअसल मैं उसे बातों से ही मनाना चाहता था ।' सुरेश दुग्गल कह रहा था-'और मैंने उससे कहा था, वह शरीफ आदमियों वाला वादा करे कि, आइन्दा कभी प्रतिमा से किसी किस्म का कोई वास्ता नहीं रखेगा । बस मेरी इसी बात पर उसने हंसना शुरू कर दिया था और मैं उसे जान से मारने का फैसला कर बैठा ।'

'मि० दुग्गल ।' विजय कुमार बोला- 'तुम इसे सिलसिले-बार सुनाओ तो ज्यादा बेहतर होगा ।'

'बताइए कहां से शुरू करू ?'

'तुम्हारा उसके साथ शाम साढ़े आठ बजे का अप्वाइन्टमेंट था ?'

'हां ।'

'बस तो वहीं से शुरू हो जाओ । यह बताओ कि अप्वाइंटमेंट किस बारे में था ?'

'करीब डेढ़ महीने से मैं उस कमीने के बेहूदा वीकली पेपर 'यूअर वायस' में पार्ट टाइम रिपोर्टर की नौकरी करने की बेवकूफी कर रहा हूँ । मेरा काम उसे मिली सनसनीखेज कहानियों को चैक करना और सम्बन्धित तथ्य जुटाना था । इसी सिलसिले में मैंने उससे आज शाम साढ़े आठ बजे मिलकर पूछना था कि वह मुझे कहां भेजना चाहता था । मैं पौने आठ बजे अपने घर से चला । रास्ते में एक बार में व्हिस्की का लार्ज पैग लिया और साढ़े आठ बजे यहां आ पहुँचा । हमेशा की भांति घण्टी के जवाब में जगमोहन ने प्रवेश-द्वार खोला और हमेशा की भांति साइड में बनी देवराज मेहता की स्टडी तक जाने वाली सीढ़ियों के पास पहुँचा दिया । मैं ऊपर पहुँचा । फिर हमेशा की तरह देवराज ने स्टडी के पिछले दरवाज़े में लगी 'मैजिक आई' से मुझे देखा और दरवाजा खोला । और मेरे अन्दर दाखिल होने के बाद पुनः उसे बन्द कर दिया । उस दरवाज़े को वह हमेशा लॉक करके रखता था ।' सुरेश दुग्गल बड़े विचारपूर्ण ढंग से असली वाकया बयान करता प्रतीत हो रहा था यही वजह थी कि जब मैं रिवाल्वर लेकर दोबारा यहां आया तो उस दरवाज़े से स्टडी में जाने की कोशिश नहीं की । क्योंकि मैं जानता था पहली विजिट में जान लेने की धमकी दे चुकने के बाद उसने वो दरवाजा हरगिज भी मेरे लिये नहीं खोलना था ।

विजय कुमार को लगा कि सुरेश दुग्गल फिर कुछ भटकने-सा लगा था । इसलिये उसे टोकता हुआ बोला 'तुम स्टडी में दाखिल हो गये । देवराज मेहता ने दरवाजा बन्द कर दिया । फिर क्या हुआ ?'

'ओह, हां ।' सुरेश दुग्गल बोला-'मैं क्योंकि उससे बेहद क्षुब्ध था । इसलिए मैंने नमस्ते तक नहीं की । उसने एक बार मेरी ओर देखा फिर आदतन डेस्क के पीछे अपनी कुर्सी पर जा बैठा । मेरी पूर्णतया उपेक्षा करके उसने लम्बा, तेज और नोकीला पेपर कटर उठाकर सामने रखे डाक में आए लिफाफे काटकर चिट्ठियां निकालकर सरसरी निगाहों से देखकर पास पड़े ट्रे में रखनी शुरू कर दी । मैंने पहले ही निश्चित कर लिया था कि उससे क्या कहना था । इसलिये उसकी उपेक्षा की परवाह किये बगैर बोलना शुरू कर दिया । मैंने उससे कहा कि मैं जानता था मुझे एसाइनमेंट पर भेजकर वह रात में प्रतिमा से मिला करता था । और उससे इन्सानियत के दायरे में अपील की कि वह प्रतिमा से दूर हो जाए, उसके साथ किसी किस्म का ताल्लुक न रखे । मैंने उससे यहां तक कहा कि प्रतिमा जवान और मासूम है । उस बेचारी के कदम बहक सकते थे और इस तरह हमारी गृहस्थी चौपट हो

सकती थी । जबकि अपनी हविश के लिये वह सैकड़ों की तादाद में दूसरी औरतें आसानी से हासिल कर सकता था ।

'वन मिनट ?' विजय कुमार ने टोका-'उस वक्त स्टडी में सिर्फ तुम दोनों ही थे ?'

'हां । और किसने होना था ?'

'किसी ने नहीं । आगे बोलो ।'

'वह लिफाफे काटता हुआ इस ढंग से मुस्कराता रहा ।' सुरेश दुग्गल बोला-'मानो कहना चाहता था अगर प्रतिमा को इस बारे में कोई एतराज नहीं था और वह ऐसा करके खुश थी जो वह (देवराज) ही क्यों पीछे रहे ।' एकाएक उसका चेहरा सख्त हो गया । गरदन की नसें तन गई और आँखों से नफरत झलकने लगी ।' मैं गुस्से से पागल हो गया । चन्द क्षणों तक मेरे मुंह से बोल तक नहीं फूटा । उसके सामने व्हिस्की का आधे से ज्यादा भरा गिलास रखा था । पल भर के लिये, खुद को संयत करने के लिये मेरे जी में आया कि गिलास उठाऊ और एक ही दफा में खाली कर दूं । लेकिन अपनी इच्छा को दबा गया । अगर मेरे पास रिवाल्वर होती तो मैंने उसे उसी वक्त शूट कर देना था । मैंने यह बात उसे भी बता दी । और गरज कर बोला कि उसकी जान लेकर ही रहूँगा । लेकिन वह कमीना घमंडी मेरी धमकी के जवाब में कहकहा लगाकर हंस दिया । उसने मेरी अपील की या मेरी धमकी की कतई परवाह नहीं की । मेरा खून खौल रहा था । गुस्से के मारे मुझे अपने दिमाग की नसें चटकती सी महसूस हो रही थी । मैंने कहर भरी निगाह से उसे घूरा, लपककर ही दरवाजा खोला और तेजी से सीढ़ियां उतरता हुआ नीचे आ गया । तत्पश्चात मुझे याद नहीं कि किस तरह मैं अपने स्कूटर से घर पहुँचा ।'

'जब तुम घर पहुँचे तुम्हारी पत्नी वहां मौजूद थी ?' विजय कुमार ने पूछा ।

'हाँ । मुझे इतना याद है कि बैडरूम में घुसते ही जब मैंने अपना ओवर कोट उताकर पलंग पर फेंका तो प्रतिमा मेरी शक्ल देखते ही कांप गई थी । शायद मैं बहुत ज्यादा हिंसक और खौफनाक नजर आ रहा था और जब मैंने आलमारी से रिवाल्वर निकालकर चैक करके कोट की जेब में डालते हुये बताया कि मैं देवराज का खून करने जा रहा हूँ, प्रतिमा ने मुझे रोकने की नाकाम कोशिश करते हुये कहा कि मैं भारी गलतफहमी का शिकार होकर भयानक बेवकूफी करने जा रहा हूँ । देवराज मेहता ने उसका कतई कोई वास्ता नहीं था । लेकिन मैं आपे में नहीं था । मैंने उसकी बात पर जरा भी ध्यान नहीं दिया । उसे जबरन एक तरफ धकेलकर मैं फ्लैट से बाहर निकला । आंधी-तूफान की रफ्तार से स्कूटर दौड़ाता हुआ यहां आ पहुँचा । प्रवेश-द्वार खोलकर अन्दर दाखिल हुआ तो किसी ने मुझे रोकने की कोशिश की । लेकिन मैं सीढ़ियों पर दौड़ता चला जाकर ऊपर स्टडी में जा घुसा ।' पलभर रुककर सुरेश दुग्गल बोला-'हालांकि मैं देवराज मेहता की हत्या करने का निश्चय कर चुका था । लेकिन मैंने उसे तब भी शूट नहीं करना था । बशर्ते कि वह मुझसे

अपनी जान की भीख मांगता और प्रतिमा से हमेशा के लिये दूर रहने का वादा करता । लेकिन उस हरामजादे मगरूर ने ऐसा कुछ नहीं किया । वह अपनी कुर्सी की पुश्त से पीठ सटाए बांयी ओर तनिक झुका हैरान-सा बैठा एकटक मुझे घूरता रहा । वह एक शब्द भी नहीं बोला । मुझे यूं लगा कि मेरे हाथ में तनी रिवाल्वर देखकर चकित होने के बावजूद वह मुझे उपहासपूर्वक घूरता रहा था । मैं बर्दाश्त नहीं कर सका और उसे शूट कर दिया । उस जैसे जलील आदमी के साथ और किया भी क्या जा सकता था । उसके मुंह से आवाज़ तक नहीं निकली । गोली जिस्म के टकराते ही उसका जिस्म बांयी तरफ और ज्यादा झुक गया और सर कंधे पर ढलक गया । सुरेश दुग्गल ने अपना सर ऊपर उठाया ।' उसका चेहरा आवेशमय था और होंठ कांप रहे थे-'अब तो हर बात साफ हो गई, इन्स्पेक्टर ? बस आखिर में मैं इतना और बताना चाहता हूं कि दूसरी गोली अपने सीने में मार लेना चाहता था । लेकिन बदकिस्मती से इतना हौसला नहीं जुटा सका । फिर उसने अपना चेहरा हाथों में छुपाया और सिसकने लगा ।

डायरी पर फिसलता सत्यनारायण का पैन रुक गया ।

राजेश उठा और सुरेश दुग्गल के पास जाकर उसके कंधे पर सांत्वनापूर्ण हाथ रख दिया ।

विजय कुमार खड़ा हो गया । थके से अन्दाज में चलता हुआ सुधीर के पास पहुँचा ।

'सीधा-सीधा ओपन एण्ड शट केस है ।' वह बोला 'लेकिन मैं प्रतिमा दुग्गल से मिलकर कुछ बातों की पुष्टि कर लेना चाहता हूँ । राजेश उससे खासा परिचित है ।' तुम भी एक बार मिल चुके हो इसलिये मैं चाहता हूँ कि तुम लोग भी मेरे साथ चलो, ताकि उसे इस वारदात की सूचना देकर दिलासा दे दिलाकर पूछताछ के काबिल बना सको । मैं चाहता हूं तुम दोनों पहले चले जाओ, मैं सुरेश दुग्गल को हवालात भिजवाकर सीधा वहीं पहुँच जाऊंगा ।'

सुधीर सहमती-सूचक सर हिलाकर खड़ा हो गया ।

विजय कुमार ने पलटकर सत्यनारायण को संकेत किया ।

सत्यनारायण ने डायरी और पेंन अपने मोटे ओवर कोट की जेब में डाले और दूसरी जेब में से हथकड़ियां निकाल कर सुरेश दुग्गल की ओर बढ़ा ।

'मि० सुरेश दुग्गल ।' विजय कुमार भाव-हीन स्वर में बोला, 'तुम्हें देवराज मेहता को हत्या के अपराध में गिरफ्तार किया जाता है ।

सुरेश दुग्गल ने दोनों हाथ आगे कर दिये ।

सत्यनारायण ने उसे हथकड़ियां लगा दी ।

तभी रामसिंह ने आकर सूचना दी । फिंगर प्रिंट वाले अपना काम खत्म करके जा चुके थे । जयन्त नाथ भी उनसे लिफ्ट लेकर उन्हीं के साथ चला गया था ।

अचानक बाहर कार आकर रुकने की आवाज़ सुनाई दी ।

विजय कुमार और सुधीर की निगाहें परस्पर मिली । फिर वे दरवाज़े की ओर बढे और हॉल में आ गये । वहां अकेला बैठा बलराज मेहता व्हिस्की चुसकता हुआ सिगरेट फूक रहा था ।

प्रवेश-द्वार खुला ।

एक युवती हैंड बैग झुलाती हुई भीतर दाखिल हुई । विजय कुमार को बावर्दी हाल में खड़ा देखकर एकाएक बुरी तरह चौंकी फिर जहाँ की तहां ठिठक गई ।

* * * * * *

आगंतुका के जिस्स पर घुटनों से नीचा लम्बा सफेद कोट, हल्की नीली साड़ी, सर पर नीला स्कार्फ और हाथ में झूलता नीला हैंडबैग उसका परिचय स्वयंमेव दे रहे थे ।

बलराज मेहता के बयान के मुताबिक घर से जाते वक्त देवराज मेहता की पत्नी ने यही लिबास पहन रखा था ।

सुधीर और विजय कुमार को समझते देर नहीं लगी कि वह नीना मेहता थी । वे एकटक उसे देख रहे थे ।

उन दोनों के दिमाग में राजेश के शब्द भी गूँज रहे थै-'मैंने नीना मेहता को देखा है । और मैं बेहिचक कह सकता हूँ कि वह वाकई देखने दिखाने से ताल्लुक रखने वाली चीज है ।'

सत्ताइस-अट्ठाइस वर्षीय नीना मेहता वास्तव में सौंदर्य और आकर्षण का अद्भुत सम्मिश्रण थी । एकदम गोरा-चिट्टा रंग, ऊंचा कद, ठोस मांसल जिस्म और सुडौल उत्तेजक उभार । बेहद खूबसूरत चेहरा । कंधों पर लहराते घने स्याह काले बाल । हिरनी जैसी बड़ीबड़ी काली और मादक चमकीली आँखें आश्चर्य एवं असमन्जसतापूर्वक सुधीर और विजय कुमार को घूर रही थी ।

'आप लोग...? खनकता-सा स्वर उभरा । फिर वह बलराज मेहता की ओर आकर्षित हो गई-बलराज, ये लोग ? मेरा मतलब पुलिस इन्स्पेक्टर की यहां मौजूदगी की क्या वजह है ?'

बलराज मेहता के चेहरे पर सख्त हैरानगी के भाव उत्पन्न हुए फिर वह सामान्य हुआ और फिर तनिक गमगीन नजर आने लगा ।

'देवराज का खून कर दिया गया है । वह बोला ।

नीना मेहता की आँखों में घोर अविश्वास झलकने लगा ।

'क...क्या कह रहे हों ?' वह उत्तेजित स्वर में बोली -'ओ...नो...नेवर' । और लड़खड़ाती-सी आगे आकर निकटतम कुर्सी में ढेर हो गई । अपना चेहरा हाथों से ढंक लिया ।

सुधीर ने नोट किया । बलराज मेहता अजूबे की तरह अपनी भाभी को ताक रहा था ।

उसने अपना गिलास खाली करके मेज पर टिकाया और उठकर नीना के पास जा खड़ा हुआ ।

सुधीर और विजय कुमार बैठ गए । आवाजें सुनकर राजेश भी हाल में आ गया था ।

बलराज मेहता नीना के कन्धे पर हाथ रखकर उसे सांत्वना देने लगा ।

चन्द क्षणोंपरांत नीना ने सर ऊपर उठाया ।

उसकी आँखें गीली थीं ।

'यह कब हुआ, कैसे हुआ ?' उसने पूछा ।

बलराज मेहता ने संक्षेप में उसे बता दिया ।

'गोली कहां लगी थी ?' नीना ने पूछा ।

'सीधी दिल में । और देवराज फौरन मर गया था ।'

नीना मेहता ने गहरी सांस ली ।

वह कुछ देर खामोश बैठी रही ।

'इन्स्पेक्टर ।' वह विजय कुमार की ओर उन्मुख होकर बोली-'बड़ी ताज्जुब की बात है कि सुरेश दुग्गल ने मेरे पति की हत्या कर दी । सुरेश से मैं भी कई बार मिली हूँ । और मैंने उसे हमेशा निहायत शरीफ, समझदार और संजीदा ही पाया था । आप बता सकते हैं कि उसने ऐसा क्यों किया ?'

विजय कुमार चकित सा था । नम आंखों के अलावा नीना के चेहरे पर ऐसा कोई चिन्ह नहीं था जिसकी वजह से यह कहा जा सके कि उसे अपने पति की मृत्यु का जरा भी अफसोस था ।

'सुरेश दुग्गल के मुताबिक आपका पति उसकी पत्नी पर डोरे डाल रहा था । उसने जवाब दिया ।

'दी सेम ओल्ड स्टोरी ।' वह नफरत से बोली 'जैलस हजबैंड एण्ड दी इलीसिट लवर ।

विजय कुमार कुछ नहीं बोला । पति की मौत की खबर सुनकर कोई जवान औरत इतनी सहज भी बनी रह सकती थी । यह वह पहली बार देख रहा था ।

इन्स्पेक्टर । नीना बोली- मैं देख रही हैं कि आप कुछ हैरान हैं । और आपकी हैरानगी मुझे लेकर हैं । ठीक है ना ?

'दरअसल मैं सोच रहा हूँ ।'

'कि मैं कैसी औरत हूँ ।' नीना उसका वाक्य पूरा करती हुई नफरत से पगे स्वर में बोली-'आपका सोचना बिल्कुल दुरुस्त है । क्योंकि आप हम पति-पत्नी के आपसी सम्बन्धों से पूरी तरह अनजान हैं । और सबसे बड़ी बात यह है कि आप देवराज की फितरत से बिल्कुल नावाकिफ हैं । खैर छोड़िए, मैं देवरज की लाश देखना चाहती हूँ । कैसा भी सही आखिरकार वह मेरा पति था ।' और वह उठकर खड़ी हो गई ।

'लाश यहाँ से भिजवा दी गई है । विजय कुमार बोला ।

'भिजवा दी गई है । कहां ?'

'मोर्ग में ।'

नीना धम से पुन: बैठ गई ।

'मोर्ग में ।' वह असमंजसतापूर्वक बोली-'लेकिन क्यों ?'

'ताकि डॉक्टर लाश का निरीक्षण कर सके ।'

'निरीक्षण । किसलिए ?'

'मृत्यु का अनुमानित सही समय और सही वजह निर्धारित करने के लिए ।

'आपको शक है कि देवराज की मृत्यु सुरेश दुग्गल द्वारा शूट किए जाने से नहीं हुई ?'

विजय कुमार हिचकिचाया ।

'नहीं । फिर उसने जवाब दिया ।

'तो फिर मृत्यु का समय और कारण निर्धारित कराने की जरूरत क्यों आ पड़ी ? जबकि सही वक्त और सही वजह दोनों ही मालूम हैं ।'

विजय कुमार ने स्वयं को विचलित सा अनुभव किया ।

'देखिए यह एक कानूनी औपचारिता...।'

नीना मेहता के चेहरे पर कड़वी मुस्कान तैर गई ।

'इन्स्पेक्टर बुरा न मानो तो एक बात कहूँ ?' वह बोली ।

'कहिये ?'

'मैं भी लॉ ग्रेजुएट हूँ । और बखूबी जानती हूँ कि लाश का निरीक्षण और पोस्टमार्टम उन्हीं हालात में जरूरी होता है । जब मृत्यु सन्देहास्पद स्थिति में हुई हो । या इनवेस्टीगेटिंग पुलिस अफसर को कारणवश शक हो कि मृत्यु की असली वजह वो नहीं हैं जो दिखाई देती है । ठीक है न ?'

बात सही थी । विजय कुमार इन्कार नहीं कर सका ।

'हां । उसे कहना पड़ा ।

'तो फिर आप क्यों खामखाह झमेले में पड़ रहे हैं ? और साथ में मुझे भी डाल रहे हैं ।' नीना मेहता प्रभावपूर्ण स्वर में बोली-'जबकि न तो देवराज की मृत्यु संदेहास्पद स्थितियों में हुई है । और न ही आपको ऐसा शक है कि मृत्यु की असली वजह कोई और है ।'

विजय कुमार एकाएक कोई जवाब नहीं दे सका ।

'देखिए मैं वर्तमान और वास्तविकता में जाने वाली औरत हूँ ।' नीना मेहता कहे जा रही थी- 'मुझे आपके सामने यह स्वीकार करने में हिचक नहीं है कि मेरा और देवराज का विवाहित जीवन बेहद दु:खी, कलह और क्लेशपूर्ण था । हम दोनों के नैतिक और सामाजिक मूल्यों और आचार-विचार में जमीन-आसमान का फर्क था । लेकिन दोनों पढ़े-लिखे थे और अपनी-अपनी निगाह में समझदार भी । इसलिए हमारे आपसी झगड़े हम तक ही सीमित थे । समाज में प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए हम विवाहित जीवन की गाड़ी को जबरदस्ती धक्का दिए जा रहे थे । खैर छोड़िए, इन बातों को । सीधी सी बात यह है कि देवराज कानूनन मेरा पति था । और मैं अपने पति की लाश की मिट्टी खराब नहीं होने देना चाहती ।'

विजय कुमार तनिक चौंका ।

'मैं आपका मतलब नहीं समझा, मिसेज मेहता ?'

'मतलब साफ है । क्योंकि आपके सामने कोई ठोस तो क्या हल्की सी भी वजह नहीं है । इसलिए मैं नहीं चाहती कि आप लाश को चीरे फाड़ें यानि पोस्टमार्टम करायें ।'

विजय कुमार सोच में पड़ गया ।

'ठीक है ।' अन्त में वह बोला-'पोस्टमार्टम नहीं कराया जाएगा ।

'थैक्स ए लॉट, इन्स्पेक्टर । मैं आपके साथ चलू । आप डैड बाडी मुझे दिला देंगे ?'

'अभी नहीं ।'

'क्यों ?'

'देखिए, हालांकि मैं जाती तौर पर आपकी बात से सहमत हूं । यह बिल्कुल ओपन एण्ड शट केस है । लेकिन सरकारी मशीनरी का पुर्जा होने की वजह से हम लोगों की भी कुछ मजबूरियां हैं । कुछ कागजी खानापूरी भी करनी होती है । और उसमें थोड़ा वक्त लगता है ।'

'यह बात मैं भी समझती हूँ । आप इतना बता दीजिए कि लाश किस वक्त रिलीज करेंगे ।

विजय कुमार ने अपनी रिस्ट वाच पर निगाह डाली ।

सवा ग्यारह बज रहे थे ।

'करीब दो घण्टे बाद मैं आपको फोन कर दूँगा ।' वह बोला-'आप पुलिस हैडक्वाटर्स आ जाइए । मैं आपको मोर्ग में ले जाकर लाश आपके सुपुर्द कर दूँगा ।'

'अगेन थैंक्यू वैरीमच, इन्स्पेक्टर ।' नीना मेहता ने कहा फिर पूछा-'आपने देवराज की हत्या के बारे में मुझसे भी कुछ पूछताछ करनी है ?'

'फिलहाल मैं ऐसी कोई जरूरत नहीं समझता । बाद में अगर जरूरत पड़ी तो ज़रूर आपको तकलीफ दूँगा ।'

'ओह नो । तकलीफ कैसी । कानून की मदद करना मेरा फर्ज है ।' कहकर वह बोली-कैसी अजीब बात है, इन्स्पेक्टर, देवराज की मौत, का दुख होने से ज्यादा मुझे बेचारे सुरेश दुग्गल के अन्जाम पर तरस आ रहा है ।

'नेवर माइंड, मैडम । इन्सानी फितरत का कोई भरोसा नहीं है । किस वक्त कौन क्या कर गुजरे ? कोई नहीं जानता । लेकिन करने वाले को अपने किए का अंजाम ज़रूर भुगतना पड़ता है ।'

विजय कुमार खड़ा हो गया ।

उसने रामसिंह को बुलाया । स्टडी के टूटे दरवाज़े को ठोक-पीट कर ठीक कराया । फिर दरवाजा लॉक करके चाबी अपनी जेब में डाली । किसी को अन्दर न घुसने देने की हिदायत देकर उसने रामसिंह को वहीं तैनात कर दिया ।

सुरेश दुग्गल को सत्यनारायण की सुपुर्दगी में जीप में सवार कराया । फिर खुद भी जीप में सवार हुआ । जीप पुलिस हैडक्वाटर्स की तरफ दौड़ गई ।

सुधीर और राजेश ब्यूक में सवार होकर सुरेश दुग्गल के घर की तरफ रवाना हो गए ।

* * * * * *

ब्यूक तेजी से लिटन रोड की ओर दौड़ रही थी ।

सुधीर खामोशी से कार ड्राइव कर रहा था । उनकी बगल में गुमसुम सा राजेश बैठा था ।

'बेचारे सुरेश का अब क्या अन्जाम होगा ?' अचानक राजेश ने पूछा ।

सुधीर ने इस ढंग से राजेश की ओर देखा मानो उसने कोई बेवकूफाना बात कह दी थी ।

'तुम नहीं समझ सकते ?' वह बोला ।

'मैं आपके मुंह से सुनना चाहता हूं ।'

अगर कोई चमत्कार नहीं हो गया तो उसे फांसी पर लटकना पड़ेगा । यह कोल्ड ब्लडडमर्डर था । उसने अच्छी तरह सोच विचार कर बाकायदा योजनाबद्ध तरीके से हत्या की है ।'

'यह तो सरासर अन्धेरगर्दी होगी ।'

'क्यों ?'

'इसलिए कि क्या किसी आदमी को अपने विवाहित जीवन की रक्षा करने का हक नहीं है ? क्या उसे अपनी बीवी को गुमराह होने देना चाहिए ? इन हालात में वक्ती तौर पर आपे से बाहर होकर या किसी दूसरे आदमी ने ऐसा कुछ नहीं कर गुजरना था । और फिर यह भी तो किसी से छुपा नहीं है कि देवराज मेहता कितना खुदगर्ज और कितना गिरा हुआ आदमी था । हर कोई उससे नफरत करता था ।

यह सब तो ठीक है लेकिन क्या तुम नहीं जानते कि भारत के किसी भी आदमी को कानून को अपने हाथ में लेने का कोई हक नहीं है ।' सुधीर बोला-'दूसरे, अगर सुरेश दुग्गल एकाएक बेहद आवेश में आकर फौरन देवराज मेहता को शूट कर डालता तो हो सकता था कि जज उसके प्रति थोड़ी रहमदिली से काम लेता । जब वह साढ़े आठ बजे देवराज मेहता से मिलने आया था उसी वक्त अगर उसकी जेब में रिवाल्वर रही होती और वह उसे शूट कर देता तो शायद मामला इतना गम्भीर नहीं बनता लेकिन खुद उसी के बयान से जाहिर है कि देवराज मेहता से पहली बार मिलने आने के बाद उसने उसकी हत्या करने का निश्चय कर लिया, उसे मार डालने की धमकी दी फिर घर गया, रिवाल्वर लेकर वापस लौदा और उसे शूट कर दिया । इस पूरे झंझट में उसे करीब पौना घण्टा लग गया । क्या तुम इसे क्षणिक आवेश की संज्ञा दे सकते हो ?'

'लेकिन वह शराब के नशे में धुत्त था । सही फैसला लेना तो दरकिनार रहा वह ठीक ढंग से सोचने की हालत में भी नहीं था । क्या इस बात को मद्दे नजर नहीं रखा जाएगा ?'

'मैं नहीं जानता कि अदालत में जज पर इस बात की क्या प्रतिक्रिया होगी ? लेकिन अगर उसे नशे में इस कदर धुत्त मान भी लिया कि वह कुछ सोचने समझने की हालत में नहीं था तो फिर यह कैसे मुमकिन हो गया कि देवराज मेहता की कोठी से अपने फ्लैट तक और फिर वापस देवराज मेहता के यहां पहुंचने के लिये आंधी-तूफान की रफ्तार से स्कूटर दौड़ाने के बावजूद उससे कोई मामूली सा भी एक्सीडेंट नहीं हुआ । नहीं, राजेश मैं नहीं समझता कि तुम्हारी इस दलील में कोई दम है ।

राजेश कुछ नहीं बोला ।

'अलबत्ता एक बात का अफसोफ मुझे ज़रूर है ।' सुधीर कहता गया-'तुम्हारे दोस्त द्वारा तुम्हें बाद में बताई गई बातों को मैंने सीरियसली नहीं लिया ।'

राजेश चुप बैठा रहा ।

वे लिटन रोड पहुँचे ।

सुधीर ने ब्यूक ठीक उस इमारत के सामने रोकी । जिसमें सुरेश दुग्गल का फ्लैट था ।

कार से उतरकर दोनों इमारत में दाखिल हो गए ।

'मेरी समझ में नहीं आता, प्रतिमा को यह खबर कैसे दूंगा ।' राजेश ने परेशान स्वर में कहा-'वह सुरेश से बेइन्तहा मुहब्बत करती है ।'

सुधीर ने कोई जवाब नहीं दिया ।

वे सुरेश दुग्गल के फ्लैट के सामने पहुंचे ।

दरवाजा बन्द पाकर सुधीर ने डोर बैल बटन पुश किया ।

थोड़ी देर इन्तजार करने के बाद भी भीतर से दरवाजा खुलने का कोई आसार नजर नहीं आया । सुधीर ने पुनः घन्टी बजा दी ।

इस बार भी फ्लेंट के भीतर हलचल का आभास न पाकर दोनों ने प्रश्नात्मक दृष्टि से एक-दूसरे की ओर देखा ।

असमंजस में पड़े राजेश ने बैल-पुश कर अंगूठा रखा और करीब तीस सैकेंड तक दबाता रहा ।

लेकिन दरवाजा फिर भी नहीं खुला । उसने नीचे झुककर कीहोल से आंख सटा दी ।

'भीतर रोशनी है । प्रतिमा कहां चली गई ?' राजेश बड़बड़ाया-उसे तो यहीं होना चाहिये था ।

सुधीर ने पल भर कुछ सोचा फिर जेब से चाबियों का एक गुच्छा निकाल लिया । एक-एक करके चाबिया दरवाज़े के की होल में ट्राई करने लगा ।

'यह आप क्या कर रहे हैं ?' राजेश ने व्याकुलतापूर्वक पूछा ।

'तुम्हें नजर नहीं आ रहा है ?' सुधीर बोला और कीहोल में फिट बैठ गई एक चाबी को घुमाने की कोशिश की ।

'लेकिन यह सरासर...।' राजेश के बाकी शब्द कंठ में फंसकर रह गये ।

सुधीर चाबी धुमाकर दरवाजा खोल चुका था ।

फ्लैट में रोशनी थी लेकिन किसी को उपस्थिति का आभास नहीं होता था ।

सुधीर ने वहीं खड़ा रहकर ऊंची आवाज़ में हांक लगाई ।

'मिसेज दुग्गल ?'

जवाब में सन्नाटा छाया रहा ।

पलभर हिचकिचाने के बाद सुधीर ड्राइंगरूम के जैसे शानदार कमरे में दाखिल हो गया ।

राजेश ने भी उसका अनुकरण किया ।

दांयी ओर बना दरवाजा डाइनिंग रूम में खुलता था । उसी के सामने किचेन थी । बगल में एक छोटासा गैलरीनुंमा रास्ता बाथरूम और लैट्रिन तक जाता था ।

डाइनिंग रूम में खुलने वाले दरवाज़े के ठीक सामने एक और बन्द दरवाजा था ।

सुधीर ने लपककर उसी को खोला ।

वो कमरा बैडरूम था ।

वहां भी लाइट ऑन थी । फोम के गद्दों वाले डबल बैड के अलावा, ड्रेसिंग टेबल, कपबोर्ड, दो बक्से, तीन सूटकेस ब्रीफकेस वगैराह वहां मौजूद थे । दीवार में भी लकड़ी की एक आलमारी बनी हुई थी ।

सुधीर ने एक ही निगाह में कमरे का अवलोकन किया फिर उसकी खोजपूर्ण आँखें डबल बैड पर ठहर गई ।

उस पर एक सूटकेस खुला पड़ा था । जिसमें साड़ियां ब्लाउज कार्डिगन वगैरा रखे थे । निकट ही सौन्दर्य प्रसाधन की कुछ चीजे तथा स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाले का अन्य कपडे बिखरे पड़े थे । एक ग्रे कलर का मर्दाना ओवरकोट भी लापरवाही से फेंका गया पड़ा नजर आ रहा था ।

सुधीर पीछे हटा ।

दांयी ओर गैलरी से जाकर बाथरूम का दरवाजा खोला ।

लाइट ऑन करते ही उसे चौंक जाना पड़ा ।

दीवारों पर लगी सफेद टाइलों पर जगह-जगह लाल रंग की बूंदे थीं । एक सफेद गीला तौलिया, जिसमें जगहजगह गहरे लाल दाग मौजद थे, नलके की टोंटी पर लटक लटक रहा था ।

शक की कोई गुंजाइश नहीं थी ।

वे बूंदे और दाग खून के ही थे ।

इस नजारे ने दोनों को चकरा दिया ।

'यह सब क्या चक्कर है, राजेश ?' सुधीर बोला 'तुम्हारे विचार से यहां क्या हुआ हो सकता है ?'

'पता नहीं ।' राजेश परेशान स्वर में बोला-'मैं तो खुद भी हैरान हूँ ।'

'मुझे फोन करते समय प्रतिमा ने कहा था कि सुरेश रिवाल्वर लेकर देवराज मेहता को शूट करने गया था ।' सुधीर विचारपूर्वक बोला-'सुरेश ने भी इस बात की पुष्टि की थी कि जब वह रिवाल्वर लेने आया तो प्रतिमा घर में ही थी । और उसे रोकने की कोशिश भी की थी । यही बताया था न सुरेश ने ?'

'हां ।' राजेश ने सहमति दी-'फिर वह प्रतिमा को धकेल कर बाहर निकला और आँधी-तूफान की रफ्तार से स्कूटर दौड़ाता हुआ देवराज मेहता के यहां जा पहुंचा ।' तनिक रुककर पूछा-'आपके विचार से क्या ऐसा है कि मियां-बीवी में हाथापाई हुई थी और सुरेश ने पहले उसे ही ठिकाने लगा दिया था ?'

सुधीर ने जवाब नहीं दिया । गहन सोच-विचार में उलझा वह बैडरूम में वापस आ गया ।

'यहाँ की हालत बता रही है । वह पलट कर राजेश से बोला-'प्रतिमा ने आनन-फानन में सूटकेस पैक करना चाहा था ।' और आधे पैक किये खुले पड़े सूटकेस की ओर इशारा कर दिया ।

राजेश ने सहमति-सूचक सर हिला दिया ।

'लेकिन सवाल यह पैदा होता है । सुधीर बोला-'यह पैकिंग उसने सुरेश के रिवाल्वर लेने आने से पहले की या उसके चले जाने के बाद ?'

'जिस ढंग से ये चीजें बिखरी पड़ी हैं ।' राजेश बोला-'उससे जाहिर है प्रतिमा जल्द से जल्द यहां से भाग जाना चाहती थी ।

'इसका मतलब है सुरेश के आने और रिवाल्वर लेकर यहां से चले जाने के बाद ।' सुधीर बोला-'या यह भी हो सकता है कि मुझसे बातें करने के बाद वह इतना डर गई हो, या बौखला गई हो, या फिर किसी और वजह से उसने यहां से भागने में मैं ही अपनी भलाई समझी । और अपनी तैयारी में लग गई । फिर इसी बीच देवराज मेहता से मिलने के बाद ऊपर से सुरेश आ पहुँचा । प्रतिमा को तैयारी करती देखकर उसका शक विश्वास में बदल गया । और प्रतिमा के इस एक्शन ने उसकी क्रोधित अवस्था में जलती आग में घी की आहुति का काम कर दिया ।' अचानक रुका फिर चौंकता हुआ सा बोला-'गलत...बिल्कुल गलत । ऐसा नहीं हो सकता । क्योंकि प्रतिमा ने मुझे तब फोन किया था, जब सुरेश घर आने के बाद रिवाल्वर लेकर जा चुका था । जाहिर सी बात है कि प्रतिमा ने सुरेश के रिवाल्वर लेकर चले जाने के बाद ही पैकिंग शुरू की होगी । तब हो सकता है सुरेश अनपेक्षित रूप से दोबारा वापस लौट आया हो और...।'

'लेकिन सुरेश को इतना वक्त ही कहां मिला होगा ?' राजेश ने प्रतिवाद किया-'यहां से स्कूटर द्वारा देवराज मेहता के घर पहुँचने में कम से कम बीस मिनट ज़रूर लगेंगे । सुरेश ने चाहे जितना तेज स्कूटर दौड़ाया हो फिर भी पन्द्रह-सोलह मिनट से कम में उसने यह रास्ता हरगिज भी तय नहीं किया होगा । अब जरा तथ्यों पर गौर कीजिए । सुरेश साढ़े आठ बजे देवराज मेहता के पास पहुँचता है । पांच-सात मिनट उससे बात करता है । स्टडी से उतर कर नीचे आता है । स्कूटर दौड़ाता हुआ पन्द्रह मिनट में यहाँ पहुँचता है । ओवरकोट उतारकर फेंकता है । रिवाल्वर जेब में डालता है । प्रतिमा को अपना इरादा बताता है । उसका जवाब सुनता है । फिर उसे धकेलकर बाहर खड़े अपने स्कूटर के पास जाता है और पन्द्रह मिनट बाद वापस देवराज मेहता के निवास पर लौटता है । धक्का-मुक्की करने के बाद ऊपर उसकी स्टडी में जाता है और उसे शूट कर देता है । उस वक्त सवा नौ बजे का वक्त होता है । इस तरह जाने-आने और बाकी सारे कामों में लगे वक्त का हिसाब जोड़ने पर उसे दो चार मिनट का वक्त भी मुश्किल से ही मिला हो सकता था ।'

'हां, बशर्ते कि समय का यह विवरण सही हो ।' सुधीर सहमत होता हुआ बोला-'और फिलहाल इस सम्बन्ध में हमारी जानकारी सिर्फ सुरेश के बयान तक ही सीमित है ।'

'नहीं, हम खुद भी गवाह हैं ।' राजेश ने पुनः प्रतिवाद किया-'प्रतिमा ने आपको नौ बजे तक फोन किया था, जब सुरेश यहां से जा चुका था । और जब हम देवराज मेहता के यहां पहुंचे । उससे मुश्किल से एक मिनट पहले ही सुरेश भी वहां पहुंचा था । और उस वक्त अन्दाजन सवा नौ बज रहे थे ।'

सुधीर को मानना पड़ा कि राजेश का हिसाब बिल्कुल सही था । सुरेश को दो-चार मिनट से ज्यादा का वक्त मिल ही नहीं सकता था ।

'यह भी हो सकता है । उसने सम्भावना व्यक्त की -'जिस औरत ने मुझे फोन किया था । वह प्रतिमा दुग्गल न होकर कोई और हो । फोन पर उसकी आवाज़ मैंने पहली बार सुनी थी । इसलिए मैं इस बात का दावा नहीं कर सकता कि वो आवाज़ उसी की थी ।

'दूसरी कोई औरत बीच में कहां से आ टपकी ?

'यह मैं कैसे बता सकता हूँ कि दुग्गल दम्पत्ति इस बखेड़े में और कितनी औरतें शामिल थीं ?' सुधीर ने तल्खी से कहा-'यहां बाथरूम की दीवारों पर खून के दाग मौजूद है और प्रतिमा गायब है । वो भी ऐन उस मौके पर जबकि उसका पति उसकी खातिर हत्या कर रहा होता है । मुझे तो यह सारा सिलसिला एक बड़ा भारी प्रश्नचिन्ह नजर आता है । उसने अपनी रिस्टवाच पर दृष्टिपात किया- 'बारह बजने वाले हैं । विजय कुमार को फोन करता हूँ । वही इस झमेले से निबटेगा ।'

'उसने आने के लिये कहा तो था । आता ही होगा ।'

'पता नहीं कितनी देर लगाये । मैं उसे जल्दी आने के लिये कहता हूँ ।'

सुधीर ड्राइगरूम में आ गया । और विजय कुमार को फोन करने लगा ।

* * * * * *

विजय कुमार साढ़े बारह बजे आया ।

उसके चेहरे पर थकान और खीज के भाव साफ नजर आ रहे थे ।

उसने विस्तार-पूर्वक सुधीर की बात सुनी और फ्लैट का मुआयना किया । फिर एकाएक वह क्रोधित नजर आने लगा । और फिर वह तेजी से फ्लैट से बाहर निकल गया ।

चन्द क्षणोपरांत वह वापस लौटा ।

राजेश और सुधीर देखकर हैरान रह गये ।

उसके साथ सुरेश दुग्गल भी था । सुरेश के हाथों में हथकड़ियां लगी हुई थीं ।

'मुझे शुरू से ही शक था कि यह आदमी घिस्सा देने की कोशिश कर रहा था ।' विजय कुमार कुपित स्वर में बोला-'इसलिये इसे साथ ही लेकर आया हूँ । फिर उसने सुरेश को आग्नेय नेत्रों से घूरा-'इस फ्लैट की हालत अच्छी तरह देख लो । फिर हमें बताओ कि जब तुम रिवाल्वर लेकर देवराज मेहता की हत्या करने के लिये यहां से गये थे । क्या उस वक्त भी यहां की यही हालत थी ?'

अपने ही ड्राइंगरूम में अजनबियों की भांति खड़े सुरेश दुग्गल ने अपार असमंजसतापूर्वक विजय कुमार को घूरा । फिर यह प्रश्नात्मक दृष्टि से राजेश को देखने लगा ।

'मेरी समझ में नहीं आता आप कह क्या रहे हैं, इन्स्पेक्टर ?' उसने हैरानगी भरे स्वर में पूछा । एकाएक वह आतंकित-सा नजर आने लगा । लगभग चीखता हुआ बोला-'प्रतिमा कहां है ? मैं पूछता हूँ, वह कहां है ?'

विजय कुमार की निगाहें उसके चेहरे पर जमी थीं ।

'यही तो हम भी जानना चाहते हैं । वह बोला ।

'क्या मतलब ?'

'तुम्हारी बीबी कहां है ?' विजय कुमार ने सख्ती से पूछा ।

'यहीं होनी चाहिये । मैं...।' हैरान सुरेश दुग्गल बैडरूम के दरवाज़े पर पहुँचा । अन्दर की हालत देखते ही उसे झटका-सा लगा । वह उत्तेजित स्वर में बोला-'यह सब क्या है ? प्रतिमा हर चीज को बड़े करीन से सजाकर रखती है । यह सब किसने किया है ?' वह विजय कुमार की ओर पलट गया-'प्रतिमा कहां है ? क्या हो गया है उसके साथ ?'

विजय कुमार ने उसे बाहर खींचा फिर बाथरूम की ओर धकेल दिया ।

'पहले अन्दर की हालत देखो ।' विजय कुमार कर्कश स्वर में बोला-'फिर सच-सच बताओ कि यहां हुआ क्या है ?

बाथरूम की दीवारों पर निगाह डालते ही उसका चेहरा कागज की तरह सफेद पड़ गया । हाथ मुट्ठियों की शक्ल में जोर से भिंच गये ।

'दीवारों पर खून लगा है ।' वह भयभीत-सा चिल्लाया -'क्या यह प्रतिमा का खून है ? मैं पूंछता हूँ आप लोग बताते क्यों नहीं ? आखिर यहां हुआ क्या है ?'

'हम खुद भी यही जानना चाहते हैं ?'

'लेकिन मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता ।' सुरेश दुग्गल कातर स्वर में बोला ।

विजय कुमार ने कहर भरी निगाहों से उसे धूरा ।

'मैं बताता हूँ ।' वह बोला-'पहले तुमने अपनी बीबी का खून किया । फिर उसके प्रेमी की हत्या करने दौड़ गये । उसने दहाड़ते हुये पूछा-'तुम्हारी बीबी की लाश कहां है ? लाश का क्या किया है तुमने ?'

सुरेश दुग्गल मानो आसमान से गिरा । वह हक्काबका-सा खड़ा इन्स्पेक्टर को घूरता रहा ।

'यह झूठ है ।' एकाएक वह जोर से चिल्लाया । फिर लड़खड़ाता हुआ-सा चलकर ड्राइगरूम में आया और एक सोफा चेअर में धम से गिर गया ।

विजय कुमार उसके सामने तनकर खड़ा हो गया । 'तो फिर सच्चाई क्या है ?'

'मैं...मैं प्रतिमा से बेइन्तिहा मुहब्बत करता हूँ ।' सुरेश दुग्गल अपने सूखे होठों पर जुबान फिराता हुआ बोला-'इसीलिए मैंने कमीने देवराज की हत्या की है । मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं प्रतिमा को बेडरूम में छोड़कर गया था । उसने मुझे रोकने की कोशिश की थी और मैंने उसे पलंग पर धकेल दिया था । लेकिन उसे किसी किस्म की कोई चोट जरा भी नहीं पहुंचाई थी ।' हथकड़ियों में जकड़े अपने हाथों को वह अपने घुटनों पर मुक्कों की तरह बजाता हुआ बोला-'आप लोग समझते क्यों नहीं, दुनियां की किसी भी चीज से ज्यादा महत्व मेरे लिये प्रतिमा का है ।

'तुम एकदम सफेद झूठ बोल रहे हो ।' विजय कुमार तीव्र स्वर में बोला-'देवराज मेहता की हत्या तुमने इसलिये नहीं की कि तुम अपनी बीबी से बेपनाह मुहब्बत करते हो । बल्कि इसलिये की थी क्योंकि तुम इस बात को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे कि तुम्हारी बीबी किसी और के साथ हमबिस्तर हो ।'

'नहीं...नहीं...।' सुरेश दुग्गल ने आर्तनाद-सा किया-'यह सच नहीं है ।' और 'हाथों में चेहरा छुपाकर सिसकने लगा ।

'देखो मिस्टर, इस तरह रोने से कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है ।' विजय कुमार अपेक्षाकृत नम्र स्वर में बोला-'न ही सच्चाई कबूलने से तुम्हारी स्थिति में भी कोई फर्क पड़ने वाला है । हत्या के अपराध में फांसी पर चढ़ने का सामान तुम पहले ही अपने लिये जुटा चुके हो । और कानून तुम्हें एक बार से ज्यादा फांसी पर नहीं चढ़ा सकता । मैं मानता हूँ कि तुमने बड़ी सफाई से काम किया है । अपनी बीबी के हरजाईपन की वजह से उसकी और उसके प्रेमी की जाने ले ली है । कम ऑन, देवराज मेहता की हत्या के अपराध की तरह इसे भी कबूल क्यों नहीं कर लेते हो ?'

'नहीं ! यह झूठ है ! गलत है ! बेबुनियाद है !' सुरेश दुग्गल पीड़ित स्वर में चिल्लाया-'मैं कसम खाता हूँ । फिर हांफता हुआ-सा याचनापूर्वक बोला-'इन्स्पेक्टर, प्लीज, खड़े मत रहो । भगवान के लिये प्रतिमा को तलाश करो । प्लीज डू समथिंग ।'

विजय कुमार अब तक तटस्थ दर्शकों की भांति खड़े सुधीर और राजेश की ओर पलटा ।

'इस जैसे आदमियों से सच्चाई कबुलवाना भी मुझे आता है ।' वह बोला । फिर सुधीर की ओर मुखातिब हो गया-'तुम यकीनी तौर पर कह सकते हो कि तुमसे फोन पर इसे रोकने की अपील करने वाली प्रतिमा दुग्गल ही थी ?'

'नहीं ।' सुधीर ने जवाब दिया-'अलबत्ता यह बिल्कुल तय बात है कि मुझे फोन करने वाली स्त्री बेहद भयभीत और बौखलाई हुई थी । वह मुझे जानती हुई प्रतीत थी । और आज शाम प्रतिमा दुग्गल से हुई मेरी बातचीत की जानकारी भी उसे थी । उसने सुरेश

दुग्गल को सिर्फ सुरेश कहकर सम्बोधित किया था । जब मैंने उससे पुलिस को सूचित करने के बारे में पूछा था तो लगभग रोते हुए उसने कहा था कि वह सुरेश को गिरफ्तार कराना नहीं चाहती । कुल मिलाकर वह मुझे ऐसी पत्नी प्रतीत हुई थी जो अपने पति को हत्या करने से रुकवाने के लिये मरी जा रही थी । प्रतिमा दुग्गल की आवाज़ मैंने पहले कभी फोन पर नहीं सुनी थी । इसलिये मैं दावे से नहीं कह सकता कि मुझे फोन करने वाली स्त्री वाकई वही थी ।'

विजय कुमार के चेहरे पर अनिश्चायात्मक भाव थे ।

'ऐसा लगता है ।' वह बोला-'वह एकाएक बहुत ज्यादा डर गई थी और फिर आनन-फानन में यहाँ से भाग खड़ी हुई ।'

'अगर ऐसा ही हुआ है ।' राजेश ने टोका-'तो फिर बाथरूम में खून की छींटों की क्या वजह हो सकती है ?"

विजय कुमार ने उसे घूरा ।

'तुम्हारे पास इस बात का क्या सबूत है कि वो खून प्रतिमा दुग्गल के ही जिस्म से निकला है ?'

'और किसके जिस्म से निकला हो सकता है ? या तुम कहना चाहते हो कि उसके अलावा यहां कोई और भी मौजूद था ?'

'मैं कुछ नहीं कहना चाहता ।' विजय कुमार भड़क कर बोला-'तुम दोनों अब यहां से चले जाओ तो ज्यादा बेहतर होगा । मैं फिगर प्रिंटस वालों को बुलाकर इस फ्लैट के चप्पे-चप्पे की छानबीन कराऊंगा । बाथरूम में मौजूद खून का सैम्पल लेबोरेटरी भिजवा दूँगा ।'

'ऑल राइट, इन्स्पेक्टर ।' राजेश बोला-'मैं भी ऑफिस जाकर इस किस्से को प्रात:कालीन संस्करण में भिजवाना चाहता हूँ ।'

सुधीर और राजेश फ्लैट से बाहर आ गये ।

* * * * * *

दोनों ब्यूक में सवार हो गये । सुधीर 'एडवेंचरर' के ऑफिस की ओर कार ड्राइव करने लगा ।

'किस नतीजे पर पहुँचे, राजेश ?' सुधीर ने पूछा ।

'देवराज मेहता की हत्या तो सीधा ओपन एण्ड शट केस है ।' राजेश बोला- लेकिन प्रतिमा के गायब हो जाने वाली बात समझ में नहीं आ रही है । तनिक रुककर कहा-'क्या

ऐसा नहीं हो सकता कि आपको फोन करने के बाद वह खुद भी सुरेश को रोकने के लिये उसके पीछे दौड़ गई हो ?'

'बाथरूम में अपने खून की छीटें फेंककर ?'

'मैं इस खून वाली बात को खास एहमियत नहीं दे रहा हूँ ।'

'क्यों ?'

'इसलिये कि इसकी कई मामूली वजह हो सकती हैं । सुरेश द्वारा धक्का दिये जाने पर उसका सर पलंग के साथ जोर से टकरा गया हो, या उसे नकसीर आ गई हो, या फिर कुछ और करते वक्त उसका हाथ कट गया हो, वगैरा ।'

'चलो, मान लेते हैं ।' सुधीर बोला-'लेकिन अगर वह सुरेश के पीछे देवराज मेहता के यहां गई थी तो वहां पहुंची क्यों नहीं ?'

राजेश को इसका कोई जवाब नहीं सूझ सका ।

'अच्छा, एक बात बताओ ।' कुछ देर मौन रहकर सुधीर ने पूछा-'देवराज मेहता की माली हालत कैसी थी ?'

'बहुत अच्छी । कोठी है, कारें हैं, प्रिंटिंग और ऑफसैट प्रेस हैं और अखबार तो है ही ।'

'आई सी ।'

'आपने किसलिये पूछा ?'

'मैं बलराज मेहता की कहीं बातों के बारे में सोच रहा हूँ । उसने कहा था कि कल सुबह का अखबार देखने के बाद सैकड़ों भले लोग चेन की नींद सो सकेंगे ।'

'इससे क्या फर्क पड़ता है ? वह अपने भाई से नफरत करता था । ऐसा कुछ भी कह सकता था ।

'उसकी इस बात का यह मतलब भी तो निकलता है कि देवराज मेहता अपने अखबार के दम पर लोगों को ब्लैकमेल कर रहा था ।

'ब्लैकमेल ?' नहीं । हालांकि यह बात बिल्कुल सही है । अपने अखबार द्वारा समाज में प्रतिष्ठित कहे जाने वाले लोगों पर कीचड़ उछालना और विपक्षी दल के राजनीतिबाजों की कलई खोलना उसका आम पेशा था । और यह भी उतना ही सही है कि वह बड़े-बड़े लोगों को ब्लैकमेल करने की स्थिति में था भी । लेकिन वह ब्लकमेलर था । ऐसी कोई बात कभी सुनने में नहीं आई । अगर ऐसा होता तो उससे सम्बन्धित ढेरों अफवाहों में यह भी ज़रूर जुड़ी होनी चाहिये थी ।'

'हूं ।'

'लेकिन इसका प्रतिमा के गायब होने से क्या ताल्लुक है ?'

'पता नहीं ।' सुधीर विचारपूर्ण स्वर में बोला-'प्रतिमा के गायब होने और उसके फ्लैट की हालत ने सब कुछ गड़बड़ कर दिया । हो सकता है यह महज इत्तिफाक ही हो और इसका देवराज मेहता की हत्या से कतई कोई रिश्ता नहीं हो । लेकिन अगर वह जल्दी ही वापस नहीं लौटी और अपने गायब होने की कोई ठोस वजह नहीं बता सकी तो विजय कुमार को देवराज मेहता की हत्या के सीधे-सादे केस के बखिए उधेड़ने पड़ेंगे । मसलन, हो सकता है सुरेश देवराज मेहता को किसी जाती मामले के आधार पर ब्लैकमेल करने की कोशिश कर रहा था और वह ब्लैकमेलिंग के सामने झुकने को तैयार नहीं था । या हो सकता है जैसा कि नजर आता है यह केस 'सेक्सुअल जैलेसी' का नहीं था । और देवराज मेहता की हत्या करने का सुरेश का कोई ऐसा मोटिव रहा था जिसकी जानकारी प्रतिमा के अलावा किसी और को नहीं थी । खैर, ये सब महज ब्यौरियां हैं ।' उसने बेदिली से कहा-होने के लिए तो यह भी हो सकता है कि प्रतिमा अपनी किसी सहेली या रिश्तेदार के यहां चली गई हो ।'

'यह तो सुरेश दुग्गल से पूछकर विजय कुमार चैक करा लेगा ।'

'हां वह एक कर्तव्य-परायण परिश्रमी और ईमानदार पुलिस इन्स्पेक्टर हैं ।' सुधीर ने कहा । फिर पलभर मौन रहने के बाद बोला-'देवराज मेहता की हत्या के घटना स्थल वाले बन्द कमरे के बारे में मुझे कोई बात खटक रही है । कोई ऐसी बात है जो मेरे दिमाग के किसी कोने में घुमड़ तो रही है लेकिन मैं उसे पकड़ नहीं पा रहा हूँ । और प्रतिमा के एकाएक गायब होने तथा उसके बाथरूम की हालत ने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि यह मामला जैसा नजर आ रहा है हू-ब-हू वैसा नहीं है ।'

राजेश फौरन सतर्क हो गया ।

'जो बात आपको खटक रही है वो क्या हो सकती है ?'

'मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि देवराज मेहता की स्टडी में कोई चीज यथा-स्थान नहीं थी । या फिर कोई ऐसी चीज थी, जिसे कायदे में होना तो वहीं चाहिये था । लेकिन वहां थी नहीं ।'

'ऐसी क्या चीज हो सकती है ?'

'पता नहीं ।'

'एडवेंचरर' का ऑफिस आ चुका था ।

सुधीर ने कार रोक दी ।

राजेश नीचे उतरा । कार में हीटर ऑन था इसलिये उसे सर्दी महसूस नहीं हुई थी । लेकिन बाहर निकलते ही ठन्डी तेज हवा जिस्म को चीरती-सी महसूस हुई ।

'बर्थ डे पार्टी शानदार रही न ?' उसने जानबूझ कर सुधीर को छेड़ा ।

'हां, बेहद, और डिनर उससे भी ज्यादा शानदार ।'

राजेश को पहली बार याद आया कि इस झमेले की वजह से वे लोग रात का खाना भी नहीं खा सके थे ।

'आयम वैरी सॉरी ।' वह बोला ।

'डोन्ट माइन्ड । गो टू योअर ऑफिस ।'

राजेश शर्मिंदगी महसूस करता हुआ तेजी से अपनी ऑफिस की इमारत में दाखिल हो गया ।

सुधीर ने रिस्ट-वाच पर निगाह डाली ।

एक बजने में पांच मिनट बाकी थे ।

उसने अपने फ्लैट में वापस लौटने की बजाये पुलिस हैडक्वार्टर्स जाने का निश्चय किया । उसे यकीन था सपना इन्तजार कर-कर के थकहारकर वहीं सो गई होगी ।

* * * * * *

सुधीर ने पुलिस हैडक्वार्टर्स के प्रांगण में ब्यूक रोकी । नीचे उतरा और सीधा विजय कुमार के ऑफिस में जा पहुंचा ।

विजय कुमार अपने ऑफिस में मौजूद था । कुर्सी की पुश्त से सर टिकाये वह निढाल-सा बैठा था । उसकी आँखें बन्द थीं । चेहरे पर थकान और सोच-विचार के गहन भाव स्पष्ट परिलक्षित हो रहे थे ।

सुधीर को उम्मीद थी, वह उसे देखते ही भड़क जायेगा ।

लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ । विजय कुमार ने आहट पाकर आँखें खोलीं । सुधीर की ओर देखा ।

'आओ ।' वह थके से अन्दाज में बोला ।

सुधीर डेस्क के सम्मुख पड़ी कुसियों में से एक पर बैठ गया ।

'तुम अभी तक घर नहीं गये ?' विजय कुमार ने उबासी लेते हुये पूछा ।

'तुम भी तो नहीं गए ?' सुधीर ने कहा ।

'मैं तो ड्यूटी पर हूँ ।' विजय कुमार के चेहरे पर फीकी-सी मुस्कराहट उभरी-'और आज तुमने ऐसे झमेले में फंसा दिया है । लगता है सारी रात काली होगी ।' तनिक रुककर पूछा-'तुम्हारा अखबारची तो अपनी तनख्वाह हलाल करने ऑफिस में पहुँच चुका होगा ?'

'हां ! मुझे तुम दोनों से हमदर्दी है । चौबीस घंटे ड्यूटी पर रहते हो ।'

'मस्का मत लगाओ । जो कुछ जानने आए हो मैं वैसे भी बता दूँगा । सुनो-सुरेश दुग्गल के फ्लैट से मतलब की कोई बात हासिल नहीं हो सकी । बस इतना ही कहा जा सकता है कि प्रतिमा दुग्गल बेहद जल्दबाजी में कहीं जाना चाहती थी । उसने भारी हडबडाहट में सूटकेस पैक करना शुरू किया । लेकिन फिर किसी वजह से बीच में ही अपना इरादा बदल दिया । किसी ने उसे इमारत से निकलते नहीं देखा । सुरेश दुग्गल को भी शाम रिवाल्वर लेने आते वक्त या देवराज मेहता को शूट करने जाते वक्त किसी ने नहीं देखा ।

'हो सकता है प्रतिमा दुग्गल अपनी सहेली रिश्तेदार वगैराह के पास चली गई है ?'

'सुरेश दुग्गल का कहना है कि प्रतिमा की कोई सहेली या रिश्तेदार इस शहर में नहीं हैं । विजय कुमार बोला-'यह आदमी या तो कोई मंजा हुआ अभिनेता है या फिर अपनी बीवी से वाकई बेइन्तिहा मुहब्बत करता है । वह बेवकूफ सिर्फ अपनी बीबी के लिये फिक्रमंद है । अपने अन्जाम की रत्ती भर भी फिक्र उसे नहीं है ।'

'लाश की जांच की डाक्टरी रिपोर्ट क्या कहती है ?'

विजय कुमार ने अपने डेस्क पर रखे कागज़ात टटोले और डाक्टरी रिपोर्ट उठा ली ।

'कुछ खास नहीं ।' वह रिपोर्ट हिलाता हुआ बोला-'सिवाये इसके कि देवराज मेहता की मृत्यु दिल में गोली लगने से हुई थी । वह गोली लगते ही मर गया था । अड़तीस बोर की वो गोली उसकी पीठ से गुजर कर कुर्सी में जा धंसी थी । बैलास्टिक एक्सपर्ट का कहना है कि वो गोली सुरेश दुग्गल के रिवाल्वर से ही चलाई गई थी । मेरा मतलब है उसी रिवाल्वर से जो तुमने सुरेश दुग्गल से लिया था और जिसे बाद में मुझे सौंप दिया गया था । डाक्टर के मुताबिक मृत्यु करीब सवा आठ से सवा नौ बजे के बीच हुई थी ।'

'घटना-स्थल पर फिंगर प्रिंटस भी तो मिले होंगे ?'

'ऐसा कोई नहीं जिसे असाधारण कहा जा सके ।' विजय कुमार ने गहरी सांस ली-'प्रतिमा दुग्गल के गायब होने से पहले तक सारा केस एकदम सीधा और साफ फर्स्ट डिग्री मर्डर का था । लेकिन अब उसके गायब होने से पेचीदगी पैदा हो गई ।

एकाएक सुधीर ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला फिर बन्द कर लिया ।

'तुम कुछ कहने जा रहे थे । विजय कुमार ने टोका ।

'हाँ ।' सुधीर बोला- 'उन सब लोगों के बयान मैं एक बार फिर देखना चाहता हूँ ।'

लेकिन सारे बयान तुम्हारी मौजूदगी में ही तो लिये गए थे ?'

'फिर भी मैं देखना चाहता हूँ ।'

विजय कुमार ने सन्देहपूर्वक उसे घूरा ।

'तुम यही कहते-कहते रूक गए थे ।

'हाँ ।'

विजय कुमार के चेहरे पर अविश्वास के भाव थे ।

उसने डेस्क पर रखे टाइप किए कागजों की ओर संकेत कर दिया ।

'सब इसी में हैं । किसका बयान चाहिये ।'

'जयन्त नाथ यानि दिल्ली वाले वकील का ।'

'ऊपर से दूसरा है ।'

सुधीर आगे झुका । एक साथ नत्थी किये तीन कागज उठा लिये । पहले दोनों पेज सरसरी निगाह से देखे और तीसरे को गौर से पढ़ने लगा ।

विजय कुमार असमंसतापूर्वक उसे घूरने लगा । हालांकि वह सुधीर की सूझबूझ का कायल था । लेकिन वह समझ नहीं सका कि सुधीर इस बयान से कौन-सी बात हासिल करना चाहता था ।

सुधीर ने कागज वापस डेस्क पर रख दिये ।

विजय कुमार ने आशा-पूर्वक उसकी ओर देखा ।

'कोई ऐसी बात नजर आई । जो तुम्हारी राय में मेरी निगाह से चूक गई थी ?'

'नहीं जरा सुरेश दुग्गल का बयान भी दिखाओ ।'

'तुम आखिर देखना क्या चाहते हो ?' विजय कुमार ने भौंहे चढ़ाकर पूछा ।

'मुझे ऐसा महसूस हो रहा हैं कि कहीं कुछ गड़बड़ है ।'

विजय कुमार ने सुरेश दुग्गल के बयान के कागज़ात का पुलन्दा उठाया और अनिच्छापूर्वक उसकी ओर बढ़ा दिया ।

सुधीर ने गौर से एक-एक शब्द पढ़ा । फिर कागज़ात डेस्क पर रख दिये ।

'लगता है हम दोनों से ही कहीं कोई चूक हुई है ।' वह बोला-'देवराज मेहता की लाश कहां है ?

विजय कुमार चकराया ।

'मोर्ग में ।' वह बोला-'अभी नीना मेहता को बुलाकर लाश उसे सौंप देने वाला हूँ ।'

सुधीर चौंका और विजय कुमार को घूरने लगा ।

'पोस्टमार्टम नहीं कराओगे ?'

'नहीं !'

'लगता है नीना मेहता और उसकी दलील से प्रभावित हो गये हो !'

'बेकार की बातें मत करो ।' विजय कुमार भड़ककर बोला ।

'अच्छा ठीक है । लेकिन ताव क्यों खाते हो यार ।

'तुमने बात ही ऐसी कह दी थी । तुम्हारी राय में क्या मैं किसी खूबसूरत औरत से प्रभावित होकर अपने फर्ज को भूल सकता हूँ ?'

'नहीं ! हरगिज नहीं ! लेकिन पोस्टमार्टम क्यों नहीं करा रहे !'

'इसलिये कि उसकी जरुरत ही नहीं है । मृत्यु का कारण हमें मालूम है । देवराज मेहता सुरेश दुग्गल द्वारा बत्तीस बोर के रिवाल्वर से चलाई गई गोली से सवा नौ बजे के करीब मरा था । डाक्टरी रिपोर्ट ने भी इसी बात की पुष्टि की है । तुम तो इस कांड के खास गवाह हो । क्या तुम्हारी राय में ऐसा नहीं हुआ है ?'

'आई सी ।' सुधीर बोला-'नीना मेहता से न सही, उसकी दलील से तुम जरुर प्रभावित हुए हो ।'

'फिर वही बेकार की बात । मैं...।'

'नाराज मत होओ यार । मैं खुद भी मानता हूँ कि उसकी दलील दमदार थी । फिर भी मैं कहूँगा कि तुम्हें लाश का पोस्टमार्टम कराना ही चाहिये ।

'यह नहीं हो सकता ।' इस बार विजय कुमार के स्वर में विवशता थी ।

'क्यों !'

'इसलिये की पहली बात तो ऐसी कोई वजह मेरे सामने नहीं हैं । सारा केस आइने की तरह साफ है । दूसरे डी० आई० जी० भी पोस्टमार्टम न कराने से सहमत है ।'

सुधीर चौंका ।

'डी० आई० जी० । वह बीच में कैसे टपक पड़ा !'

'नीना मेहता ने उसे अप्रोच किया होगा । डी० आई० जी० ने फोन पर मुझसे इस केस का पूरा ब्यौरा पूछने के बाद कहा कि पोस्टमार्टम कराने की कोई जरुरत नहीं है ।'

'तुमने डी० आई० जी० को प्रतिमा दुग्गल के गुम होने और उसके बाथरूम में खूने की छींटों के बारे में बताया था!'

'हां । डी० आई० जी० का कहना है कि उसके गुम होने का ताल्लुक देवराज मेहता की हत्या से भले ही हो लेकिन पोस्टमार्टम कराने या न करने से नहीं हो सकता ।'

विजय, मेरी समझ में नहीं आता कि नीना मेहता को डी० आई० जी० को अप्रोच करने की जरूरत क्यों आ पड़ी। जबकि तुम पहले ही उसकी पोस्टमार्टम न कराने वाली बात पर सहमति प्रकट कर चुके थे ।

'मुमकिन है उसे शक रहा हो कि बाद में मैं अपना इरादा बदल न दूँ ।' विजय कुमार के लहजे में तल्खी थी...'इन पैसे वालों का मिजाज समझना आसान नहीं है । देवराज मेहता जीवित था, पति-पत्नी के बीच गहरी अनबन रही । नीना मेहता को रत्ती भर भी लगाव उससे नहीं रहा । लेकिन उसके मरने के बाद वह नहीं चाहती कि लाश की दुर्गति की जाये । जिन्दे आदमी की जरा फिक्र नहीं की पर लाश के लिये फिक्रमन्द है । क्योंकि पोस्टमार्टम न होने देकर वह अपने सर्कल में अपनी पहुँच, अपनी प्रतिष्ठा और अपनी दौलत की धाक जमाना चाहती है ।

'इसका मतलब, तुम फैसला कर चुके हो पोस्टमार्टम नहीं कराओगे !"

'हाँ । क्योंकि मेरे सामने ऐसा कराने की कोई ठोस तो क्या हल्की-सी भी वजह नहीं है ।' विजय कुमार के स्वर में विवशता थी-'और डी० आई० जी० का आदेश मेरी लाचारी है ।'

'डी आई० जी० के मौखिक आदेश को तुम अपने फर्ज से ज्यादा एहमियत दे रहे हो ।

'क्यों ! क्या मैं फर्ज आदायगी नहीं कर रहा !'

'फर्ज अदायगी भले ही हो, लेकिन ऐसा करना समझदारी नहीं है ।'

'पहेलियाँ मत बुझाओ । सीधी बात करो ।'

'मेरी बात मानोगे ?'

विजय कुमार हिचकिचाया ।

'हां । अगर मामने के काबिल हुई ।'

'नाकाबिल बिल्कुल नहीं है । देवराज मेहता की लाश का पोस्टमार्टम कराओ ।'

'और डी० आई० जी० के आदेश की अवहेलना करके उसका कोप भाजन बन जाऊँ ? और अपने पूरे विभाग में मखौल की चीज बनकर रह जाऊ !'

'अफसर-शाही से डरते हो ?'

'हरगिज नहीं । यह तुम भी अच्छी तरह जानते हो ।

'फिर ?'

'मैं उपहास का पात्र बनना नहीं चाहता ।'

'यह भी तो हो सकता है कि तुम्हारी काबिलियत और सूझ-बूझ का झंडा और भी ज्यादा मजबूती के साथ गड़ जाये ।'

'देवराज मेहता की लाश का पोस्टमार्टम करा कर ?'

'हां ।'

'लेकिन इसके लिये कोई ठोस वजह भी तो हो ।'

'अगर मैं वजह पेश कर दू तो डी० आई० जी० का कोपभाजन बनने के लिये तैयार हो ?'

'डी० आई० जी० की इस केस में जाती दिलचस्पी है । उसकी बातों से लगता था कि उस पर भी कहीं ऊपर से दबाव डाला जा रहा था । एकाएक विजय कुमार के स्वर में दृढ़ता आ गई–'अगर तुम वाकई कोई ऐसी वजह पेश कर सकते हो । जिससे साबित हो कि पोस्टमार्टम कराना जरूरी है तो पोस्टमार्टम ज़रूर कराया जायेगा । फिर चाहे डी० आई० जी० तो क्या खुद होम मिनिस्टर ही क्यों न मना करें ।'

सुधीर ने प्रशंसापूर्वक उसकी ओर देखा ।

'प्रामिस !'

'प्रामिस ! अब तुम वजह बयान करो ।'

'पहले यह बताओ । तुमने खुद भी लाश का मुआयना किया था ?

'कोई खास बात नोट की ?'

'नहीं । गोली ठीक देवराज मेहता के दिल में लगी थी और वह तत्काल मर गया लगता था । उसकी कमीज पर खून का एक छोटा-सा दाग था, जो सूखकर कड़ा हो गया था । कोट पर खून का कोई निशान नहीं था । ऐसा लगता है सुरेश दुग्गल के जाने के बाद उसने जल्दबाजी में अपना कोट पहना था । क्योंकि कोट का ऊपरी बटन अपने सही काज में न होकर नीचे वाले में बन्द किया हुआ था ।'

'गोली लगने के जख्म के अलावा और कहीं उसके शरीर पर कोई चोट का निशान ?'

'मामूली-सी खरोंच तक भी नहीं ।'

'ठीक है । अब तुम जरा वकील जयन्त नाथ का बयान पढ़ो । इसमें साफ लिखा है कि रामलाल को जोर से हांक लगाकर ऊंची आवाज़ मे व्हिस्की लाने के लिये कहकर वह अपने कमरे में चला गया और दरवाजा जोर से बन्द कर लिया ।

विजय कुमार ने जयन्त नाथ के बयान के उसी हिस्से को पढने के बाद सुधीर की ओर प्रश्नात्मक निगाहों से देखा ।

'इसका मतलब है वह ऊपर के गलियारे में आखरी सिरे पर अपने कमरे में बन्द बैठा व्हिस्की लाने का इन्तजार कर रहा था ।' सुधीर ने कहा-'फिर उसने सुरेश दरगल के नीचे हॉल में पहुंचने पर हुई हलचल सुनी, सीढ़ियों पर भाग-दौड़ और देवराज मेहता की स्टडी की ओर दौड़ते कदमों की आहट सुनी ।' तनिक रुककर उसने पूछा-'अब क्या यह जरूरी नहीं है कि यह सारी हलचल भाग-दौड की आवाजें अपनी स्टडी में बन्द बैठे देवराज

मेहता ने भी सुनी होंगी ? खास तौर से उस सूरत में जबकि सीढ़ियों के दाहने से उसकी स्टडी और जयन्त नाथ का कमरा बराबर फासले पर हैं ।'

'बिल्कुल जरूरी है । लेकिन हमारे सामने ऐसा भी तो कोई संकेत नहीं है कि उसने यह सब कुछ नहीं सुना ।'

'संकेत है, सुरेश दुग्गल ने साफ कहा है । जब उसने देवराज मेहता पर रिवाल्वर तानी तो देवराज मेहता अपनी कुर्सी की पुश्त से पीठ सटाये बांयी ओर तनिक झुका हैरान-सा बैठा एक टक उसे घूर रहा था । वह एक शब्द भी नहीं बोला था ।' कहकर सुधीर ने पूछा-'इस बात से किसी नतीजे पर पहुँच सकते हो या नहीं ?'

'सिर्फ यही कहा जा सकता है देवराज मेहता हौसलामन्द आदमी था । सुरेश दुग्गल के हाथ में रिवाल्वर तनी देखकर वह हैरान तो हुआ लेकिन डरा नहीं । उसे कतई उम्मीद नहीं रही कि सुरेश दुग्गल उसकी जान भी ले सकता था । तुम्हें याद है अपनी पहली मुलाकात में जब सुरेश दुग्गल ने उसे जान से मारने की धमकी दी थी तब भी वह हंसता ही रह गया था ।'

'अच्छी तरह याद है । लेकिन विजय, किसी निहत्थे आदमी की धमकी को सुनकर हंसकर टाल जाना एक बात है । और किसी रिवाल्वर ताने खड़े आदमी के सामने चुपचाप बुत बनकर बैठे रहना और अपने बचाव की खातिर हिलना-डुलना तो दर-किनार खामोशी से गोली खाकर मर जाना सरासर दूसरी बात है ।' सुधीर ने तनिक रुककर विजय कुमार पर हो रही प्रतिक्रिया नोट की । उसके चेहरे पर असमंजसतापूर्ण लेकिन दिलचस्पी के भाव पाकर बोला-'इस स्थिति को सुरेश दुग्गल के बयान के सन्दर्भ में सोचने की कोशिश करो । वह कोई आधा-पौंना घन्टा पहले ही रिवाल्वर लाकर उसे शूट करने की धमकी देकर बगीचे की तरफ पिछले दरवाज़े से निकला था । मैं मानता हूँ कि देवराज मेहता खालीपीली धमकियों से डरने वाला नहीं था । लेकिन आधापौना घन्टा बाद जब वह नीचे हॉल में हुई हलचल सुनता है...वही जो जयन्त नाथ ने भी सुनी थी । यानि सुरेश दुग्गल का चिल्लाना, ट्रे का जोर से गिरना, सीढ़ियों से होकर अपनी स्टडी तक तेज कदमों की आहटें, वगैरा । उस सूरत में क्या उससे यही अपेक्षित था कि वह अपनी कुर्सी पर बैठा रहे ? खड़ा होने तक की कोशिश न करे ? और चुपचाप बैठा रहकर सुरेश दुग्गल के रिवाल्वर की गोली अपने दिल में उतरवा ले ?'

'नहीं । उसे कम से कम उठकर इस अचानक हंगामे की वजह जानने की कोशिश तो करनी ही चाहिए थी ।

'लेकिन वह कुर्सी से हिला तक नहीं । क्यों ?'

विजय कुमार के चेहरे पर गहन सोच-विचार के चिन्ह थे ।

'तुम्हारा मतलब है वह इस काबिल ही नहीं था कि उठ सके ?' उसने चकित स्वर में पूछा 'यानि या तो वह किसी किस्म के तगड़े नशे में था या फिर उस वक्त तक मर चुका था ?'

'तुम्हें याद है । देवराज मेहता के डेस्क पर एक खाली गिलास रखा था । जिसके पैंदें में किसी रंगीन तरल पदार्थ के चन्द कतरे भी मौजूद थे । जिसे तुमने सूंघा भी था । और बकौल सुरेश दुग्गल उसकी पहली मुलाकात के वक्त जो आधे से ज्यादा व्हिस्की से भरा हुआ था । तुमने उसका केमीकल एनेलिसिस नहीं कराया । मुमकिन है उसी में ऐसा कुछ मिला हुआ हो । जिसे पीने की वजह से देवराज मेहता हिलने-डुलने के काबिल भी नहीं रह गया था । अगर वाकई उसमें ऐसी कोई चीज नहीं थी तो क्या पोस्टमार्टम द्वारा उसका पता नहीं लग जायेगा ?'

विजय कुमार ने बेचैनी से पहलू बदला । वह गहरी दिमागी कशमकश में फंसा नजर आता था ।

'इसके अलावा और भी कोई वजह बता सकते हो ?' अन्त में उसने पूछा ।

'बता तो सकता हूँ । लेकिन मुझे डर है कि तुम भड़क जाओगे ।'

'मेरे भड़कने की फिक्र मत करो ।' विजय कुमार तीव्र स्वर में बोला-'वजह बताओ ।'

'इन्स्पेक्टर यादव के घटना स्थल पर पहुँचने से पहले मैंने भी देवराज मेहता की लाश को छुआ था ।' सुधीर ने कहा और अपराधी की नाई विजय कुमार की ओर देखा ।

विजय कुमार ने आग्नेय नेत्रों से उसे घूरा ।

'तुम कहना क्या चाहते हो !'

'हांलाकि उस वक्त मैंने ध्यान नहीं दिया । असलियत यह हैं कि इन्स्पेक्टर यादव के एकाएक आ धमकने ने मुझे ध्यान देने का मौका ही नहीं मिलने दिया ।'

'कुछ कहोगे भी ।' विजय कुमार बेसब्री से बोला-'या भूमिका ही बांधते रहोगे ।'

'देवराज मेहता की लाश में उतनी गर्मी नहीं थी जितनी कि एक मिनट पहले मरे आदमी की लाश में होनी चाहिए ।'

'यानि वो ठण्डी होनी शुरू हो चुकी थी ?'

'हां ।'

'इसका मतलब है देवराज मेहता की मृत्यु सुरेश दुग्गल के रिवाल्वर से लगी गोली द्वारा नहीं हुई ? वह पहले ही मर चुका था ?'

'यह मैं नहीं कह सकता । अलबत्ता ये दोनों वजह लाश के पोस्टमार्टम के लिए निहायत ठोस और माकूल ज़रूर हैं । क्या तुम ऐसा नहीं समझते ?'

विजय कुमार कुछ कहने ही वाला था कि डेस्क पर रखे फोन की घन्टी बजने लगी ।

उसने साथ बढ़ाकर रिसीवर उठा लिया ।

आप्रेटर ने सूचना दी कि कोई मिसेज मेहता बातें करना चाहती हैं ।

'ठीक है ।' विजय कुमार बोला- 'बातें कराओ ।' आप्रेटर ने सम्बन्ध स्थापित कर दिया ।

'इन्स्पेक्टर विजय कुमार स्पीकिंग ।' विजय कुमार बोला ।

'इन्स्पेक्टर !' नीना मेहता का स्वर सुनाई दिया । 'मैं नीना मेहता बोल रही हूँ । मकतूल देवराज मेहता की पत्नी । आपने मुझे फोन नहीं किया ?'

'आयम सॉरी, मिसेज मेहता । लेकिन लाश अभी आपको नहीं लौटाई जा सकती ।'

'क्यों ?'

'उसका पोस्टमार्टम किया जायेगा ।'

लेकिन आप तो इस बात पर सहमत थे कि पोस्टमार्टम नहीं किया जायेगा ?'

'जी हां, था । लेकिन अब कुछ ऐसी बातें सामने आई हैं कि ऐसा करना जरूरी हो गया है ।'

'मैं जान सकती हूँ ?'

'सॉरी ! मैं आपको बता नहीं सकूँगा ।'

लाइन पर गहरी सांस छोड़ने का स्वर उभरा ।

'क्या आपको इस बात पर शक है ? नीना मेहता ने पूछा- 'देवराज मेहता की मृत्यु सुरेश दुग्गल के रिवाल्वर से चली गोली से नहीं हुई ।'

'अगेन सॉरी मैडम ! मैं आपको इस बारे में कुछ नहीं बता सकता ।'

'थैंक्यू, इन्स्पेक्टर !'

सम्बन्ध विच्छेद हो गया ।

विजय कुमार ने रिसीवर यथा-स्थान रख दिया ।

'वन्डरफुल !' सुधीर प्रशंसापूर्वक बोला-'वेलडन दोस्त ।'

'अगर पोस्टमार्टम की रिपोर्ट में कुछ भी नहीं निकला...।' विजय कुमार आशंकित स्वर में बोला-'तो यह औरत जान को बवाल खड़ा कर देगी ।'

'वो सब बाद की बाते हैं । यह भी तो हो सकता है कि पोस्टमार्टम की रिपोर्ट सबके छक्के छुड़ा दे ।' सुधीर बोला-'तुम पोस्टमार्टम का इन्तज़ाम कराओ, और हो सके तो एक प्याली कॉफी पिलाकर मुझे बिदा करो । बाहर बड़ी सर्दी है ।'

विजय कुमार ने आर्डरली को बुलाकर कॉफी का इन्तज़ाम करने के लिए कह दिया । फिर उसने रिसीवर उठाया आप्रेटर द्वारा मार्ग से सम्बन्ध स्थापित कराया और पोस्टमार्टम सम्बन्धी हिदायतें दे दी ।

पांच मिनट बाद आर्डरली काफी दे गया । दोनो कॉफी चुसकने लगे ।

अचानक टेलीफोन की घण्टी बजी । विजय कुमार ने रिसीवर उठा लिया ।

दूसरी ओर से कुछ कहा गया । उसके चेहरे पर सतर्कता एवं तत्परता के भाव उत्पन्न हो गये ।

'यस, सर !' वह बड़े अदब के साथ बोला ।

दूसरी ओर से बोलने वाला इतनी जोर से बोल रहा था कि ईयरपीस में गूंजती आवाज़ सुधीर को भी सुनाई दे रही थी । विजय कुमार के चेहरे पर व्याप्त भावों, उसके लहजे और इस आबाज से जाहिर था कि फोनकर्ता क्राइम ब्रान्च का डी० आई० जी० था ।

कुछ देर बाद 'यस सर... राइट सर' कहने के बाद विजय कुमार ने पोस्टमार्टम कराने की वजह बताने की कोशिश करनी चाही । दूसरी ओर से लगातार कुछ कहा जा रहा था । एकाएक विजय कुमार का चेहरा कठोर हो गया ।

'आयम सॉरी सर !' वह दृढ़ स्वर में बोला-'बट आई एम दी इन्चार्ज ऑफ दिस केस एण्ड आई एम डिस्चाजिंग माई ड्यूटीज आनेस्टलीं । पोस्टमार्टम विल बी डन ।' और रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया ।

सुधीर बेहद तारीफी निगाहों से उसे देख रहा था । बुड्ढे का हाजमा क्यों खराब हो रहा हैं ?' उसने पूछा ।

'कहता है, होम मिनिस्टर का पी० ए० उस पर देवराज मेहता की लाश का पोस्टमार्टम न कराये जाने के लिए दबाव डाल रहा है ।' विजय कुमार भिन्नाये स्वर में बोला-'समझ में नहीं आता कि ये बड़े कहलाने वाले लोग कानून को खिलौना क्यों समझते है ?' होम मिनिस्टर का पी० ए० न हुआ खुदा हो गया ।'

'अरे भई, देवराज मेहता का अखबार सत्तारूढ़ दल के लोगों का गुणगान करता है । उन लोगों से उसके घनिष्ट सम्बन्ध थे । जाहिर है, नीना मेहता ने पोस्टमाटम न होने देने को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया है । इसलिए इतनी हाय-तौबा मचवा रही है ।'

'वह जितनी चाहे हाय-तौबा मचवा ले, अब कोई फायदा नहीं होगा । उसने अपनी काफी खत्म की और उट कर खड़ा हो गया-'मैं मोर्ग जा रहा हूँ । पोस्टमार्टम करने वाले डाक्टर पर भी दबाव डाला जा सकता है ।'

'मैं भी साथ चलूँ ?' सुधीर खड़ा होता हुआ बोला ।

'नहीं, यह मेरा विभागीय झमेला है और मैं अफसर शाही का डटकर मुकाबला करूंगा ।'

दोनों साथ-साथ बाहर निकले ।

'पोस्टमार्टम की रिपोर्ट की जानकारी मुझे भी दे दोगे न ?' सुधीर ने पूछा ।

'सिर्फ जानकारी नहीं, अगर कोई दमदार बात सामने आती है तो उसका तमाम क्रेडिट भी ।'

विजय कुमार पुलिस की जीप में सवार होकर चला गया ।

सुधीर अपनी ब्यूक में सवार हुआ और अपने फ्लैट की ओर ड्राइव करने लगा ।

* * * * * *

ठीक दो बजे सुधीर ने अपने फ्लैट की घण्टी बजाई । सपना ने लगभग फौरन दरवाजा खोला । सुधीर ने हैरानी से उसे घूरा । वह सुधीर का ढीला-ढाला कुर्ता-पाजामा पहने थी ।

'तुम अभी तक सोई नहीं ?' उसने भीतर दाखिल होते हुए पूछा ।

'नहीं ।' सपना ने कहा और दरवाजा पुनः बन्द कर दिया ।

सुधीर ने देखा । ड्राइंग रूम में रूम हीटर ऑन था । फलस्वरूप कमरा गर्म था । लम्बे सोफे पर मोटा ऊनी कम्बल फैला हुआ था । सोफे के बाजू के साथ कुशन सटे हुये थे । सैटर टेबल पर जेम्स हेडली चेइज का पेपरबेक नावल खुला उलटा रखा था ।

स्पष्ट था कि सपना सोफे पर कम्बल ओढे लेटी नावल पढ़ रही थी ।

सुधीर निढाल-सा एक सोफा-चेअर में पसर गया, सपना कम्बल लपेटकर सोफे पर बैठ गई ।

'घर नहीं जाओगी ?' सुधीर ने पूछा ।

'नहीं ।' सपना बोली-'मां को फोन कर चूकी हूँ ।'

'तो फिर सो जाना था । या राजेश की बर्थ डे पार्टी में रात भर जागना भी शामिल है ?'

सपना मुस्कराई ।

'यह तो उससे मिलने पर ही पूछा जायेगा । आपने कुछ खाया ?'

'नहीं । तुमने ?'

'केक काफी बचा था । मुझसे जितना खाया गया मैंने खा लिया । बाकी रखा है । लाए देती हूँ ।'

सपना उसी तरह कम्बल लपेटे उठी और किचन से केक उठा लाई ।

सुधीर भूखमरों की तरह केक पर टूट पड़ा ।

'किसी मि० जयन्त नाथ ने दो बार फोन किया था ।' सपना ने जानकारी दी ।

'किसलिए ?' सुधीर बोला फिर अचानक चौंकते हुए पूछा-'क्या कहा ? किसका फोन था ?'

'दिल्ली के किसी वकील जयन्त नाथ का ।'

'क्या कह रहा था ?'

'आपसे मिलने के लिये बेताब प्रतीत होता था ।'

'होने दो ।' सुधीर केक खत्म करता हुआ लापरवाही से बोला ।

'कॉफी लोगे ?'

'नो, थैंक्यू वैरी मच ।'

'आप अब तक रहे कहां ?'

तभी टेलीफोन की घण्टी बजने लगी ।

सपना ने रिसीवर उठा लिया ।

'हैलो !'

दूसरी ओर से कुछ कहा गया ।

'यस, सर ! जरा होल्ड कीजिए ।' सपना ने कहा और माउथपीस पर हाथ रखकर बोली-'वकील जयन्त नाथ हैं ?'

सुधीर बेमन से उठा । उससे रिसीवर ले लिया ।

'हैलो !' वह बोला ।

'मि० सुधीर रंजन !' जयन्त नाथ का स्वर सुनाई दिया- 'मैं आपसे कुछ बेहद जरूरी बातें करना चाहता

'फरमाइये ?'

'फोन पर नहीं पर्सनली । और अभी ।'

'इस वक्त रात के सवा दो बजने वाले हैं ?'

'मुझे भी पता है । मैं पन्द्रह मिनट में पहुंच रहा हूँ ।'

तत्पश्चात् सम्बन्ध विच्छेद कर दिया गया ।

सुधीर रिसीवर रखकर वापस सोफा चेअर में जा धंसा ।

'क्या चक्कर है ?' सपना ने उत्सुकतापूर्वक पूछा-'दिल्ली का कोई वकील आपमें एकाएक कैसे इतनी दिलचस्पी लेने लगा ?'

जवाब में सुधीर ने उसे देवराज मेहता की हत्या का किस्सा सुना डाला ।

सुधीर का कथन समाप्त होते ही डोरबैल की आवाज गुंजी ।

उसने उठकर दरवाजा खोला ।

बाहर जयन्त नाथ मौजूद था ।

'आइये, वकील साहब ।' सुधीर एक तरफ हटता हुआ बोला ।

जयन्त नाथ भीतर आ गया ।

सुधीर ने पुनः दरवाजा बन्द कर दिया ।

'बैठिये, वकील साहब !' सुधीर ने सोफा चेअर की ओर संकेत किया ।

जयन्त नाथ ने शंकित भाव से सपना की ओर देखा फिर सकुचाता-सा बैठ गया ।

सुधीर ने सपना से उसका परिचय कराया । उसकी बगल में दूसरी सोफा चेअर में बैठ गया ।

'फरमाइये ?'

'मैं आपसे एक बेहद गोपनीय मसले पर अकेले में कुछ महत्वपूर्ण बातें करना चाहता हूं ।'

'जरुर करिए । लेकिन अगर 'अकेले में' से आपका आशय मेरी सेक्रटरी को दूसरे कमरे मे भेज देना है तो मैं माफी चाहूंगा ।'

जयन्त नाथ ने बेचैनी से पहलू बदला ।

सुधीर समझ नहीं पा रहा था । ऐसा कौन-सा गोपनीय मसला था जिसने भयानक सर्दी की रात में धूर्त आंखों वाले इस वकील को बेवक्त यहां दौड़ने पर मजबूर कर दिया था ।

'मेरा ख्याल है ।' सुधीर उसे प्रोत्साहित करने की नीयत से बोला-'आपने किसी होटल में रात गुजारने और सुबह दिल्ली के लिये वापस प्लेन पकड़ने की बात कही थी ?'

'हां । मैं अकबर होटल में ठहरा हूँ ।' जयन्त नाथ बोला ।

अकबर होटल फाइव-स्टार होटल था ।

'इन्स्पेक्टर विजय कुमार को इस बात की सूचना दे दी है ?'

'पुलिस हैडक्वाटर्स में फोन द्वारा उसके लिए मैसेज छोड़ दिया था ।'

'गुड ! अब आप असली बात पर आ जाइये ।'

'देखिये, मि० सुधीर रंजन । देवराज मेहता के निवास स्थान पर आपका परिचय जानने और वहां तफ्तीश के लिये आये इन्स्पेक्टर का आपके साथ व्यवहार देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ था ।' जयन्त नाथ ने कहा । हालांकि सुधीर साफ नोट कर रहा था कि वह उन आदमियों में से नहीं था जो किसी से प्रभावित हो सके । जाहिर था कि उसकी गरज उसे यहां खींच लाई थी-'इसलिये मैंने आपको ही अपने काम के लिये मुनासिब समझा ।'

'इस जर्रानवाजी के लिये बहुत-बहुत शुक्रिया ।'

'मैं बतौर प्राइवेट डिटेक्टिव आपकी सेवाएं प्राप्त करना चाहता हूँ ।'

'किस सिलसिले में ?'

'बताता हूं ।' जयन्त नाथ बोला-'हालांकि मैं सुबह दस बजे दिल्ली जाने वाली लोकल फ्लाइट पर अपनी सीट रिजर्व करा चुका हूँ । मौजूदा हालात को देखते हुये मैं नहीं चाहता कि जिस काम से इस शहर में आया था, उसे अधूरा छोड़कर चला जाऊं ?' तनिक रुककर बोला-'आज रात देवराज मेहता की हत्या के बाद शुरू में मुझे यू महसूस हुआ कि मेरे आने का मकसद एक किस्म से पूरा हो चुका था । और खुशी से वापस लौटकर अपने क्लायंट को बता सकता था कि उसकी परेशानी खत्म हो चुकी थी ।

सुधीर खामोशी से बैठा सुनता रहा ।

कम्बल में लिपटी सपना असमंजसतापूर्वक बारी-बारी से उन दोनों की तरफ देख रही थी ।

'लेकिन बाद में गहराई से सोचने के बाद मैंने पाया कि मेरी समस्या और जटिल हो गई थी ।' जयन्त नाथ ने कहना जारी रखा-'जो मसला मैं देवराज मेहता से तय करने आया था, वो उसकी मौत के बाद वहीं का वहीं लटक गया । मौजूदा हालात में मेरी समस्या का ताल्लुक इन बातों से है । देवराज मेहता के प्राइवेट कागज़ात का मालिक कौन बनेगा ? उसके उन कागज़ातों का क्या किया जायेगा ? जाहिरा तौर पर उसकी विधवा ही मालिक बनती प्रतीत होती है । क्या वह उसके वीकली 'पेपर का प्रकाशन चालु रखेगी ? भविष्य में उसमें क्या छपना है इस बात की देख-भाल की जिम्मेदारी किसकी होगी ? वगैरा वगैरा ।'

'इन सारी बातों का आपसे या आपके क्लायन्ट से क्या ताल्लुक है ?'

जयन्त नाथ कुर्सी में और ज्यादा धंस गया । उसने पैनी निगाहों से सुधीर को घूरा । फिर क्षमा याचनापूर्वक सिगरेट निकालकर सुलगाई ।

'मेरे इस शहर में आने की वजह बेहूदा होते हुए भी अपने आप में बड़ी माकूल है ।' वह ढेर सारा धुंआ उगलता हुआ बोला-'मैं देवराज मेहता को एक लाख रुपया देकर बदले में उससे खास किस्म के कुछ ऐसे कागज़ात लेना चाहता था । जो अगर उसके वीकली पेपर में छप जाते तो मेरे क्लायन्ट का, जिसने मुझे यहां भेजा है, भारी अहित कर सकते थे । हालांकि ब्लैकमेलिंग जैसी बातों के मैं जाती तौर पर सख्त खिलाफ हूं । लेकिन इस मामले में दूसरा कोई चारा नहीं था । अपने क्लायन्ट की भलाई की खातिर मजबूरन मुझे यहां आना पड़ा । मैं रकम देकर गुड फेथ में कागज़ात हासिल करने वाला था । मगर अब देवराज मेहता मर चुका है । और मुझे यकीन है कि वो कागज़ात उसकी स्टडी में ही मौजूद होने चाहिएं । क्योंकि वह उनको मुझे सौंपने वाला था । वे कागज़ात निश्चित रूप से अब उसके पास पहुँच जायेंगे जो देवराज मेहता के प्राइवेट कागज़ात का मालिक बनेगा । समस्या यह है कि कल सुबह अगर मैं खाली हाथ वापस दिल्ली लौट जाता हूँ तो मेरे क्लायन्ट पर मेरे नाकामयाबी की वजह से क्या गुजरेगी, यह बात मैं भी अच्छी तरह जानता हूँ । उस बेचारे की पतली हालत और ज्यादा पतली हो जायेगी । मुमकिन है वह नाउम्मीद होकर खुदकुशी भी कर ले । इसीलिए मैं आपके पास आया हूँ ।'

'इसीलिए ?'

'हां ।'

'माफ करना, वकील साहब ! मैं आपका मतलब समझा नहीं ।'

'इससे पहले कि वे कागज़ात किसी और के हाथ लगें और उसे उनकी एहमियत का पता चले, मैं समझता हूँ, आप उन्हें फौरन हासिल कर सकते हैं ।

'यह आपने कैसे सोच लिया ? देवराज मेहता की स्टडी पर पुलिस का पहरा है ।'

'लेकिन सम्बन्धित पुलिस अधिकारी से आपके ताल्लुकात कितने गहरे हैं । यह मैं खुद देख चुका हूँ । आप कोई न कोई तिकड़म लगाकर आज की रात में स्टडी के भीतर आसानी से जा सकते हैं । मुझे यकीन है कि कागज़ात के लिये आपको ज्यादा छानबीन नहीं करनी पड़ेगी । क्योंकि तमाम इन्तज़ाम हो चुके थे और देवराज मेहता उन्हें आज ही रात मुझे सौंपने वाला था । इसलिए कागज़ात उसने अपने डेस्क की ही किसी दराज में रख छोड़े होंगे ।'

'आप चाहते है मैं चोरी करूं ?'

'मैं ऐसा नहीं मानता ।'

'आपके न मानने से भी यह चोरी ही रहेगी ।'

'आप जो चाहें नाम दे सकते हैं । लेकिन मैं इसे नेक काम समझता हूँ । क्योंकि ऐसा करके एक शरीफ आदमी की जिन्दगी तबाह होने से बचाई जा सकती है ।'

'जो शरीफ होते हैं उनकी जान को ऐसे बवाल नहीं होते खैर, मैं बहस में नहीं पड़ना चाहता । आप यह बताइये जिन कागज़ातों की एवज में आप एक लाख रुपया देने वाले थे वे आखिर हैं क्या ? मुझे उनका पता कैसे चलेगा ?'

'दरअसल वे एक ऐसे समझौते के ओरिजिनल डाक्यूमेंटस हैं जो मेरे क्लायन्ट को कानूनन बुरी तरह फंसा सकते हैं और उसकी मान-प्रतिष्ठा को जबरदस्त धक्का लगा सकते हैं । अपने क्लायंट का नाम मुझे बताना तो नहीं चाहिए, लेकिन आप पर भरोसा है इसलिये आपको बताये देता हूँ । उसका नाम शचीन्द्र सहाय रस्तौगी हैं । आपके लिये यह नाम अपरिचित हो सकता है: मगर यह शख्स दिल्ली की एक जानी-मानी हस्ती है । करीब डेढ साल तक वह कॉर्पोरेशन का मेयर भी रह चुका है । उसी दौरान कुछ ठेकेदारों से उसकी सांठ-गांठ रही थी । वे कागज़ात इस बात का ठोस सबूत हैं कि उसने ठेके देने के बदले में उन ठेकेदारों से नाजायज रकम हासिल की थीं । हालांकि उन कागज़ातों को फौरन नष्ट न करके अपने साथ बांधे फिरना शचीन्द्र सहाय रस्तौगी की बहुत बेवकूफी थी । लेकिन कुछ वजह ऐसी थीं कि उन्हें नष्ट न करके यहां साथ लाने पर मजबूर था । कई मामले ऐसे थे जो यहीं राजनगर में तय किये गये थे । जिस दिन उसने यहां से दिल्ली लौटना था, उससे पहली रात में वे कागजात उसके होटल के कमरे से चोरी चले गये थे । चोर एक ऐसी औरत थी, जो शचीन्द्र सहाय रस्तोगी के राजनगर के प्रवास में उसकी अन्तरंग बन गई थी । जबकि असलियत से वह देवराज मेहता के लिये ऐसे ही उल्टे-सीधे काम किया करती थी । देवराज मेहता ने एक लाख रुपये की बड़ी सफाई से माँग करते हुये उन कागजात की फोटो-स्टेट कापियां मेरे क्लायन्ट को भेजी थीं । साथ में इस बात की ढंकी-छुपी धमकी भी दी थी कि रकम न देने की सूरत में वे कागजात 'यूअर बॉयस' में छाप दिये जायेंगे । देवराज मेहता को रकम देने से पहले मैंने उन कागजातों का फोटो-स्टेट कापियों से मिलान कर लेना था ।'

'मुझे वे फोटो-स्टेट कापियां दिखाओ ।' सुधीर बोला 'अगर मैं देवराज मेहता की स्टडी में दाखिल होने में कामयाब हो जाता हूं तो मुझे पता होना चाहिए कि क्या चीज पुरानी है ?'

जयन्त नाथ हिचकिचाया ।

'देखिये, यह बहुत ही नाजुक मामला है । वह बोला-लेकिन मैं आपकी नेक नीयती पर भरोसा कर रहा हूँ कि आप इसे अपने तक ही रखेंगे ।

'दिखाओ तो सही, ताकि पता चले मामला कितना नाजुक है ।' सुधीर शुष्क स्वर में बोला-'अभी तक तो मैं सिर्फ इतना समझा हूँ कि आपका क्लायन्ट कोई ऐसा बदमाश आदमी है जो बेईमान ठेकेदारों से मिलकर जनता के पैसों से अपनी जेबें भरता रहा है ।

अगर आपने मुझसे काम कराना है तो फोटो-स्टेट कापियां दिखानी पड़ेंगी । वरना आप अपने बेहूदा ऑफर सहित यहां से तशरीफ ले जा सकते हैं ।'

जयन्त नाथ ने आश्चर्य एवं अविश्वासपूर्वक उसे घूरा ।

'मि० सुधीर रंजन ! दरअसल मैं..।

'जल्दी फैसला करो ।' सुधीर उसकी बात काटता हुआ बोला-'उसूलन मैं ब्लैकमेलर को एक ऐसा सांप समझता हूँ, जिसका कुचला जाना ही बेहतर है । लेकिन ब्लैकमेल किये जाने वाले कुछ लोग भी इस किस्म के होते हैं कि उनके साथ वैसा होना ही चाहिये । आपका शरीफ और इज्जतदार क्लायन्ट शचीन्द्र सहाय रस्तोगी मुझे इसी किस्म का आदमी मालूम पड़ता है । यकीन, मानो, अगर मैं किसी अखबार का मालिक होता तो वे कागजात मैंने निश्चित रूप से छाप देने थे । ताकि भेड़ की खाल पहने उस भेड़िये की असलियत जानकर जनता उससे सावधान हो जाती । मेरी निगाहों में मृत देवराज मेहता ने उसे ब्लैकमेल करने की कोशिश करके कोई गुनाह नहीं किया । लेकिन उन कागजात को न छापकर उसने बड़ा भारी गुनाह किया था ।' सुधीर ने सख्त स्वर में पूछा-'आप मुझे फोटो-स्टेट कापियां दे रहे हैं या नहीं ?'

'हालात को देखते हुए मेरे पास कोई और उपाय नहीं है ।' जयन्त नाथ ने भरी-सी आवाज़ में कहा और कोट की भीतरी जेब से एक लिफाफा निकालकर अनिच्छापूर्वक उसे थमा दिया ।

सुधीर ने लिफाफा खोलकर कागजात बाहर निकाले । सरसरी निगाह से उन्हें देखा, वापस लिफाफे में डाले और जयन्त नाथ को लौटा दिये ।

'इन कागजात के बदले में आपने देवराज मेहता को कितने रुपये देने थे ?' उसने पूछा ।

'एक लाख ।'

'यह रकम आप लाए थे ?'

'वो तो लानी ही थी ।'

'इस वक्त रकम कहां है ?'

जयन्त नाथ ने असमंजतापूर्वक उसकी ओर देखा ।

'होटल के मेरे कमरे में ।'

'आपका कमरा नम्बर कितना है ?'

'एक सो सैतालीस ।'

'ठीक है, मैं कोशिश करके देखता हूँ, मि० जयन्त नाथ ।'

'लेकिन आपकी फीस ?'

'वही जो आप देना चाहते थे ।'

'अगर आप कागजात लाकर मेरे हवाले कर दें तो दस हजार रुपये ठीक रहेंगे ?'

'जी नहीं ।' सुधीर सपाट स्वर में बोला- पूरा एक लाख ही ठीक रहेगा ।'

जयन्त नाथ ने जल्दी-जल्दी पलकें झपकाई ।

'एक लाख !' वह कलपता हुआ-सा बोला-'इस मामूली काम के लिये...नहीं...नहीं...यह बहुत ज्यादा...सरासर धांधली हैं...मैं नहीं...।'

'आपके पास जो एक लाख रुपया है उसे आप सिर्फ इन कागजात को खरीदने के लिये ही लाये थे । अगर रात सवा नौ बजे तक उनकी कीमत इतनी थी तो अभी तक भी इतनी ही है । दस हजार रुपये से बात नहीं बनेगी । अगर आपके शराफत नापने के पैमाने के मूताबिक आपका वो क्लायन्ट शरीफ, ईमानदार और इज्जतदार है तो मुझमें ये सारी बातें उससे कई गुणा ज्यादा हैं । अच्छी तरह समझ लो । मैं आपका यह गन्दा काम एक लाख रुपये में ही करूगा एक पैसा भी कम नहीं होगा । आपकी मर्जी है कराओ या मत कराओ ।'

जयन्त नाथ के चेहरे से लाचारी और बेबसी टपकने लगी ।

'ठीक है । मुझे यह रकम कागजात के बदले में ही देनी थी । मेरे क्लायन्ट के लिये तो यह अभी भी ब्लैकमेलिंग है ।' वह कड़वे स्वर में बोला-'लेकिन...।'

'यह ब्लैकमेलिंग नहीं, मेरे काम की उजरत है ।'

जयन्त नाथ उसे घूरकर रह गया ।

'वकील साहब !' सुधीर अपेक्षाकृत नम्र स्वर में बोला-'बुरा न मानो तो एक बात पूछूं ?'

'क्या ?'

'मेरी उस बात का ताल्लुक आपके उस मसले से जरा भी नहीं है । मैं मात्र उत्सुक्तावश पूछना चाहता हूँ ।'

'क्या ?'

'आपने देवराज मेहता से मुलाकात होने का कई घण्टे इन्तजार किया । और आप जिस कमरे में ठहरे थे वो स्टडी के बिल्कुल सामने था । आपका उसके साथ अप्वाइन्टमेंट भी था । तो क्या आपके दिल में एक बार भी यह नही आया कि स्टडी में दनदनाते हुए जा घुसें और पूंछे कि वह आखिर आपको बुला क्यों नहीं रहा था ?

'आया था । एक बार नहीं कई बार आया था ।

'तो फिर आप, स्टडी में गए ?'

'नहीं ।'

'क्यों ?'

'इसलिये कि मुझे अच्छी तरह खबरदार कर दिया गया था । स्टडी के दरवाज़े पर जलता लाल बल्ब इस बात का ऐलान था कि बगैर बुलाये उसके पास फटकने की भी कोशिश न की जाये । मैं क्योंकि देवराज मेहता को नाराज नहीं करना चाहता था । इसलिए मैंने ऐसा कुछ नहीं किया ।

'आई सी ।' सुधीर खड़ा हो गया-'ठीक है, अब आप अपने होटल लौट जाइये । अगर कुछ दाल-दलिया बना तो मैं एक घण्टे तक आपको फोन कर दूँगा ।'

जयन्त नाथ उठा और हाथ मिलाकर चला गया ।

सपना ने रोषपूर्वक सुधीर की ओर देखा ।

'तो आजकल आप पेशेवर चोर भी बन गये हैं ।' वह बोली ।

'हां ।'

'वजह ?'

'कोई खास नहीं ।'

'फिर भी ?'

'जिस काम का अन्जाम अच्छा हो वह बुरा नहीं होता ।'

'देवराज मेहता की स्टडी मैं चोरी करने का अन्जाम अच्छा होगा ?'

'हां ।'

'कैसे ?'

'उससे मिले एक लाख रुपये को डिफेंस फंड या बाढ पीड़ित सहायता कोष बगैराह में दान देंगे ।' सुधीर हंसता बोला-'तुमने शायद नोट नहीं किया । असल में वह मक्कार वकील दस हजार मुझ टिकाकर बाकी नब्बे हजार खुद डकार जाना चाहता था ।

'लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि आपको इस बखेड़े में पड़ने की जरूरत ही क्या थी ?'

'हरामखोरों के हलक में से जो भी निकल आए अच्छा है ।' सुधीर ने कहा और दरवाज़े की ओर बढ़ा 'तुम आराम से सोओ । मैं जाकर देखता हूँ वकील के एक लाख रुपये हलाल करने की दिशा में कुछ किया जा सकता है या नहीं ।'

सुधीर फ्लैट से बाहर निकला । अपने पीछे सपना द्वारा दरवाजा बन्द करने की आहट सुनी । सीढ़ियां तय करके नीचे पहुँचा और ब्यूक में सवार हो गया । ब्यूक तेजी से बीच रोड की तरफ फिसलने लगी ।

देवराज मेहता के निवास स्थान पर कार रोकते समय सुधीर ने देखा । काली एम्बेसेडर, नीली फिएट और सुरेश दुग्गल के स्कूटर के अलावा एक पुरानी कत्थई एम्बेसेडर भी वहां मौजद थी ।

सुधीर ब्यूक से उतरा ।

पोर्टिको पार करके उसने डोरबैल का बटन दबा दिया ।

चन्द क्षणोंपरान्त प्रवेश द्वार खुला ।

सुधीर ने देखा दरवाजा खोलने वाला एक पच्चीसछब्बीस वर्षीय युवक था । कद-बूत और रूप-रंग से कोई फिल्म-स्टार-सा प्रतीत होता था । वह दरवाज़े के बीचोंबीच अड़ा खड़ा था ।

'कहिये ?' युवक बोला ।

सुधीर ने एक बार फिर उसे सर से पांव तक घूरा ।

'अगर मेरा अन्दाजा गलत नहीं है ।' वह बोला 'तो आप मि० जगमोहन हैं ?' मृत देवराज मेहता के सेक्रेटरी !'

'जी हां ।' युवक जो कि वास्तव में जगमोहन ही था, चौका, 'आपकी तारीफ ?'

'मेरा नाम सुधीर रंजन है । पेशे में प्राइवेट डिटेक्टिव है । देवराज मेहता की हत्या के वक्त भी संयोगवश मे यही मौजूद था ।'

'अब आप किसलिये तशरीफ लाए हैं ?'

'कुछ काम बाकी रह गया था । उसी को निपटाने ।'

'जहां तक मैं समझता हूँ । पुलिस की तफ्तीश खत्म हो चुकी है ।'

'लेकिन मेरी तफ्तीश अभी खत्म नहीं हुई है ।'

'आपकी तफ्तीश ?'

सुधीर ने उसके चेहरे पर निगाहें जमा दीं ।

'हां ।' उसने पूछा-'क्या इरादा है ?' हटते हो या मैं हटाऊ ?'

जगमोहन के चेहरे पर नाराजगी के भाव प्रगट हुए फिर वह अनिच्छापूर्वक एक तरफ हट गया ।

सुधीर भीतर हॉल में दाखिल हुआ ।

बलराज मेहता और नीना मेहता सोफे पर बैठे थे । उनके सामने व्हिस्की के भरे गिलास रखे थे । दोनों के चेहरे और आंखों से जाहिर था कि अच्छी-खासी पी हुई थी ।

बलराज मेहता थका और सोच-विचार में उलझा-सा प्रतीत होता था ।

नीना मेहता परेशान और गहरी कशमकश में फंसी नजर आती थी ।

दोनों ने प्रश्नात्मक दृष्टि से सुधीर की ओर देखा ।

'कहिये ?' बलराज मेहता ने पूछा-'दोबारा बेवक्त कैसे तकलीफ की, मि० सुधीर रंजन ?'

'ओह, तो आप हैं ।' सुधीर के कुछ कहने से पहले नीना बोल पड़ी-'मैं बताती हूँ । यह जनाब इनाम लेने आए हैं क्योंकि इनके एक मिनट देर से आने की वजह से मेरा पति मारा गया ।

'देखिये मिसेज मेहता ।' सुधीर ने प्रतिवाद करना चाहा-'आप गलत...।'

'हो सकता है ।' नीना मेहता कड़वे स्वर में बोली-'तो फिर आप यह देखने आए होंगे कि आपके जिद्दी पुलिस इन्स्पेक्टर दोस्त की बेवकूफाना जिद की वजह से मेरे पति की लाश की जो दुर्गति हो रही है, उसकी मुझ पर क्या प्रतिक्रिया हुई है ?'

'ऐसी बात भी नहीं है ।' सुधीर बोला-'दरअसल मैं आप लोगों से नहीं बल्कि मि० जगमोहन से मिलने आया हूँ ।'

जगमोहन प्रवेश द्वार बन्द करके हाल में आ चुका था ।

'मुझसे ?' वह बोला-'लेकिन मैं इन्स्पेक्टर विजय कुमार से पुलिस हैडक्वाटर्स में मिलकर कुछ ही देर पहल लौटा हूँ ।'

'कोई बात नहीं । मुझसे बातें करने में आपका ही फायदा है ।'

'मि० सुधीर रंजन !' नीना मेहता ने टोका 'आम लोगों की तरह आप भी मेरे पति से नफरत करते थे ?'

'मैं तो आपके पति को जानता तक नहीं था, मैडम ।' सुधीर ने कहा फिर जगमोहन से बोला-'आइये, मैं आपका ज्यादा वक्त नहीं लूंगा ।' और उसके जवाब का इन्तजार किये बगैर उस कमरे की तरफ बढ़ा । जो जगमोहन का आफिस था और जहां बैठकर विजय कुमार ने बयान लिये थे ।

हिचकिचाता-सा जगमोहन भी उसके पीछे चल दिया ।

दोनों कमरे में प्रवेश कर गये ।

'मेरा ख्याल है ।' सुधीर दरवाजा बन्द करने के बाद बोला-'देवर-भाभी अकेले रहकर मातम मनाना चाहते हैं । इसलिये मैंने उनके पास ठहरना मुनासिब नहीं समझा ।'

'मुझे याद नहीं पड़ता कि देवराज मेहता ने कभी अपने भाई को जरा भी लिफ्ट दी थी ।' जगमोहन ने लापरवाही से कहा-'इसकी वजह शायद नीना और बलराज को लेकर फैली अफवाहें थीं । खैर, कुछ भी सही । सुरेश दुग्गल ने देवराज मेहता की हत्या करके इन

दोनों पर परोक्ष रूप से भारी एहसान किया है । इनके लिये अब कोई रुकावट बाकी नहीं रह गई है ।'

'बलराज मेहता आमतौर से यहां आता रहता है ?'

'नहीं ।'

'इसके आज यहां आने की कोई खास वजह थी ?'

'पता नहीं । बलराज मेहता का कहना था कि किसी निजी मामले पर अपने भाई से विचार-विमर्श करने आया था ।'

'अच्छा, यह बताओ ।' सुधीर ने बेतकल्लुफी से पूछा -'देवराज मेहता की मौत के बाद अब यहां तुम्हारी क्या स्थिति है ?'

'मेरी नौकरी खत्म ।' जगमोहन लापरवाही से बोला –'हालांकि देवराज मेहता निहायत घटिया आदमी था । लेकिन तनख्वाह मोटी और काम की भरपूर सहूलियते देता था ।'

'उसके अखबार का क्या होगा ?'

'तेजी से सरकुलेशन घटेगी फिर जल्दी ही बन्द करने की नौबत आ जाएगी ।'

'क्यों ?'

'इसलिये कि अखबार की कामयाबी की वजह उसका नाम, रसूख और असर थे । उसके मरते ही ये सब खत्म हो गये । अब न तो बड़े-बड़े विज्ञापन मिलेंगे और न ही उसकी जगह कोई आदमी इतनी दिलेरी से खुल्लम-खुल्ला दूसरों की निजी जिन्दगी का कच्चा चिट्टा खोल सकता है ।'

'मेरा मतलब है उसके उन कागजातों का वारिस कौन बनेगा ? जिनमें कथित बड़े लोगों की जिन्दगी के कच्चे चिट्ठे मौजूद हैं और जो आज तक छपे नहीं है ।'

जगमोहन समझता प्रतीत नहीं होता था कि सुधीर का वास्तविक आशय क्या था ।

'वे सब उसकी निजी सम्पत्ति थे । वह लापरवाही से बोला, और मेरी जानकारी के मुताबिक उनकी वारिस अब नीना मेहता है, और वह उन सबको आंख भींचकर आग लगा देगी ।'

'अच्छा !'

'हां ।' क्योंकि उसे देवराज मेहता के इन बखेड़ों से बेहद नफरत थी । अखबार से की गई कमाई तो उसे पसन्द थी लेकिन अखबार की गन्दी पालिसी के खिलाफ थी ।'

सुधीर ने दीवारों के साथ लगी फाइलिग केबनिटों पर निगाहें डाली ।

'देवराज मेहता अपने ये कागजात यहीं रखता था ?'

'नहीं । जो कागजात उसकी नजर में विस्फोटक होते थे और जिन पर वह मेरी निगाहें भी नहीं पड़ने देना चाहता था । उन्हें ऊपर अपनी स्टडी में अपने डेस्क की दराजों में ही रखता था । अचानक जगमोहन के स्वर में कड़वाहट घुल गई–'उसने एक रोज मुझसे साफ कहा था कि उसके पास ढेर-सारा ऐसा मसाला था जो बारूद की तरह खतरनाक है । जिसे वह इसलिए नहीं छाप रहा क्योंकि लोग तबाह हो सकते थे । और मेरी नजरों से भी इसीलिये उसे दूर रखता था कि कहीं उसे देखकर मैं उन लोगों को ब्लैकमेल करना शुरू न कर दूँ । जहन्नुम में जाए । अब मर चुका है और उसकी मौत का मुझे जरा भी अफसोस नहीं है ।'

'तुम्हें ही क्यों, उसकी मौत का किसी को भी जरा अफसोस नहीं है ।' कहकर सुधीर ने पूछा-'क्या यह सही है कि जब उसकी स्टडी के बाहर लाल बल्ब जलता रहता था तो किसी को अभी बगैर बुलाए अन्दर जाने की इजाजत नहीं थी ?

'हां ।' सिवाये उसकी बीबी के ।' जगमोहन ने हिकारत से कहा-'स्टडी में बन्द होने के बाद वह सिर्फ अपने उन खास मुलाकातियों से ही मिलता था जिनका उसके साथ अप्वाइन्टमेंट होता था । और जिन्हें मैंने पिछली सीढ़ियों वाले रास्ते से ऊपर पहुंचाना होता था ।'

'सुरेश दुग्गल भी वैसा ही खास मुलाकाती था ?'

'हाँ । उसका अप्वाइन्टमेंट साढ़े आठ बजे का था । और वह सही वक्त पर आ पहुँचा था ।'

'सुरेश दुग्गल के अलावा किसी और के साथ भी देवराज मेहता का अप्वाइन्टमेंट था ?'

'नहीं ।'

'तो फिर जयन्त नाथ क्यों आ टपका था ?'

'उसका कहना था कि देवराज मेहता से उसकी फोन पर बात-चीत हुई थी और उसी ने उसे यहां बुलाया था ।'

'थैंक्यू वैरी मच, मि० जगमोहन !' सुधीर बोला-'अब मुझे देवराज मेहता की स्टडी में एक बात चैक करनी है । और दरवाज़े की ओर बढ़ा ।'

'लेकिन वहां तो एक पुलिसमैन मौजूद है । और उसका कहना है कि उसे आदेश है किसी को भी स्टडी में न जाने दिया जाए ।' कहकर जगमोहन ने पूछा 'इसकी क्या वजह है ? क्या देवराज मेहता का मर्डर सुलझा नहीं ?'

'यह मात्र पुलिस रेगुलेशन है । जहां हत्या हुई होती है । उस स्थान को कुछ समय के लिये सील कर दिया जाता है ताकि वहां मौजूद क्लूज डिस्टर्ब न किये जा सकें ।'

सुधीर दरवाजा खोलकर बाहर निकला ।

हॉल से गुजरकर सीढ़ियों की तरफ जाते वक्त उसने नोट किया । बलराज मेहता और नीना मेहता सोफे पर एक-दूसरे से लगभग सटे बैठे थे । उन्होंने उसकी तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखा ।

सुधीर ऊपर गलियारे में पहुँचा ।

हैडकांस्टेबिल रामसिंह अपने ओवरकोट में सिकुड़ासा स्टडी के दरवाज़े के पास कुर्सी पर बैठा बीड़ी फूँक रहा था ।

वह इन्स्पेक्टर विजय कुमार के दोस्त के रूप में सुधीर से भी खासा परिचित था ।

'आप वापस आ गये ?' रामसिंह ने ताज्जुब से पूछा ।

'हां भई, इन्स्पेक्टर विजय कुमार से दोस्ती है तो निभानी भी पड़ती है ।' सुधीर ने जवाब दिया ।

'जी !'

'दरअसल वह हैडक्वाटर्स में बेहद व्यस्त है । बेचारे को सांस लेने की भी फुरसत नहीं है। कहने लगा कि मैं उसकी खातिर स्टडी में एक बात चैक कर लू तो वह सारी सरदर्दी से बच जाएगा । मैं इन्कार नहीं कर सकता ।' तनिक रुककर सुधीर ने जल्दी-जल्दी जेबें थपथपाई फिर बड़बड़ाया-'सत्यानाश ! वह चाबी देनी भूल गया और मुझे मांगनी याद नहीं रही । उसने अपनी जेब से चाबियों का गुच्छा निकाला- 'खैर, कोई बात नहीं । इन्हें ट्राई करता हूँ । अगर ताला खुल गया तो ठीक है । वरना वापस हैडक्वाटर्स जाना पड़ेगा । और स्टडी के दरवाज़े की ओर बढ़ा ।

रामसिंह अचकचाकर कुर्सी से खड़ा हो गया ।

'लेकिन सुधीर बाबू, मुझे आदेश है कि किसी को भी स्टडी में न घुसने दिया जाए ।'

सुधीर दरवाज़े के एकदम पास पहुँचकर उसकी तरफ पलटा ।

'क्या विजय ने तुमसे यह भी कहा कि मुझे भी अन्दर न जाने दो ?' उसने मुस्कराते हुए पूछा ।

'यह तो खासतौर पर नहीं कहा । लेकिन...।'

'बहस में मत पड़ो, रामसिंह । मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे ऊपर कोई बात आए । इसलिये नीचे जाओ और अपने इन्सपेक्टर को फोन करके अपनी तसल्ली कर लो ।'

रामसिंह हिचकिचाया । व्यस्त विजय कुमार को डिस्टर्ब करना उसकी निगाहों में समझदारी नहीं थी । उसकी जानकारी के मुताबिक सुधीर पुलिस के साथ पूरापूरा सहयोग करने वाला आदमी था ।

'ठीक है ।' वह बोला-'आप चैक कर लीजिए ।'

रामसिह पुनः कुर्सी पर बैठ गया । उसने नई बीड़ी जलाई और उत्सुक्तावश स्टडी की तरफ मुंह घुमा लिया ।

सुधीर एक-एक करके चाबियां की होल में फंसाने की कोशिश करने लगा ।

छठी दफा में कोशिश कामयाब हुई । ताला खुल गया ।

वह भीतर दाखिल हुआ । स्टडी में पूर्ववत् लाइटें ऑन थीं ।

सुधीर ने चारों तरफ खोजपूर्ण निगाहें घुमाई । सब कुछ यथावत् था । इकलौती तबदीली यही नजर आई कि देवराज मेहता की लाश हटाई जा चुकी थी ।

वह तेजी से डेस्क के पास पहुंचा ।

अपनी ओर ताक़तें रामसिंह की ओर देखकर नीचे झुका । ड्राअर खोलकर वहां मौजूद फाइलों, मोटे लिफाफे और एक जगह नत्थी कागजातों को सरसरी मगर सतर्क निगाहों से देखा ।

एक-एक करके सारे ड्राअर्स छान मारे लेकिन शचीन्द्र सहाय रस्तोगी सम्बन्धित एक भी कागज उसके हाथ नहीं लगा । अलबत्ता इस छानबीन में और बहुत-सा ऐसा मसाला नजर आया जिसे वाकई बारूद की संज्ञा दी जा सकती थी ।

निराश सुधीर अन्तिम ड्राअर बन्द करने ही वाला था । अचानक किसी अज्ञात प्रेरणावश उसकी नजरें स्टडी के दरवाज़े की ओर उठ गई ।

अगले ही क्षण उसके जिस्म को मानो लकवा मार गया ।

दरवाज़े में खड़ा इन्स्पेक्टर विजय कुमार कहर भरी निगाहों से उसी को घूर रहा था ।

* * * * * *

सुधीर धीरे-धीरे सीधा खड़ा हुआ ।

उसका दिमाग इस स्थिति से निबटने का तरीका सोचने की दिशा में सक्रिय हो चुका था ।

'आयम सॉरी, विजय ।' वह बोला-'लेकिन वो चीज मुझे नहीं मिली ।'

'कौन-सी चीज ?' विजय कुमार के स्वर में कोडे जैसी फटकार थी । अचानक सुधीर के दिमाग में बिजली-सी कौंधी । जो आरम्भ से ही उसे खटक रही थी । वो अनायास ही अपने आप सूझ गई ।

'पेपर कटर ।' वह उत्साहित स्वर में बोला ।'

'क्या ?'

'पेपर कटर । या पेपर नाइफ या और कोई चीज जिसे देवराज मेहता डाक के लिफाफे काटकर खोलने के लिये इस्तेमाल किया करता था ।' सुधीर ने डेस्क पर मौजूद काटकर खोले गये खाली लिफाफों की ओर इशारा किया-'देखो न तमाम लिफाफे कितनी सफाई से काटे गए हैं ।

विजय कुमार के चेहरे पर असमंजसता, प्रसन्नता और उत्सुकता के मिले-जुले भाव उत्पन्न हो गये ।

खुद सुधीर भी कम हैरान नहीं था । उसकी झूठी सफाई ने विजय कुमार का सारा क्रोध काफूर कर दिया था ।

'विजय कुमार उसके पास आ गया ।'

'तुम्हें पूरा यकीन है पेपर कटर या नाइफ वो जो कुछ भी था इस वक्त नहीं है ?'

'हां, बशर्ते कि देवराज मेहता ने ऐसी चीजें छुपाकर रखने के लिए कोई खास जगह नहीं बना रखी थी । और जो मेरी निगाहों से बच नहीं गई हैं ।'

विजय कुमार ने सहमति-सूचक सर हिला दिया ।

'रामसिंह ।' वह बोला-नीचे मृतक का सेक्रेटरी जगमोहन है । उसे बुलाकर लाओ ।'

'तुम्हें भी मजेदार बातें सूझती हैं ।' विजय कुमार भारी स्वर में बोला-'किसी गुमशुदा पेपर नाइफ का भला सुरेश दुग्गल द्वारा देवराज मेहता को शूट किया जाने से क्या ताल्लुक हो सकता है ?'

सुधीर एकदम चुप था ।

बाहर गलियारे में रामसिंह के पीछे जगमोहन चला आ रहा था ।

'आपने मुझे बुलाया था इन्स्पेक्टर ?' उसने भीतर दाखिल होकर पूछा ।'

'हां ।' हम जानना चाहते हैं कि देवराज मेहता अपनी डाक किस चीज से खोला करता था ?' विजय कुमार ने डेस्क पर रखे खाली लिफाफों के ढेर की ओर संकेत किया-ये सब काटकर खोले गये हैं ?'

'वह पेपर नांइफ इस्तेमाल किया करता था । वो डेस्क पर ही होगा । हमेशा यहीं रखा रहता था । जगमोहन ने कहा और डेस्क के एकदम पास आ खड़ा हुआ-'वो स्टील का एक चमचमाता लम्बा नोकीला चाकू था । दोनों सिरे ब्लेड की धार जितने पैने थे । देखने में जितना खूबसूरत था उतना ही मजबूत भी था । उसने सर हिलाया-'अजीब बात है । इस

वक्त नजर नहीं आ रहा है । जबकि हमेशा सामने ही पड़ा रहता था । मुमकिन है किसी ड्राअर में हो ?'

'नहीं । हमने तमाम ड्राअर्स देख लिये हैं ।' विजय कुमार बोला-'तुम्हें याद है आखरी दफा उसे कब यहां देखा था ?'

जगमोहन ने सोचने की कोशिश की ।

'सॉरी, मुझे याद नहीं आ रहा है । दरअसल वो रोजमर्रा के इस्तेमाल की एक ऐसी मामूली चीज जिसकी तरफ ध्यान जाता ही नहीं था । मैं सिर्फ इतना बता सकता हूँ कि वो हमेशा यहीं रखा होता था । लिफाफों की हालत से जाहिर है कि आज शाम भी उसने वही इस्तेमाल किया था ।'

'हां लगता तो यही है ।' विजय कुमार बोला-'ऑल राइट, तुम जा सकते हो । थोड़ी देर बाद मैं तुम सब लोगों से बातें करना चाहूँगा । इसलिये मेहरबानी करके सब यहीं रहें ।

जगमोहन के चेहरे पर ऐसे भाव उत्पन्न हुये मानो वह प्रतिवाद करना चाहता था । लेकिन प्रगट में कुछ नहीं बोला ।

वह खामोशी के साथ स्टडी से बाहर निकल गया ।

विजय कुमार विचारपूर्वक चहलकदमी करने लगा ।

अचानक वह सुधीर की ओर पलटा ।

'तुम यह क्यों नहीं पूछ रहे हो ?' उसने कड़वे स्वर में पूछा-'पोस्टमार्टम की रिपोर्ट क्या कहती है ?'

'पोस्टमार्टम की रिपोर्ट क्या कहती है ?' सुधीर ने आज्ञाकारी ढंग से पूछा ।

'देवराज मेहता दिल में गोली लगने से पहले ही मर चुका था । उसके दिल में एक ऐसा चाकू भोंका गया था । जो लम्बा, पतला, नोकीला और मजबूत था । और जिसके दोनों सिरे ब्लेड की धार जितने तेज थे ।

'यानि वो वही पेपर नाइफ भी हो सकता है ?' सुधीर ने दिलचस्पी से कहा ।

विजय कुमार गौर से उसे देख रहा था ।

'क्या बात है तुम्हें सुनकर हैरानी नहीं हुई ?' उसने संदेहपूर्वक पूछा-'इसका सीधा-सा मतलब है कि तुम्हें ऐसा कुछ होने की पूर्व जानकारी थी । देखो, सुधीर, अगर तुमने मुझसे कुछ छिपाने की कोशिश की तो..।'

'मैं कुछ नहीं छुपा रहा हूं ।' सुधीर बोला-'बात सिर्फ इतनी है, अचानक सारी तस्वीर बिल्कुल साफ हो गई । अब हम यह भी समझ सकते हैं । हमसे यह समझने की गलती क्यों हुई कि देवराज मेहता की मृत्यु सुरेश दुग्गल द्वारा चलाई गई रिवाल्वर की गोली

से हुई थी । किसी ऐसे विचित्र एवं आश्चर्यजनक संयोगवश, जो लाखों में मुश्किल से एकाध बार ही होता हैं और जिस पर आसानी से यकीन भी नहीं किया जा सकता । गोली दिल में ठीक उसी जगह जा घुसी जहां पहले ही देवराज मेहता को चाकू भोंका जा चुका था । सीधे दिल मे भोंके गए चाकू ने तत्काल उसकी जान ले ली । इसलिये खून बहुत थोड़ा निकला और कमीज पर ही फैलकर रह गया । 'ओह गॉड !' अचानक उसका स्वर उत्तेजित हो गया- 'इसका मतलब सुरेश दुग्गल ने हत्या नहीं की । उसने सिर्फ एक लाश पर गोली चलाई थी । असली हत्यारा कोई और था ?'

'हां, लेकिन गोली चलाते समय उसका इरादा भी हत्या करने का ही रहा था । विजय कुमार ने कहा । फिर तनिक रुककर बोला-पोस्टमार्टम की रिपोर्ट कुछ और भी कहती है । सुधीर ने प्रश्नात्मक दृष्टि से उसकी ओर देखा ।

'क्या ?'

'देवराज मेहता ने शराब की एक बूँद भी नहीं चखी ।'

इस बार सुधीर बुरी तरह चौंका ।

'तो फिर नीट व्हिस्की का आधे से ज्यादा भरा वो गिलास कौन पी गया ? जिसे नीना मेहता ने यहां पहुंचाया था । जो बकौल सुरेश दुग्गल उस वक्त भी आधे से ज्यादा भरा हुआ था । जब वह पहली बार यहां आया था । और जो इस वक्त भी डेस्क पर ट्रे में खाली रखा है ।'

'तुम्हारी जानकारी के लिये यह भी बताए देता हूँ । इस गिलास पर किसी की भी उंगलियों के निशान नहीं पाए गए थे ।'

'जबकि गिलास उठाकर खाली करने वाले की उंगलियों के निशान तो होने ही चाहिये थे ।'

'सिर्फ उसी के क्यों ?'

'इसलिये कि गिलास में व्हिस्की डालकर ट्रे में रखने से पहले रामलाल ने इसे अच्छी तरह पोंछा होगा । और इसे यहां तक लाने वाली नीना मेहता सिर्फ ट्रे पकड़ कर ही लाई होगी ।'

'तब तो सीधी-सी बात है गिलास खाली करने वाले ने जान-बूझकर अपने निशान रगड़कर साफ किये हैं ।'

सुधीर ने सहमति-सूचक सर हिला दिया । वह महसूस कर रहा था । पोस्टमार्टम ने सारा मामला ही उलट कर रख दिया था । रिपोर्ट वाकई छक्के छुड़ा देने वाली साबित हुई ।

'सवाल तो यह है, चाकू भोंकने वाला था कौन ?'

'नीचे मौजूद चारों में से कोई भी एक हो सकता है ।' सुधीर विचारपूर्वक बोला ।

'यह तुम कैसे कह सकते हो ?'

'सीधी-सी बात है, सुरेश दुग्गल जब धमकी देने के बाद रिवाल्वर लाने के लिये पिछली सीढ़ियों से भागा तो देवराज मेहता ज़िन्दा था । क्योंकि बाद में दरवाजा बन्द पाया गया था । जिसे खुद देवराज मेहता ने ही बन्द किया हो सकता था । तत्पश्चात कोठी में कोई और आया था ऐसा कोई सबूत नहीं मिलता । नीचे मौजूद सभी लोगों खासतौर से बलराज मेहता ने, जो कि पूरे वक्फे में हॉल में बैठा रहा था, इस बात को स्वीकार किया है । इसलिये चाकू भोंकने वाला इन्हीं चारों में से कोई एक है ।'

'लेकिन तुम्हारे पास इस बात का क्या सबूत है कि सुरेश दुग्गल के चले जाने के बाद देवराज मेहता ज़िन्दा था ? जाने से पहले सुरेश दुग्गल भी तो चाकू भोंक सकता था ? चाकू डेस्क पर पड़ा ही था । उसे उठाकर उसने एक सटीक वार ही तो करना था ।'

'और करीब चालीस मिनट बाद वह रिवाल्वर लेकर इसलिये वापस आया ताकि खुलेआम हत्या करने का स्वांग कर सके ?' सुधीर ने उमहासपूर्वक पूछा ।

'बेशक । उसने सोचा होगा कि इस तरह वह वास्तविक हत्या के समय की अपनी तगड़ी एलीबी (जुर्म के समय घटना स्थल से दूर रहना) गढ़ सकता था ।' विजय कुमार ने दृढ़तापूर्वक प्रतिवाद किया-'आखिर उसने इस बात की तो जरा भी उम्मीद नहीं की होगी कि गोली उसी जख्म में जा घुसेगी जो पहले चाकू भोंकने से बन चुका था । उसे यकीन रहा होगा कि चाकू के जख्म का फौरन पता चल जाएगा । उसने वाकई बेहद चालाकी से काम लिया है । इस तरह व्हिस्की का गिलास खाली किये जाने की मिस्ट्री भी हल हो जाती है । देवराज मेहता को चाकू भोंकने के बाद वह घबरा गया होगा । बाहर जाने के लायक मुनासिब हौसला जुटाने के लिए उसने रूमाल से पकड़कर गिलास उठाया होगा और खाली करके वापस रख दिया होगा ।

'तुम्हारी इस थ्यौरी में दम नहीं है, विजय ।'

'क्यों ?'

'यह मत भूलो कि पिछला दरवाजा अन्दर से बन्द पाया गया था । अगर तुम्हारी थ्यौरी को सही मान लिया जाए तो क्या दिल में चाकू उतरने के बाद देवराज मेहता की लाश ने उठकर दरवाज़े की सिटकनी लगाई थी । और फिर वह वापस अपनी कुर्सी पर आ बैठा था ?'

'दरवाजा तो कोई भी बन्द कर सकता था ।'

'कोई भी कौन ?'

'मान लो सुरेश दुग्गल के चले जाने के बाद उस वक्त कोठी में मौजूद लोगों में से कोई स्टडी में आया था । उसने देवराज मेहता को मरा पाया और दरवाजा बन्द करके चुपचाप वापस लौट गया ।'

'तुम भी कमाल करते हो ।'

'इसमें कमाल की क्या बात है ?'

'जनाब इन्स्पेक्टर साहब । अगर उस वक्त कोठी में मौजूद लोगों में से कोई स्टडी में आया भी था तो देवराज मेहता को मरा पड़ा पाकर और पिछला दरवाजा खुला देखकर उसने साफ समझ जाना था कि हत्यारा सुरेश दुग्गल था । जबकि दरवाजा लॉक करने का सीधा-सा मतलब है सुरेश दुग्गल को पूर्णतया सन्देह मुक्त करना और अपने समेत कोठी में तमाम लोगों को शक के दायरे में घसीट लाना । और मैं नहीं समझता कि इन लोगों में कोई भी इतनी बड़ी और खतरनाक बेवकूफी करेगा ।'

विजय कुमार ने खामोशी से सोचा ।

'ठीक कहते हो ।' वह निरुत्साहित स्वर में बोला 'इसका मतलब सुरेश दुग्गल हत्यारा नहीं है । असली हत्यारा इन पांचों में से ही है ।'

'पांचों ? पांचवा कौन है ?'

'दिल्ली वाला वकील । वारदात के वक्त वह भी यहीं मौजूद था । और उसे सन्देहमुक्त नहीं किया जा सकता । इन पांचों के बयानों से जाहिर है कि सुरेश दुग्गल के धमकी देकर जाने से रिवाल्वर सहित लौटने तक के बीच के वक्फे में इन सबको स्टडी में जाकर देवराज मेहता की हत्या करने का मौका हासिल था ।' विजय कुमार सोचपूर्ण ढंग से बोला-'वकील जयन्त नाथ ऊपर सामने वाले कमरे में दरवाजा बन्द किये अकेला बैठा था । नीना मेहता ने थोड़ी ही देर पहले मुझे बताया है कि स्टडी में व्हिस्की पहुँचाने के बाद वह बगल के अपने बैडरूम से अटैच्ड बाथरूम में नहाने चली गई थी । फिर वह तैयार होकर नीचे पहुँची और क्लब चली गई । उसी के साथ कोठी से बाहर निकलने से पहले जगमोहन भी थोड़ी देर के लिये कमरे में आया था । बलराज मेहता का कहना है कि फायर की आवाज़ सुनने से पहले तक वह पूरे वक्त हॉल में ही बैठा रहा था । लेकिन नीना मेहता और जगमोहन के चले जाने के बाद वह वहां अकेला रह गया था । और वह चुपचाप यहां तक आसानी से आ सकता था । यह ठीक है कि नौकर रामलाल ऊपर नहीं आया । लेकिन वह भी हत्यारे के साथ किसी रूप में हत्या की साजिश में शामिल तो हो ही सकता है ।'

'यहां आती बार तुमने नीचे हॉल में देवर भाभी को देखा था ?'

'देखा ही नहीं बातें भी की थीं । उन दोनों को देवराज मेहता की मौत का रत्ती भर भी अफसोस नहीं है ।'

'मुझे लगता है, देवराज मेहता इन्सान नहीं कोई सड़ियल कुत्ता था । हर कोई उससे नफरत करता था । उसकी मौत का किसी को भी अफसोस नहीं है ।'

'तुम्हें याद है ?' विजय कुमार बोला-'राजेश ने बताया था कि बलराज मेहता और नीना मेहता में अफेयर होने की अफवाह आम है ?'

'अच्छी तरह याद है ।' सुधीर सहमति देकर बोला 'वैसे अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो यह जानने की कोशिश ज़रूर करता कि बलराज मेहता महीनों बाद आज ही क्यों अपने भाई से बातचीत करने आया था ?'

'यही नहीं, मैं यह भी जानना चाहूंगा कि वह वकील क्यों दिल्ली से भागा-भागा यहां आया था ? देवराज मेहता से किस लिये मिलना चाहता था ?' विजय कुमार का स्वर कठोर था-'शुरू में मैंने यह जरूरी नहीं समझा । क्योंकि मामला सीधा और साफ था । लेकिन अब हालात बिल्कुल बदल गये हैं । तुम्हारे बताए पोस्टमार्टम ने खोपड़ी की चूलें हिलाकर रख दी हैं । पता नहीं कहां से यह सनक तुम पर सवार हो गई थी ।

'मुझे कोस रहे हो ?'

'नहीं शाबासी दे रहा हूँ ।' विजय कुमार खीजता-सा बोला ।

'तुम्हें तो खुश ही होना चाहिये । डी० आई० जी० समेत पूरे पुलिस विभाग पर तुम्हारी सूझ-बूझ का सिक्का जम जाएगा ।'

'सवाल सिक्का जमाने का नहीं हत्यारे को पकड़ने का है ।'

'तुम्हारी पकड़ का दायरा सिर्फ पांच सस्पैक्ट और पौने घण्टे के वक्त तक सीमित है । किसी मर्डर केस में इससे ज्यादा और किस आसानी की अपेक्षा करते हो । सुधीर मुस्कराया-'अच्छा मैं चलता हूँ ।'

'जाओ । लेकिन इस दफा कोई नया आइडिया लेकर मत लौट आना ।'

'अच्छा ।

सुधीर स्टडी से निकला ।

बाहर खड़े रामसिंह ने दांत पीसते हुए उसे घूरा ।'

लेकिन सुधीर मुस्कराता हुआ उसकी बगल से गुजर गया ।

नीचे हॉल में बलराज मेहता और नीना मेहता उसी तरह सोफे पर बैठे थे । सुधीर ने नोट किया । दोनों पर व्हिस्की का नशा हावी था । इसके बावजूद बलराज मेहता के चेहरे पर बेहद बेसब्री के भाव भी साफ पढ़ जा रहे थे । नीना मेहता क्षुब्ध नजर आ रही थी ।

सुधीर प्रवेश-द्वार की ओर बढ़ा ।

रास्ते में जगमोहन खड़ा था । चिन्तित और परेशानसा ।

'सेक्रेटरी साहब !' सुधीर अपने कोट की जेबों में हाथ घुसेड़ता हुआ बोला-'खड़े क्यों हो ? आराम से बैठो ?'

'मि० सुधीर रंजन, मैं जानना चाहता हूँ ।' जगमोहन बोला-'इन्स्पेक्टर की देवराज मेहता के पेपर नाइफ में क्या दिलचस्पी है ? उसकी मौत तो रिवाल्वर की गोली लगने से हुई थी न ? अगर पेपर नाइफ गायब भी है तो क्या फर्क पड़ता है ? उसके गायब होने की दर्जनों माकूल वजह हो सकती हैं ?'

'यह इन्स्पेक्टर है ही सनकी किस्म का ।' सुधीर ने जवाब दिया ।

'हम सबको यहीं रुके रहने का आदेश देना भी क्या इसकी सनक का ही नतीजा है ?'

'यकीनन । फिर भी मेरी सलाह है कि उसके इस आदेश का पालन करना ही तुम सबके लिये बेहतर होगा ।'

जगमोहन का परेशान चेहरा और परेशान नजर आने लगा ।

सुधीर प्रवेश-द्वार खोलकर बाहर निकला और अपनी ब्यूक की तरफ बढ़ गया ।

वह वापस अपने फ्लैट पर पहुंचा ।

उस वक्त सवा तीन बजे थे । सपना जाग रही थी ।

'क्या बात है ?' सुधीर सोफा चेअर में पसरता हुआ बोला-'आज सचमुच जागरण करने का इरादा है ।'

'ऐसा ही लगता है । सपना कम्बल लपेटकर बैठती हुई बोली-'आपकी एक लाख वाली आसामी का दो बार फोन आया था ।'

'जयन्त नाथ का ?'

'हां ।'

'उस बेचारे का काम ही नहीं हुआ । क्या कह रहा था ?'

'फौरन फोन करने के लिये कहा था । करोगे ?'

'हां ।'

सपना ने टेलीफोन उपकरण उठाकर सैंटर टेबल पर रख लिया और एक नम्बर डायल करने लगी ।

अकबर होटल से सम्पर्क स्थापित करने के बाद सपना ने आप्रेटर से कमरा नम्बर एक सौ सैंतालीस मांगा । आर रिसीवर सुधीर को थमा दिया ।

'मि० जयन्त नाथ !' सम्बन्ध स्थापित होने पर वह बोला-'सुधीर रंजन बोल रहा हूँ ।'

'ओह !' जयन्त नाथ का व्यग्र स्वर सुनाई दिया 'मेरा काम हुआ ?'

'नहीं । मैंने देवराज मेहता का सारा डेस्क छान मारा । वहां और तो बहुत सारी गन्दगी है । लेकिन तुम्हारे कागजात नहीं हैं ।'

'मैं जानता था कागजात वहां नहीं मिलेंगे ?'

'वो कैसे ?'

'तुमसे बातें करके होटल लौटने के थोड़ी देर बाद मुझे एक आदमी ने फोन किया था ।' जयन्त नाथ बोला-'उसका कहना था कि अपने वलायन्ट के जिन कागजात को खरीदने को मैं दिल्ली से यहां आया था । वे उसके कब्जे में हैं ।'

'आगे बोला ।'

'वह अस्सी हजार में कागजात मुझे बेचने के लिये तैयार है ।'

'इसका मतलब वह जानता है कि देवराज मेहता से उन्हें तुम एक लाख में खरीद रहे थे ?'

'हां उसका कहना है कि बाकी बीस हजार मैं अपने पास रख सकता हूँ । क्योंकि मैंने खामाखाह परेशानी उठाई है । साथ ही उसने यह भी वादा किया है कि किसी तीसरे को इस सौदे की जरा भी खबर नहीं देगा ।'

'वैरी गुड ! फटाफट खरीद लो । तुम्हें भी बीस हजार मुफ्त में हाथ आ जायेंगे । सुधीर ने पूछा-'मुझे किसलिए फोन किया था ?'

'क्योंकि मैं किसी गुमनाम आदमी पर यकीन नहीं कर सकता ।' जयन्त नाथ के स्वर में विवशता थी-'पहले उसने तीन बजे का समय मुलाकात के लिये तय किया था । थोड़ी ही देर पहले फोन पर कहा है कि साढे चार बजे मिलेगा । मुझे मजबूरन सहमत होना पड़ा । बात दरअसल यह है कि मैं हिंसा से बहुत डरता हूँ । जबकि मुलाकात का जो ढंग उसने बतलाया है, उससे जाहिर है कि कागजात दिये बगैर भी वह मुझसे जबरन रकम छीन सकता है ।'

'बिल्कुल, ऐसा हो जाना मामूली बात है । बाई दी वे मुलाकात का ढंग क्या बताया गया है ?'

'उसने कहा है मैं ठीक साढ़े चार बजे होटल से निकलूँ । पांच मिनट वहीं खड़ा रहकर इन्तजार करूँ ।' फिर टैक्सी पकडूँ और औसत रफ्तार से काली पहाडी की ओर चल दूँ । शहर से बाहर निकलते ही दांयी ओर एक पैट्रोल पम्प आयेगा । उससे करीब दो फर्लांग आगे बाँयी तरफ एक पतली सड़क आएगी । मैंने काली पहाडी जाने वाली उस सड़क पर नहीं मुड़ना है । ड्राइवर को वहीं रुकने के लिये कहकर करीब एक मिनट टैक्सी रोके रखनी है । फिर ड्राइवर से यह कहकर कि वहां उतरने का इरादा बदल दिया है । टैक्सी धीरे-धीरे

आगे बढवा देनी है । लगभग डेढ़ मील जाने के बाद बांयी तरफ ही एक और वैसी ही सड़क आएगी । वो भी काली पहाड़ी पर जाती है । इन दोनों सडकों के बीच में कहीं एक अन्य कार टैक्सी को रोकने का संकेत देगी । मैंने टैक्सी रुकवा लेनी है । दूसरी कार में वह आदमी कागजात सहित मुझे मिलेगा ।

सुधीर ने तमाम हिदायतें मन ही मन दोहराई ।

'बस ?' उसने पूछा । 'मेरी मदद की जरूरत है ?'

'आफकोर्स । लेकिन तुम मदद करोगे कैसे ?'

'रकम और कागजात के तबादले के वक्त तुम्हारे पास मौजूद रहकर ।'

'कैसे ? तुम वहां पहुँचोगे कैसे ?'

'यह सब मुझ पर छोड़ दो ।' अगर तुम शचीन्द्र सहाय रस्तोगी सम्बन्धित कागजात हासिल करना चाहते हो तो उस गुमनाम आदमी की हिदायतों पर पूरा-पूरा अमल करो ।' सुधीर ने कहा-'साथ ही मेरी हिदायतों पर भी ।'

'तुम्हारी हिदायतें ?'

'हां, सुनो । अपनी टैक्सी में बैठने के बाद बाहर झांककर मुझे देखने की कतई कोशिश मत करना । मैं तुम्हारा पीछा नहीं करूगा । तुम्हें अपने ड्राइवर को वही बातें समझानी हैं जो गुमनाम फोनकर्ता तुम्हें समझा चुका है । डरना बिल्कुल मत । तुम्हारी सुरक्षा का पूरा इन्तज़ाम रहेगा । और मैं ऐन वक्त पर हाजिर हो जाऊंगा ।'

'ठीक है, मुझे पूरी रकम साथ ले जानी चाहिये या सिर्फ उतनी ही ?'

'पूरी । दो लिफाफों में अलग-अलग । क्योंकि बीस हजार रुपये तुमने मेरी उजरत भी देनी है ।'

'मैं जानता था तुम वही कहोगे । लेकिन कोई बात नहीं । मेरे लिये इतना ही काफी है कि इस बखेड़े को निबटाकर सकुशल दिल्ली लौट जाऊं ।'

'इन्स्पेक्टर विजय कुमार तुमसे दोबारा मिल चुका है ?' अचानक सुधीर ने पूछा ।

'नहीं तो, क्यों ?'

'इसलिये कि अब हालात बदल चुके हैं । वह तुमसे और भी पूछताछ करना चाहता है । अगर तुम साढ़े चार बजे होटल से बाहर जाना चाहते हो तो फौरन अपने कमरे से गोल हो जाओ ।

'लेकिन मैं इस वक्त जाऊंगा कहां !'

'बताता हूँ । तुम्हारे होटल की कॉफी बार तमाम रात खुली रहती है । वहीं किसी केबिन में जा बैठो । अगर साढ़े चार बजे से पहले कोई भी तुम्हें बुलाने आये, उसकी तरफ

कतई ध्यान मत देना । और सुनो, बाद में अगर इन्स्पेक्टर विजय कुमार तुमसे मिलता है तो तुमने हरगिज भी उसे नहीं बताना है कि कमरे से बाहर रहने की सलाह मैंने तुम्हें दी थी ।'

सुधीर ने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया ।

वह सोचने की कोशिश करने लगा । शचीन्द्र सहाय रस्तोगी के कागजात किसके कब्जे में हो सकते थे ! और वे उस तक पहुँचे कैसे ?

* * * * * *

चार बजकर पच्चीस मिनट हुए थे ।

अकबर होटल की कॉफी बार के एक केबिन में बैठा वकील जयन्त नाथ मन ही मन उस मनहूस घड़ी को कोस रहा था जब उसने दिल्ली में अपने क्लायन्ट शचीन्द्र सहाय रस्तोगी से वादा किया था कि देवराज मेहता से उसके कागजात ला देगा ।

उसने अपनी रिस्टवाच पर निगाह डाली । चार बजकर अट्ठाइस मिनट हो गये थे ।

वह अनिच्छापूर्वक उठा । केबिन से निकलकर काउंटर पर पहुंचा ।

एक घण्टे के दौरान, अपनी व्याकुलता पर काबू पाने की नीयत से वह पांच बार कॉफी पी चुका था ।

उसने बिल चुकाया और शंकित मन से लॉबी में आ गया ।

जयन्त नाथ होटल से बाहर गया । उस वक्त उसकी घड़ी पूरे साढ़े चार बजा रही थी ।

वह मेन गेट से थोड़ा हटकर सड़क पर खड़ा हो गया ।

गुमनाम फोनकर्ता के मुताबिक पूरा पांच मिनट इंतज़ार करना था ।

ठीक पांच मिनट बाद एक खाली टैक्सी उसे आती दिखाई दी ।

उसने टैक्सी रुकवा ली । अपनी निगरानी किये जाने के विचार से बेचैनी महसूस करता वह पिछला दरवाजा खोलकर अन्दर जा बैठा ।

चमड़े की काली जरकिन, काली पैंट पहने और बड़ीसी काली पगड़ी पहने युवक सिख ड्राइवर ने पलटकर सवारी की ओर नहीं देखा ।

'कित्ये जाना है, बाउ जी ?' उसने ठेठ पंजाबी लहजे में पूछा ।

'काली पहाड़ी ।' जयन्त नाथ बोला-ज्यादा तेज मत चलना ।'

'चंगा जी ।'

सिख ड्राइवर खामोशी से टैक्सी ड्राइव करने लगा ।

जयन्त नाथ अब तक तीन बार पलटकर पीछे देख चुका था । उसे पीछा किए जाने का कोई लक्षण नजर नहीं आया ।

टैक्सी करीब चालीस मील की घण्टे की रफ्तार से दौड़ती रही ।

शहर से बाहर पहुँचते ही जयन्त नाथ सतर्क हो गया ।

दांयी तरफ पैट्रोल पम्प नजर आने लगा था ।

'आगे बांयी तरफ से एक सड़क काली पहाड़ी जाती है ।' जयन्त नाथ बोला- 'वहां जरा रोक लेना ।'

टैक्सी सुनसान सड़क पर भागती रही ।

करीब दो फर्लांग जाने के बाद ड्राइवर ने स्पीड कम की और ठीक उस जगह ले जाकर रोक दी । जहां से बांयी तरफ एक पतली सड़क जा रही थी ।

जयन्त नाथ ने पीछे निगाहें दौड़ाई । लेकिन सड़क पर कोई वाहन आता दिखाई नहीं दिया ।

'ड्राइवर ।' अन्दाजन एक मिनट बाद वह बोला 'अब धीमी रफ्तार से चलो ।'

वह धीमी स्पीड से टैक्सी ड्राइव करने लगा ।

हालांकि भोर होने के चिन्ह नजर आ रहे थे । लेकिन वातावरण में अभी काफी अन्धेरा था ।

जयन्त नाथ टकटकी लगाए पीछे देख रहा था ।

अचानक उसे एक कार की हैडलाइटों की रोशनी दिखाई दी । कार की स्पीड टैक्सी के मुकाबले थोड़ी ज्यादा थी ।

वो निश्चित रूप से ब्लैकमेलर की कार थी । जयन्त नाथ के जिस्म में भय की झुरझुरी-सी दौड़ गई । सुधीर रंजन कहां था ? उसके आगमन का कोई चिन्ह नजर नहीं आता था । जबकि सही वक्त पर हाजिर होने का वादा किया था ।

पिछली कार की रफ्तार तेज होती प्रतीत हुई । टैक्सी उसी तरह रेंग रही थी ।

नजदीक आने पर कार की स्पीड कम होने लगी । जयन्त नाथ ने देखा । उसमें ड्राइवर के अलावा कोई नहीं था । उसने ओवर कोट के कालर खड़े कर रखे थे और फैल्ट हैट माथे पर बहुत ज्यादा झुका रखा था । फलस्वरूप उसका चेहरा नजर नहीं आ रहा था ।

सुधीर रंजन का अभी भी दूर-दूर तक कहीं कोई पता नहीं था ।

टैक्सी के बराबर में पहुंचकर कार वाले ने दो बार हॉर्न बजाया । फिर वह तनिक आगे होकर कार के पृष्ठ भाग को टैक्सी के अगले हिस्से की साइड में टकराने की कोशिश करता प्रतीत हुआ ।

जयन्त नाथ आगे झुक गया ।

'डरो मत ड्राइवर ।' वह जल्दी से बोला- यह मेरा एक दोस्त है । बातें करना चाहता है । टैक्सी रोक दो ।

सिख ड्राइवर ने टैक्सी रोक दी ।

कार भी तुरन्त टैक्सी के एकदम आगे तिरछी होकर रुक गई । वो कत्थई रंग की पुरानी एम्बेसेडर कार थी । अगले ही क्षण ड्राइविंग सीट वाला दरवाजा खुला । फैल्ट हैट और ओवरकोट धारी ड्राइवर नीचे कूदा । लपक कर टैक्सी के पास आया और दांयी ओर का पिछला दरवाजा खोल दिया ।

'तुम जयन्त नाथ हो ?' अजीब से स्वर में पूछा गया ।

टैक्सी की डोम लाइट की धीमी रोशनी में जयन्त नाथ ने देखा । आगंतुक के होठों पर बड़ी-बड़ी मूछें थीं । लेकिन धूर्त वकील ने धोखा नहीं खाया । उसने साफ पहचाना । देवराज मेहता का सेक्रेटरी जगमोहन था । लेकिन जयन्त नाथ ने ऐसा जाहिर नहीं किया कि उसे पहचान गया था ।

'वही हूँ ।' वह बोला-'मेरे अलावा इस वक्त और किसने यहां धक्के खाने आना था ? कागजात लाये हो ?'

जगमोहन ने ओवर कोट की जेब से एक मोटा लिफाफा निकाला ।

'यह रहे । तुम माल लाए हो ?'

'लाया हूँ ।' जयन्त नाथ ने खुले दरवाज़े की ओर हाथ बढ़ाया-'लेकिन देने से पहले मैं कागजात चैक करूंगा ?'

जगमोहन ने लिफाफा वाला हाथ पीछे खींच लिया ।

'पहले नोटों के दर्शन कराओ ।' वह बोला-फिर तुम कागजात चैक करना मैं उन्हें चैक करूंगा ।'

तभी टैक्सी का अगला दरवाला खुला ।

चीते जैसे फूर्ती दिखाता हुआ सिख ड्राइवर बाहर निकला । वह ऊंचे कद का स्वस्थ युवक था । जयन्त नाथ को उसके दांये हाथ में रिवाल्वर की झलक दिखाई दी । फिर ठोस स्वर सुनाई दिया ।

'ऑल राइट जगमोहन । हैंड्स अप ।'

सिख ड्राइवर के लहले में पंजाबी पुट नाम-मात्र का भी नहीं था ।

जगमोहन को या तो रिवाल्वर दिखाई नहीं दिया था फिर उसने इसकी परवाह नहीं की । वह लिफाफा गिराकर सिख युवक पर टूट पड़ा ।

सिख युवक का जिस्म जोर से टैक्सी के साथ टकराया । उसको पगड़ी सर से उतरकर नीचे जा पड़ी । पगडी विहीन उसके सर पर छोटे-छोटे बाल देखकर जयन्त नाथ चकराया ।

सिख युवक ने ताबड़-तोड़ घूसें बरसातें जगमोहन के पेट में घटना दे मारा । जगमोहन लड़खड़ाता-सा पीछे हटा । उसका चेहरा पीड़ा से विकृत था । तभी रिवाल्वर के दस्ते का वार उसकी कनपटी पर हुआ ।

जगमोहन का जिस्म हवा में लहराया । तत्क्षण बांये हाथ का घूंसा उसकी नाक पर पड़ा । वह संज्ञा शून्य होकर सड़क पर जा गिरा ।

सिख युवक ने नीचे पड़ा मोटा लिफाफा उठाया । और एक ही झटके में अपने चेहरे से दाढ़ी-मूछ नोंचकर जेब में ठूस ली ।

सहमा-सा बैठा जयन्त नाथ हैरानगी भरे स्वर में चिल्लाया ।

'तुम ! सुधीर रंजन !'

'जी हां, बन्दा वही है, वकील साहब !' अब तक सिख ड्राइवर बना सुधीर रंजन बोला-'इससे पहले कि जगमोहन होश में आये या कोई और आ धमके । नोटों के दोनों लिफाफे मेरे हवाले कर दो ।' हाथ में पकड़ा लिफाफा उसके ऊपर फेंक दिया-'अपने कागजात चैक कर लो । जल्दी करो ।

चकित और घबराया-सा बैठा जयन्त नाथ पलभर के लिये हिचकिचाया । फिर अपने ओवर कोट की जेबों से दोनों लिफाफे निकालकर सुधीर को थमा दिये । सीट पर पडा कागजात का लिफाफा उठा लिया ।

सुधीर ने फटाफट नोट चैक किये । दोनों लिफाफे अपनी जरकिन में डालकर पुनः जिप ऊपर तक बन्द कर ली । फिर वह बेहोश जगमोहन के ऊपर झुककर उसकी तलाशी लेने लगा ।

उसकी जेबों में कोई हथियार नहीं था । रोजमर्रा के इस्तेमाल की सामान्य चीजों के अलावा उसके पर्स में एक चाबी सुधीर को मिली । चाबी का पर्स में होना इस बात का सूचक था कि वो महत्वपूर्ण थी । जबकि देखने में वो दरवाज़े की मामूली चाबी नजर आती थी ।

सुधीर कुछ देर खड़ा उसे विचारपूर्वक हाथ में उलटता-पुलटता रहा । फिर हैडलाइट की रोशनी में आ गया ।

चाबी के पिछले वृत्ताकार भाग पर बीचों-बीच सत्रह का अंक खुदा हुआ था । उसके इर्द-गिर्द खुदाई के अक्षरों में लिखा था-फ्रेंड्स गेस्ट हाउस, राजनगर ।

फ्रेंड्स गेस्ट हाउस, अशोक रोड पर था । वहां घण्टों के हिसाब से कमरे किराये पर मिलते थे । सभी कमरे आधुनिक ढंग से सुसज्जित थे । वहां जाने वाले सिर्फ वही युवक-युवतियां थे । जिन्हें दो-चार घण्टे के लिये पूर्णतया एकांत की जरूरत होती थी । और जिनका आपस में पतिपत्नी का रिश्ता नहीं होता था । बगैर किसी पूछताछ के एडवांस किराया देने पर वहां कमरा आसानी से मिल जाता था । बशर्ते कि कमरा खाली हो और जरूरतमन्द युवक अथवा युवती अकेला या अकेली न हो ।

इन सब बातों की जानकारी तो सुधीर को थी । लेकिन गेस्ट हाउस के कमरे की चाबी के जगमोहन की जेब में पाये जाने की माकूल वजह उसे नहीं सूझ सकी । अलबत्ता यह निश्चित था कि वो कमरा अभी इसके कब्जे में था । वरना चाबी इसकी जेब में नहीं होती थी ।

सुधीर ने चाबी अपनी जेब में डाल ली ।

वह पुनः जगमोहन की ओर आकर्षित हुआ ।

उसकी नब्ज लगभग सामान्य थी और सांसें भी ठीक चल रही थीं । वह सिर्फ बेहोश था ।

सुधीर ने उसकी टाई खोली । जगमोहन को उलटकर उसके दोनों हाथ पीठ के पीछे निर्दयतापूर्वक बांध दिये ।

सुधीर टैक्सी के पास पहुंचा ।

जयन्त नाथ ने कागजात चैक करने के बाद वापस लिफाफे में रख दिये थे ।

'सब ठीक है ?' सुधीर ने पूछा ।

'हां ।'

'टाई लगाते हो, वकील साहब ?'

'हां, क्यों ?'

'मुझे चाहिए । जल्दी दो । इस फिल्म-स्टार का इन्तज़ाम करना है ।'

जयन्त नाथ ने टाई खोलकर दे दी ।

'अब यह बताओ कार दौड़ा लेते हो ? मेरा मतलब है कार ड्राइविंग आती है !'

'आती है ।'

'तो फटाफट नीचे उतरो और उस कार में जा बैठो ।'

सुधीर वापस जगमोहन के पास पहुंचा ।

आश्चर्य एवं असमंजस में पड़ा जयन्त नाथ टैक्सी से उतरकर जगमोहन की कार की ड्राइविंग सीट पर जा बैठा ।

सुधीर ने जगमोहन के दोनों टखने भी आपस में मिलाकर बांधे । फिर उसे घसीटकर टैक्सी की पिछली सीट पर डाला । उसका हैट भी सड़क से उठाकर उसके पास पटका और पिछले दोनो दरवाज़े लॉक कर दिये ।

इस काम से फारिग होकर वह जयन्त नाथ के पास पहुँचा ।

'मेरे लायक कोई और सेवा, वकील साहब ?' उसने पूछा ।

'अगर इस मामले को किसी प्रकार दबा सको तो बडी मेहरबानी होगी ।' जयन्त नाथ हिचकिचाता-सा बोला 'मैं वादा करता हूँ कि इस काम की अपने क्लायन्ट से तगड़ी फीस दिला दूँगा ।'

'तुम पहले ही मुझे तगड़ी फीस दे चुके हो ।' सुधीर बोला-'अगर इस मामले को खामोशी से रख सका तो उसी को दूसरी फीस भी समझ लूंगा । हालांकि बदकिस्मती से, यह कांड जगमोहन के खिलाफ हत्या के आरोप में ठोस प्रमाण साबित हो सकता है और तुम्हें इसमें मुख्य गवाह बनना पड़ सकता है ।

'हत्या ? मैं समझा नहीं । मेरे ख्याल से वो केस तो निबट गया था ।'

'मैंने तुम्हें बताया नहीं था कि हालात बदल चुके हैं !'

जयन्त नाथ ने बेचैनी से पहलू बदला ।

'अब तुम गौर से मेरी बात सुनो ।' सुधीर बोला-'यहां से इस कार द्वारा अपने होटल पहुँचो । लेकिन एकदम सीधे नहीं । रास्ते में किसी ऐसी जगह रुकना जहां से डाक टिकटें हासिल करके कागजात के इस लिफाफे को डाक द्वारा दिल्ली अपने पते पर भेजने का इन्तज़ाम कर सको ।'

'लेकिन इस वक्त डाक टिकटें कहां मिलेंगी ?'

'तुम कैसे वकील हो जो इतना मामूली काम भी नहीं कर सकते । जनरल पोस्ट ऑफिस तुम्हारे होटल के रास्ते में पड़ता है । वहां डाक टिकटों वाला काउन्टर चौबीस घण्टे खुला रहता है । सुधीर उसे घूरता हुआ बोला 'लिफाफा लैटर बॉक्स में छोड़ने के बाद अपने होटल पहुँचना । लेकिन इस कार को होटल से एकाध फर्लांग पहले ही छोड़ देना । होटल में या तो पुलिस तुम्हारा इन्तजार कर रही होगी या फिर जल्दी ही आ पहुँचेगी । पुलिस तुमसे देवराज मेहता के घर में ठहरने की तुम्हारी अवधि के बारे में पूछताछ करेगी । लेकिन जहां तक मुझे उम्मीद है इस कांड की ओर संकेत करने वाली कोई जानकारी उनके पास नहीं होगी । इसलिये इस बारें में तुमसे कोई सवाल शायद नहीं किया जाएगा । फिर पूछताछ के दौरान तुम सतर्क रहना । और ऐसी कोई बात मुँह से मत निकाल बैठना कि उनका ध्यान इस तरफ आकर्षित हो । होटल के कमरे से गायब रहने का कोई ऐसा खूबसूरत बहाना लगाना जिस पर एकाएक अविश्वास न किया जा सके । इस बीच अगर मैं

देवराज मेहता की हत्या का बखेड़ा निबटा सका तो तय है कि ब्लैकमेलिंग का यह झमेला रोशनी में नहीं आ सकेगा । समझ गए ?'

जयन्त नाथ ने सहमति-सूचक सर हिला दिया ।

'अब तुम इस खटारे को लेकर फौरन यहां से दफा हो जाओ ।' सुधीर ने कहा ।

जयन्त नाथ ने इन्जन स्टार्ट करके कार थोड़ी पीछे हटाकर सड़क पर घुमाई और शहर की तरफ दौड़ा दी ।

सुधीर टैक्सी की ओर बढ़ा । नीचे पड़ी पगड़ी उठाकर डिग्गी में रखी और ड्राइविंग सीट पर बैठ गया ।

इन्जिन स्टार्ट करते समय उसने पिछली सीट पर निगाह डाली ।

जगमोहन होश में आता प्रतीत हो रहा था ।

सुधीर ने टैक्सी को यू टर्न दिया और वापस शहर की ओर दौड़ाने लगा ।

पिछली सीट पर पड़ा जगमोहन कराहा । उसके जिस्म में हरकत हुई । फिर उसने पलकें झपकायीं । और उठकर बैठने की असफल कोशिश की ।

'क...क्या बात है ?' वह घबराहट भरे स्वर में चिल्लाता-सा बोला-'मेरे हाथ-पैर क्यों बांधे हैं ? कौन हो तुम ? मुझे कहां ले जा रहे हो ?'

'जहन्नुम में ।' सुधीर बोला ।

इस बार जगमोहन कोशिश करके बैठने में कामयाब हो गया ।

उसने आगे झुककर ड्राइवर को घूरा ।

'तुम...सुधीर रंजन ! प्राइवेट जासूस ?' वह बौखलाता हुआ बोला-'हे भगवान ! टैक्सी तुम चला रहे थे ।

'जी हां, आप सही फरमा रहे हैं सेक्रटरी साहब ।' सुधीर पूर्ववत टैक्सी दौड़ाता हुआ बोला-'बेहतर होगा कि इसी तरह अपनी याददाश्त को ताजा करते रहो । जल्दी ही तुमने अपना रिकार्ड चालू करना है ।'

टैक्सी शहर में दाखिल हो चुकी थी । सुधीर ने स्पीड कम कर दी ।

'ओह...मेरा सर ।' जगमोहन कराहा-'दर्द से फटा जा रहा है । मेरे सर पर किस चीज से वार किया था तुमने ?'

'पहले रिवाल्वर के दस्ते से फिर बांये हाथ के मुक्के से ।'

'लेकिन मेरे पेट में भी दुखन है ?'

'वो मेरे घुटने की शरारत थी ।'

'और मेरे हाथ-पैर क्यों बांधे हैं ?'

'ताकि तुम कार से छलांग न लगा दो । तुम्हें उछलकूद का शौक है न ?'

सुधीर ने कार उस सड़क पर मोड़ दी । जो आगे आकर उस सड़क से मिलती थी जिस पर गेस्ट हाउस था ।

'मुझे ले कहां जा रहे हो ?' जगमोहन ने मिमियाकर पूछा ।

'फ्रेंड्स गेस्ट हाउस ।'

जगमोहन यूउछला मानो उसे बिच्छू ने डंक मार दिया था ।

'क्या ? वहां क्यों ले जा रहे हो ?'

'यह जानने के लिये कि वहां कमरा नम्बर सत्रह में कौन-सी करामात है जिसकी चाबी तुम दिल से लगाये घूमते हो ।'

सुधीर ने गेस्ट हाउस की इमारत के सामने टैक्सी रोकी । पिछले दरवाज़े का लॉक खोलकर नीचे उतरा ।

उसने जगमोहन के हाथों में बंधी टाई खोली । पैर खुद खोल लो ।' वह बोला । जगमोहन धीरे-धीरे अपने पैर खोलने लगा ।

'जल्दी करो ।' सुधीर डपटता हुआ बोला-'बाहर निकलो ।' जगमोहन टैक्सी से उतरा ।

सुधीर ने उसकी बांह थामी और गेस्ट हाउस की इमारत में दाखिल हो गया ।

कमरा नम्बर सत्रह गलियारे के आखरी सिरे पर था ।

सुधीर ने जेब से चाबी निकाली । दरवाज़े के की होल में फंसाकर घुमाई । ताला खुल गया ।

वह दरवाजा ठेलकर जगमोहन सहित भीतर दाखिल हुआ ।

सुसज्जित कमरे में ट्यूब लाइट की रोशनी थी । बांयी दीवार के पास डबल बैड पर गर्दन तक रजाई ताने पीठ के बल एक औरत पड़ी थी । उसकी आँखें बन्द थीं और चेहरा पीला पडा हुआ था ।

सुधीर ने उसे फौरन पहचान लिया ।

वह प्रतिमा दुग्गल थी ।

* * * * * *

सुधीर ने अपनी बगल में खड़े जगमोहन की गुद्दी पर ऐसा हाथ जमाया कि वह सामने वाली दीवार से जा टकराया ।

फिर दरवाजा बन्द करके उसने सिटकनी चढ़ा दी । दो ही डगों में पलंग के पास जा पहुँचा ।

प्रतिमा का सांसों के साथ उठता-गिरता वक्षस्थल देखकर उसने थोड़ी राहत महसूस की । वह ज़िन्दा थी । सुधीर ने रजाई से उसका हाथ बाहर खींचा । कलाई गर्म थी और नब्ज ठीक चल रही थी । वह गहरी नींद में सोई पड़ी प्रतीत हो रही थी । मानो कोई नशा पिये हुए थी ।

अचानक उसके होंठ खुले । हल्की कराहट कण्ठ से निकली । पल भर के लिये पलक भी झपकाई ।

सुधीर आश्वस्त भाव से पीछे हटा ।

जगमोहन दीवार के साथ खड़ा गहरी-गहरी सांसें ले रहा था ।

सुधीर उसके सामने जा खड़ा हुआ ।

'यह इतनी गहरी नींद में क्यों सो रही है ?' उसने पूछा-'क्या खिलाया था इसे तुमने ?'

'नींद की दो गोलियां ।' जगमोहन विवशतापूर्वक बोला-'अपने लौट आने तक मैं इसे यहीं रहने देना चाहता था । गोलियों का असर खत्म होने ही वाला होगा । इसी से पूछ लेना । खुद ही बता देगी । किसी किस्म की कोई चोट मैंने इसे नहीं पहुंचाई है ।'

'लेकिन यह सब करने की नौबत ही क्यों आई ?'

'यह बहुत ज्यादा उत्तेजित थी । और मुझे डर था कि कोई उल्टी-सीधी हरकत न कर बैठे । इसलिए मैं इसे यहां ले आया ताकि यह अपने पति से बची रह सके ।'

सुधीर ने असमंजसतापूर्वक उसे घूरा ।

'तुम कहना क्या चाहते हो ?'

'यह उस वक्त से पहले की बात है । जब सुरेश दुग्गल ने वापस आकर देवराज मेहता को शूट किया और गिरफ्तार हो गया था । मैंने सोचा उसकी अगली शिकार प्रतिमा भी हो सकती थी । मुझे इस बात की कोई जानकारी नहीं थी कि पति से सामना होने पर यह क्या सफाई देगी ।'

सुधीर ने कमरे में निगाहें दौड़ायीं । डबल बैड के पास छोटी-सी मेज पर टेलीफोन उपकरण रखा था । फिर तनिक हटकर दो ईजी चेयर पड़ी हुई थी ।

वह एक कुर्सी पर बैठ गया ।

जगमोहन दूसरी कुर्सी पर आ बैठा ।

'जो कुछ तुमने बताया है ।' सुधीर ने पूछा-'यह उस वक्त के बाद की बात है जब तुमने देवराज मेहता को चाकू भोंककर वो कागजात चुराये थे जिनकी जयन्त नाथ को जरूरत थी ?

जगमोहन कुर्सी में पसर गया ।

'मैंने उसे चाकू नहीं भोंका ।' वह बोला-'जब मैं स्टडी में पहुँचा तो वह मरा पड़ा था । उसने कोट पहना हुआ था । और जखम तो क्या कमीज पर फैला खून तक भी दिखाई नहीं दे रहा था । लेकिन वह जिस ढंग से बैठा एकटक मुझे घूर रहा था, वो मुझे अजीब लगा । मैंने गौर से देखा तो उसकी आँखें बेजान नजर आयीं । मैं आशंकित मन से आगे बढ़ा । उसके सर अथवा चेहरे पर ताजा चोट का कोई निशान नहीं था । इसलिये मैंने उसके कोट को जनिक ऊपर उठाकर झांका । बांयी तरफ कमीज में एक सुराख था जिसके इर्द-गिर्द खून का एक दाग बना हुआ था । मैं समझ गया वह मर चुका था । और उसकी हत्या सुरेश दुग्गल ने की थी ।'

'सुरेश दुग्गल ने ही क्यों ?'

'क्योंकि वह पहला और आखरी आदमी था । जो स्टडी के पिछले दरवाज़े से होकर उससे मिलने गया था । दूसरे मैं जानता हूँ कि सुरेश दुग्गल को देवराज मेहता पर इस बात का तगड़ा शक था कि उसके प्रतिमा के साथ नाजायज ताल्लुकात थे । तीसरे, सुरेश दुग्गल के चले जाने के करीब पच्चीस मिनट बाद मैं स्टडी में पहुंचा तो देवराज मेहता मरा पड़ा था ।' जगमोहन ने सुधीर की ओर देखा- 'क्या ये सारी बातें मेरे यह समझने के लिये काफी नहीं थीं कि हत्यारा सुरेश दुग्गल था । तुम सोच भी नहीं सकते कि दोबारा वापस कोठी में लौटने पर मेरी क्या हालत हुई थी ? जब मुझे बताया गया कि सुरेश दुग्गल रिवाल्वर लेकर आया, जबरदस्ती अन्दर घुसा और देवराज मेहता को शूट कर दिया । यह सुनकर मेरा दिमाग घूम गया था । मेरी समझ में खाक भी नहीं आया कि सुरेश दुग्गल ने पहले से ही मरे पड़े देवराज मेहता को शूट क्यों किया ? लेकिन मैं कह क्या सकता था ? मुह बन्द रखने के अलावा मेरे पास और कोई चारा नहीं था । मेरी खैरियत भी इसी में थी । दूसरे मैंने सोचा इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि सुरेश दुग्गल को चाकू से हत्या करन के जुर्म में फांसी पर लटकाया जाता है या रिवाल्वर की गोली से शूट करने के जुर्म में या फिर दोनों तरह से ।'

'मुख्तसर में, तुम्हारी अब तक की गाथा का निचोड़ यह है कि सुरेश दुग्गल के चले जाने के करीब पच्चीस मिनट बाद जब तुम स्टडी में पहुंचे तो देवराज मेहता मरा पड़ा था ?

'हां, और हकीकत भी यही है ।'

'फिर तुमने क्या किया ?'

'मैं नहीं जानता था कि शचीन्द्र सहाय रस्तोगी सम्बन्धी जो कागजात लेने जयन्त नाथ आया था । वे देवराज मेहता के डेस्क में ही थे । मुझे इस बात की जानकारी थी कि जयन्त नाथ ने उनके बदले में एक लाख रुपया देना था । मैंने दराज खोलकर लिफाफा निकाला और स्टडी से बाहर आकर दरवाजा पूर्ववत बन्द कर दिया । और मैं दबे पांव अपने कमरे में चला गया । मैं जानता था कि देवराज मेहता की हत्या सुरेश दुग्गल ने क्यों की थी । इसलिए मैं जानना चाहता था कि देवराज मेहता की हत्या करने के बाद वह प्रतिमा से कैसा व्यवहार करेगा ? मैं यह भी जानना चाहता था कि अगर सुरेश दुग्गल ने प्रतिमा के पास वापस जाकर उसे बताया कि उसने देवराज मेहता को मार डाला था, तो प्रतिमा पर क्या प्रतिक्रिया होनी थी ? अगर प्रतिमा ने सच्चाई कबूल कर ली और उसे बता दिया कि उसने गलत आदमी को मार डाला था तो वह बेवकूफ मेरी जान लेने भी दौड़ सकता था । क्योंकि प्रतिमा की खातिर एक खून करने के बाद दूसरा करने में भी उसे हिचक नहीं होनी थी । इसलिए मैंने सोचा फौरन प्रतिमा के पास पहुँचना जरूरी था । अगर तब तक सुरेश दुग्गल घर नहीं पहुंचा होगा तो प्रतिमा को समझा-बुझा कर मुह बन्द रखने के लिये रजामन्द करना पड़ेगा ।

सुधीर ने चौंककर उसकी ओर देखा ।

'तुम्हारा मतलब है कि प्रतिमा के साथ देवराज मेहता का नहीं तुम्हारा अफेयर था ?'

'बेशक ! और क्या प्रतिमा ने उसे घास डालनी थी ?' जगमोहन ने कहा- 'इस सिलसिले की दिलचस्प बात यह थी कि देवराज मेहता को भी इस बात की जानकारी थी । आदतन उसे ऐसी बातों में बहुत लुत्फ आता था । वह यह भी जानता था सुरेश दुग्गल उसी पर शक करता था । तुम शायद ताअज्जुब करोगे । लेकिन असलियत यह है सुरेश दुग्गल के इस शक को यकीन में बदलने का काम भी खुद उसी ने किया था ।'

इसमें उसे क्या फायदा नजर आता था ?

'उसके अहं को इस बात से विचित्र सन्तुष्टि प्राप्त होती थी कि सुरेश दुग्गल यह समझे कि प्रतिमा जैसी इंतिहाई खूबसूरत औरत उससे प्यार करती थी ।'

'देवराज मेहता की स्टडी से शचीन्द्र सहाय रस्तौगी सम्बन्धी कागजात चुराकर तुम अपने कमरे में चले गये ।' सुधीर ने पूछा-'फिर तुमने क्या किया ?'

'सीधा प्रतिमा के फ्लैट पर पहुँचा । कागजात भी मेरे साथ थे । क्योंकि देवराज मेहता की मौत का पता चलने से पहले मैं उन्हें उस कोठी से हटा देना चाहता था ताकि बाद में जयन्त नाथ से सौदा कर सकूँ । मैं नहीं जानता था कि देवराज मेहता की हत्या के बाद

सुरेश दुग्गल ने क्या करना था । इसलिये जब तक मैं प्रतिमा के पास न पहुँच गया मेरी जान सूखती रही ।' जगमोहन गहरी सांस लेकर बोला-'प्रतिमा को घर में अकेली पा कर मुझे थोड़ी राहत महसूस हुई । लेकिन उसकी हालत बड़ी अजीब थी । मुझे देखते ही वह मुझसे लिपट गई । उसने बताया कि सुरेश देवराज मेहता को शूट करने गया था । रोते-गिड़गिड़ाते हुए मुझसे उसे रोकने के लिए कहती रही । पल भर के लिए मेरी बुद्धि कुठित हो गई और समझ नहीं सका कि प्रतिमा कह क्या रही थी । फिर मैंने उसे बताया कि सुरेश तो पहले देवराज मेहता का खून कर चुका था । इस बात ने प्रतिमा को आपे से बाहर कर दिया । वह चीखने लगी और सारा दोष मेरे सर मंढने लगी । उसकी उस हालत में मैंने उसे प्लैट में अकेला छोड़ना मुनासिब नहीं समझा । वह अर्द्ध चेतना शून्य सी हो गई । मैं उसे बैडरूम में ले आया । वहां स्लीपिंग पिल्स पड़ी थी । पहले मैंने उसे थोडी ब्रांडी पिलाई । फिर किचेन में गया । आधा गिलास दूध में नींद की दो गोलियों मिलाकर लाया और उसे पिला दिया । फिर बड़ी मन्नत समाजत से मैं उसे यहां ले आया । यहां पहुंचने तक गालियों का असर शुरू हो चुका था । मैंने उसे पलंग पर लिटा दिया । थोड़ी देर बाद वह गहरी नींद में सो गई । तब से इसी तरह सोयी पड़ी है । उसने पलंग की ओर सर हिलाया- 'यह जागने पर तुम्हें यही सब कुछ बताएगी ।'

तभी अचानक पलंग पर पड़ी प्रतिमा के कण्ठ से कराह सी निकली, वह कुछ बड़बड़ाई फिर उन दोनों की तरफ करवट ले ली ।

सुधीर उठकर खड़ा हो गया । और पलंग की ओर बढ़ गया ।

प्रतिमा के कन्धे पर हाथ रखकर उसने धीरे से उसे हिलाया ।

'उठो ।' वह मृदु स्वर में बोला-'अब कोई गड़बड़ नहीं है । मैं तुम्हें घर पहुँचा दूँगा ।'

प्रतिमा ने धीरे-धीर आखें खोली । अपने ऊपर झुके सुधीर रंजन को पहले अपरिचित की भांति ताका । फिर पहचानने की कोशिश करती हुई बड़बड़ाई ।

'तुम...प्राइवेट डिटेक्टिव ! सुरेश । सुरेश कहां है ?' अचानक वह उठकर बैठ गई । और पलकें झपकाते हुए जगमोहन की ओर देखा । जो हिचकिचाता सा पलंग की ओर बढ़ रहा था-'जगमोहन ने कहा था कि उसने देवराज मेहता का खून कर दिया । फिर वह चिल्लाई-'क्या सुरेश खूनी है ? क्या उसने सचमुच खून किया है ?'

'मिसेज दुग्गल ।' सुधीर बोला-'इस वक्त तुम्हारा पति देवराज मेहता को शूट करके मार डालने के आरोप में हवालात में बन्द है । लेकिन मेरा ख्याल है, जल्दी ही आरोप गलत साबित हो जाएगा । थोड़ी देर और आराम से लेटो । फिर मैं तुम्हें घर पहुँचा दूँगा ।'

सुधीर जगमोहन की ओर पलटा ।

'यह फोन इन्टरनल है ?' उसने टेलीफोन की ओर संकेत करके पूछा ।

'हां ।' जगमोहन बोला ।

'आउट लाइन ली जा सकती हैं ?'

'हां ।

'आप्रेटर से आउट लाइन मांगो ।'

जगमोहन ने आप्रेटर से आउट लाइन देने के लिए कहकर रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया ।

'अब तुम चुपचाप कुर्सी पर बैठो ।' सुधीर कठोर स्वर में बोला-'और तुम्हारी खैरियत इसी में है कि कोई गलत हरकत करने की कोशिश भी मत करना ।'

जगमोहन असहाय भाव से कुर्सी में पसर गया ।

टेलीफोन की घण्टी बजते ही सुधीर ने रिसीवर उठा लिया ।

उसने पुलिस हैडक्वाटर्स का नम्बर डायल किया ।

क्राइम ब्रांच से सम्बन्ध स्थापित होने पर पता चला इन्स्पेक्टर विजय कुमार वहां नहीं था । फोन अटेंड करने वाला सब-इन्स्पेक्टर चौहान था । वह भी सुधीर का खासा परिचित था ।

अपना परिचय देने के बाद सुधीर ने उसे बताया कि देवराज मेहता की हत्या का एक मर्डर सस्पैक्ट उसके पास था । जिसे वह पुलिस को सौंपना चाहता था । सुधीर ने गेस्ट हाउस का पता बता दिया । चौहान ने कह दिया वह फौरन किसी को भेज रहा था ।

'इन्स्पेक्टर विजय कुमार कहां गया है ?' सुधीर यू ही पूछ बैठा ।

'देवराज मेहता के घर ।' चौहान ने जवाब दिया ।

'रात पौने तीन बजे के बाद से अभी तक नहीं लौटा ?' उसने उत्सुकतावश पूछा-'या दोबारा गया हैं ।'

'करीब डेढ़ घण्टा पहले वहां बलराज मेहता नामक एक आदमी सीढ़ियों से गिरकर मर गया था । उसी के सिलसिले में गये हैं ।'

'यहां किसी को भेजने के बाद विजय कुमार को सूचित कर देना ।' वह बोला-'कि मिसेज प्रतिमा दुग्गल भी मेरे पास है । मैं उसे घर पहुँचाने जाने वाला हूँ ।

सुधीर ने रिसीवर रख दिया और पुलिस आगमन का इन्तजार करने लगा ।

* * * * * *

टैक्सी लिटन रोड की ओर दौड़ रही थी । स्टियरिंग व्हील पर हाथ जमाए बैठा सुधीर किसी योगी की भांति विचार मग्न था । बगल में बैठी प्रतिमा दुग्गल बेहद चिंतित और खामोश थी ।

बलराज मेहता की मौत ने सुधीर को बहुत कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया था । उसका मन बार-बार चीख-चीख कर कह रहा था । बलराज मेहता अपनी स्वाभाविक मौत नहीं मरा था ।

प्रतिमा दुग्गल को घर पहुँचाने के बाद वह तसल्ली से इस सारे मामले पर शुरू से विचार करना चाहता था ।

जगमोहन को गेस्ट हाउस में पुलिस के हवाले करते समय उसने स्पष्ट चेतावनी दी थी । अगर वह खुद को बेगुनाह साबित करना चाहता था तो अच्छी तरह सोचकर याद करने की कोशिश करें । कोई ऐसी बात तो नहीं जो उसने हत्या के बाद देवराज मेहता की स्टडी में नोट की थी और जिसे मामूली समझ कर नजर अन्दाज कर गया था या जो सिरे से ही बतानी याद नहीं रही थी ।

'सुनो ।' अचानक प्रतिमा दुग्गल ने टोका-'तुमने सच कहा था कि सुरेश पर लगा खून का इल्जाम गलत साबित हो जाएगा ?'

'हां ।' सुधीर बोला-'कम से कम अब तक तो मेरा यही ख्याल है ।'

प्रतिमा दुग्गल ने गहरी सांस ली ।

'मुझे सारा सिलसिला एक भयानक दु.स्वप्न सा लग रहा है ।' वह बोली-'सुरेश का आंधी तूफान की तरह घर में दाखिल होना, रिवाल्वर लेकर उल्टे पैरों बाहर दौड़ जाना फिर मेरा तुम्हें फोन करना और...और फिर जगमोहन का आकर बताना कि सुरेश ने देवराज मेहता का खुन कर दिया था ।' और सिसकने लगी ।

'फिक्र मत करो । सब ठीक हो जाएगा ।' सुधीर सहानुभूतिपूर्वक बोला-'सुरेश ने देवराज मेहता को शूट ज़रूर किया था । लेकिन अब यह साबित हो चुका है कि वह गोली लगने से पहले ही मर चुका था ।

'इसका मतलब सुरेश ने उसका खून नहीं किया ?' प्रतिमा दुग्गल विचारपूर्वक बोली- भगवान का लाखलाख शुक्र है । कल शाम जब तुम मेरे पास आए थे तो मुझे अपने और जगमोहन के बारे में तुम्हें बता देना चाहिये था । अगर मैंने ऐसा किया होता तो यह वारदात टल सकती थी । लेकिन मेरे दिल में चोर था । अपनी अपराध भावना की वजह से मैं तुम्हें असलियत नहीं बता सकी । और यह सब हो गया । असली गुनहगार मैं हूं । सजा मुझे मिलनी चाहिये ।'

भावावेग के कारण प्रतिमा दुग्गल पुनः सिसकने लगी ।

सुधीर ने उसे चुप कराने की कोशिश नहीं की ।

उसने सोचा अच्छा है रोने से मन कुछ हल्का हो जाएगा । पूछताछ में आसानी रहेगी । वह देखना चाहता था कि प्रतिमा दुग्गल के बयान से जगमोहन द्वारा सुनाई गई कहानी की पुष्टि होती थी या नहीं ।

वे लिटन रोड पहुंचे ।

सुधीर ने उस इमारत के सामने टैक्सी रोकी जिसमें सुरेश दुग्गल का फ्लैट था ।

'तुम चलकर फ्लैट का ताला खोलो ।' वह बोला 'मैं टैक्सी लॉक करके आता हूँ ।'

प्रतिभा दुग्गल खामोशी से नीचे उतरी और इमारत में दाखिल हो गई ।

सुधीर ने आस-पास खोजपूर्ण निगाहों से देखा । किसी की उपस्थिति का आभास न पाकर ग्लोव कम्पार्टमेंट खोला । जरकिन से नोटों के दोनों लिफाफे निकाल कर उसमें ठस दिये । उसे लॉक करके नीचे उतरा । फिर टैक्सी के दरवाज़े लॉक करके निश्चिन्तापूर्वक इमारत में दाखिल हो गया ।

प्रतिमा दुग्गल अपने फ्लैट के बाहर खड़ी थी । 'मेरे पास चाबी नहीं है । वह बोली ।

सुधीर ने अपनी जेब से चाबियों का गुच्छा निकालकर प्रवेश द्वार का ताला खोला ।

सहसा अपने पीछे भारी कदमों की आहट पाकर पलटा । और विजय कुमार को सामने पाकर तनिक चौंक गया । 'चौहान ने मुझे तुम्हारा मैसेज दे दिया था । विजय कुमार बोला फिर सर से पांव तक उसे घूरा-'यह क्या हुलिया बना रखा है ?

'क्यों ?' वह बोला-'क्या खराबी है हुलिये में ?'

'कुछ नहीं । दरवाजा खोलो ।'

सुधीर ने दरवाजा खोला ।

तीनों भीतर दाखिल हो गये ।

सुधीर ने प्रतिमा दुग्गल और विजय कुमार का परस्पर परिचय करा दिया ।

प्रतिमा दुग्गल एक सोफा चेअर में बैठ गई । अब वह अपेक्षाकृत काफी संयत नजर आ रही थी ।

वे दोनों उसके सामने सोफे पर बैठे ।

'मिसेज दुग्गल ।' विजय कुमार बोला-'आप हमें बताइए आप अचानक कहाँ गायब हो गई थी ?'

'मेरी समझ में नहीं आता । वह बोली-'कहां से शुरू करू ?'

'रात में तुमने मुझे फोन किया था ?' सुधीर ने पूछा ।

'बस वहीं से बताना शुरू कर दो । फोन करने की नौबत क्यों आई ?'

'रात नौ बजे से कुछ देर पहले सुरेश घर आया ।' प्रतिमा दुग्गल ने बताना आरम्भ किया-'नशे और गुस्से की वजह से उसकी हालत अजीब हो रही थी । एकदम खूखार नजर आ रहा था । वह सीधा बैडरूम में पहुंचा । अपना ओवर कोट उतार कर पलंग पर फेंक दिया । अल्मारी से रिवाल्वर निकाल कर जेब में डालते हुए कहा कि वह देवराज मेहता को शूट करने जा रहा था । मैंने उसे समझाने और रोकने की कोशिश करनी चाही । लेकिन उसने कुछ नहीं सुना और मुझे धकेल कर बाहर दौड़ गया । एकाएक मैं समझ नहीं सकी कि क्या करना चाहिये ।' उसने सुधीर की तरफ देखा-'अचानक मुझे तुम्हारा ध्यान आ गया । और मैंने फोन कर दिया । आर मैं इसी कमरे में आ बैठी । मैं परेशान और भयभीत थी । फिर जगमोहन यहां पहुंचा । उसने मुझे बताया कि सुरेश ने देवराज मेहता का खून कर दिया था ।' अचानक वह चुप हो गई । उसकी आंखों में आंसू भर आये थे ।

विजय कुमार ने हैरानगी से सुधीर की ओर देखा ।

'उस वक्त तक जगमोहन को कैसे पता था कि देवराज मेहता का खून कर दिया गया था ?'

'जगमोहन हैडक्वाटर्स में है । वहां चलकर उससे विस्तृत पूछताछ करेंगे । सुधीर जल्दी से सफाई देता हुआ बोला-'वैसे वह मुझे बता चुका है । वह स्टडी मे गया था । वहां देवराज मेहता को मरा पड़ा पाकर उसने समझा, सुरेश ने खुन कर दिया था । इस बात ने उसे आंतकित कर दिया । वह आनन फानन में दौड़ता हुआ यहां आ पहुँचा ।'

'यहां क्यों ?' विजय कुमार ने जानना चाहा ।

'क्योंकि मिसेज दुग्गल से असल में देवराज मेहता का नहीं उसी का अफेयर था । इसलिये जगमोहन को डर था अगर उसने यहां आकर मिसेज दुग्गल को जुबान बन्द रखने के लिये तैयार नहीं किया तो घबराहट में यह सुरेश दुग्गल को सच्चाई बता बैठेगी ।'

विजय कुमार ने कड़ी निगाहों से प्रतिमा दुग्गल को घूरा ।

'क्या यह सच है, मिसेज दुग्गल, कि जगमोहन से आपका अफेयर था ?

प्रतिमा दुग्गल ने सर झुका लिया ।

'हां ।' फंसी सी आवाज़ में बोली-'लेकिन सुरेश के दिमाग में यह बात गड़ी हुई थी कि मेरे ताल्लुकात देवराज मेहता से थे । इसीलिये जब वह रिवाल्वर लेकर देवराज मेहता को शूट करने जा रहा था तो मुझे यह सब बेहद खौफनाक लगा । क्योंकि वह गलत आदमी की जान लेने जा रहा था । मैंने रोकने...समझाने की कोशिश की लेकिन वह बगैर कुछ सुने दौड़ गया ।'

विजय कुमार ने इस रहस्योद्घाटन पर विचार किया । फिर प्रतिमा दुग्गल की ओर देखा ।

'यहां आने के बाद जगमोहन ने क्या किया ?' उसने पूछा ।

'वह बहुत ज्यादा उत्तेजित था । उसने पूछा सुरेश कहां था । मैने उसे बता दिया कि वह रिवाल्वर कर देवराज मेहता को शूट करने उसके घर गया था । इस पर जगमोहन ने बताया, उसका तो पहले ही खून कर चुका था । फिर मुझसे कहा कि मेरा यहां ठहरना मेरे लिये सुरक्षित नहीं है । इसलिये मैं अपना सूटकेस पैक करके उसके यहां चलूँ । जब तक सुरेश गिरफ्तार नहीं हो जाता तब तक के लिये वह मुझे किसी सुरक्षित जगह छुपा देगा ।'

'फिर क्या हुआ ?' विजय कुमार ने पूछा ।

'मैं सही ढंग से सोच पाने की स्थिति में नहीं थी । उसने थोड़ी ब्रांडी पिलाई और किचन से लाकर आधा गिलास दूध पिलाया । फिर मुझे सहारा देकर फ्लैट से बाहर लाया । और फिर अपनी कार में बैठाकर ले गया ।' प्रतिमा दुग्गल पलभर खामोश रहने के बाद बोली-कार में ही मुझे अपना दिमाग निष्क्रिय-सा महसूस होने लगा था । फिर मुझे इतना ही ध्यान है कि मैं किसी इमारत में जाकर पलंग पर लेटी थी । उसके बाद क्या हुआ मैं नहीं जानती । फिर जब आँखें खुली तो मि० सुधीर रंजन झुके मुझे हिलाकर जगा रहे थे ।'

विजय कुमार खड़ा हो गया ।

सुधीर ने भी उसका अनुकरण किया ।

दोनों दरवाज़े की ओर बढ़े ।

अचानक सुधीर पलटा ।

'मिसेज दुग्गल !' वह बोला- 'जब सुरेश रिवाल्वर लेने यहां आया था । उसने ओवर कोट पहना हुआ था । जिसे वह जाती बार यहीं उतारकर फेंक गया था । आप वो ओवर कोट लाकर दे सकती हैं ?'

'हां ।' प्रतिमा दुग्गल उठकर बैडरूम में चली गई ।

'यह तुम्हें ऊटपटांग बातें क्यों सूझती हैं ?' विजय कुमार ने खीजकर पूछा-'ओवर कोट का आचार डालोगे ?'

'हां ।' सुधीर दबे स्वर में बोला-'सीधी-सी बात है । अगर चाकू सुरेश दुग्गल ने भोंका था । और उस देवराज मेहता की छाती से निकालकर अपने साथ ले आया था । तो कहीं तो रख कर लाया होगा । मैं समझता हूँ ओवर कोट की जेबो से ज्यादा मुनासिब और सहुलियत वाली जगह इस काम के लिये दूसरी नहीं हो सकती ।'

सुधीर ने उसके हाथ से ओवर कोट ले लिया । वो हाल ही में ड्राईक्लीन कराया गया लगता था ।

बांयी जेब देखी । वो खाली थी । किसी किस्म का दाग तक उसमें नहीं था ।

दांयी जेब खोलते ही उसके नेत्र फट पड़े ।

उसमें स्टील का लम्बा नोकीला पेपर नाइफ पड़ा था । उसके फल पर सूखा खून जमा हुआ था ।

* * * * * *

विजय कुमार पुलिस हैडक्वाटर्स की ओर जीप दौड़ा रहा था ।

'इन्स्पेक्टर साहब !' बगल में बैठा सुधीर अपने घुटनों पर रखे ओवर कोट को थपथपाता हुआ बोला 'इस चाकू की ओवर कोट में मौजूदगी की वजह तो सुरेश दुग्गल बतलाएगा । लेकिन बलराज मेहता की मौत के बारे में तो आप ही बता सकते हैं । फोन पर चौहान द्वारा उसकी मौत की खबर सुनाये जाने के बाद से जो मेरी खोपड़ी चक्कर खा रही है । उस पर भी तो कुछ रहम करो ।'

विजय कुमार ने जीप की स्पीड कम कर दी ।

'छः बजे के करीब देवराज मेहता की स्टडी के बाहर तैनात हैडकांस्टेबिल रामसिंह ने मुझे फोन पर सूचना दी कि बलराज मेहता सीढियों से गिर गया था ।' वह बोला-'उसका सर फट गया था और वह मर चुका था । मैं घटना स्थल पर पहुँचा । नीचे हॉल में सीढ़ियों के पास बलराज मेहता पड़ा । उसका सर कई जगह से फटा हुआ था । और उसके पास खून का खासा तालाब-सा बना हुआ था । वह साफ मृत नजर आ रहा था । फिर भी मैंने उसकी नब्ज टटोलकर तसल्ली की । वह मर चुका था ।'

'नीना मेहता का बयान है कि देवराज मेहता के अन्तिम संस्कार की वजह से उसने बलराज मेहता को वहीं रोक लिया था । उसके कथनानुसार बलराज मेहता की सलाह थी कि एकाध घण्टा आराम करने के बाद देवराज मेहता की लाश मोर्ग से लेने चलेंगे । कोठी के सभी बैडरूम्स क्योंकि ऊपरली मंजिल पर हैं । इसलिये नीना मेहता उसे ऊपर ला रही । बकौल नीना मेहता, बलराज मेहता को नशा बहुत ज्यादा था । वह बुरी तरह लड़खड़ा रहा था और उसका सहारा लेकर सीढ़ियाँ चढ़ रहा था । जब ऊपर पहुँचने के लिये सिर्फ दो सीढ़ियां चढ़नी बाकी रह गई, तब अचानक बलराज मेहता का पैर इतनी जोर से फिसला कि खुद उसका सन्तुलन भी बिगड़ गया । नतीजा यह हुआ कि जिस हाथ से उसने बलराज मेहता को सहारा दे रखा था, वो छूट गया । बलराज मेहता खुद को संभाल नहीं सका । सर के बल सीढ़ियों पर लुढ़कता चला गया । वह बचाओ बचाओ पुकारने लगी ।'

'ऊपर स्टडी के बाहर मौजूद रामसिंह उसकी पुकार सुनकर दौड़ा । उसने देखा नीना मेहता ऊपर से तीसरी सीढ़ी पर बैठी हाथ-पांव पटकती हुई चिल्ला रही थी । नीचे हॉल में सीढियों के पास बलराज मेहता निश्चल पड़ा था । उसके सर से भल-भल बहता खुन तेजी से उसके आस-पास फैलता जा रहा था ।

'रामसिंह सीढियों पर दौडकर नीचे पहुँचा । बलराज मेहता के आस-पास फैला ढेर सारा खून देखकर, उसके होश उड़ गये । फिर नीना मेहता चिल्लाई-'डॉक्टर को बुलाओ...बेवकूफ...जल्दी करो...।' तब रामसिह को सूझा कि क्या करना था । रामसिंह बाहर दौड़ गया । लेकिन जब तक डॉक्टर को लेकर लौटा बलराज मेहता दम तोड़ चुका था । उस डॉक्टर से मैंने भी बातें की थी । उसके मुताबिक सर में लगी चोट काफी गहरी थी आर एकदम बहुत तेजी के साथ खून बह जाने की वजह से बलराज मेहता मर गया था ।'

'उसकी लाश कहां है ?' सुधीर ने पूछा ।

'पोस्टमार्टम के लिये भिजवा दी है ।'

'वकील जयन्त नाथ का क्या किया तुमने ?' सुधीर ने इस ढंग से पूछा मानो अचानक कुछ याद आ गया था ।

'करना क्या था ? वह अपने होटल से गायब है । उससे दो बार फोन पर सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश की गई और एक बार आदमी होटल में भेजा गया । लेकिन उसका कोई पता नहीं चला । अगर बलराज मेहता की मौत और प्रतिमा दुग्गल के मिल जाने का चक्कर बीच में नहीं आया होता तो अब तक मैंने उसे ढूंढवा लेना था । अभी फिर किसी को होटल भेजूंगा । मेरा ख्याल है उस वकील और सेक्रेटरी जगमोहन ने आपस में कोई खिचड़ी पका रखी थी ।'

'हो सकता है ।' सुधीर लापरवाही से बोला- 'वैसे मुझे तो कोई ऐसी बात नजर आई नहीं ।'

विजय कुमार ने पुलिस हैडक्वाटर्स के कम्पाउण्ड में जीप मोड़ दी ।

दोनों नीचे उतरे ।

'लाओ, ओवर कोट मुझे दो ।' विजय कुमार बोला -'मैं इसको फिंगर प्रिंटस के लिये लेबोरेटरी में ले जाता हूँ ।'

वह ओवरकोट लेकर चला गया ।

सुधीर उसके ऑफिस में जा बैठा ।

करीब बीस मिनट बाद विजय कुमार लौटा । उसने ओवरकोट हाथ में यू पकड़ा हुआ था, मानो कोई मरा हुआ चूहा दुम पकड़ कर हाथ में लटका रखा था ।

'क्या हुआ ?' सुधीर ने पूछा-'पेपर नाइफ पर उंगलियों के निशान नहीं मिले ?'

'नहीं ।'

'जेब में खून का कोई दाग ?'

'वो भी नहीं ।

'ओह !' सुधीर सोच में पड़ गया ।

विजय कुमार ने कहा- 'साफ जाहिर है कि पेपर नाइफ सुरेश दुग्गल को फंसाने के लिये किसी ने उसके ओवरकोट की जेब में प्लांट किया था । अगर उसने देवराज मेहता को चाकू भोंका होता तो उसने सबसे पहला काम यह करना था कि इस पेपर नाइफ को किसी भी ऐसी जगह फेकता जहां से उसके विचार से कभी भी हो बरामद नहीं किया जा सकता था ।'

'तुम कहना चाहते हो कि देवराज मेहता का खून सुरेश दुग्गल ने नहीं किया ?'

विजय कुमार हिचकिचाया ।

'तुम ऐसा करो, उसे बुलाओ तो सही । सुधीर बोला -'पता तो चले इस पेपर नाइफ को देखकर उस पर क्या प्रतिक्रिया होती है ?'

विजय कुमार ने बाहर मौजूद आर्डरली को बुलाकर सुरेश दुग्गल को लाने के लिये कहा । और ओवरकोट उठाकर अपने डेस्क के एक खाली दराज में ठूस दिया ।

थोड़ी देर बाद एक पुलिसमैन सहित सुरेश दुग्गल भीतर दाखिल हुआ ।

विजय कुमार मुस्कराया ।

'आओ, सुरेश दुग्गल ।' वह बोला- 'तुम बहुत खुशकिस्मत हो ।'

सुरेश दुग्गल ने हैरानगी से उसे देखा ।

'क्या ? कैसे ?'

'बैठो, बताता हूँ ।'

सुरेश दुग्गल सुधीर की बगल में खाली कुर्सी पर बैठ गया ।

'तुम्हारे लिये पहली खुशखबरी यह है ।' विजय कुमार बोला-'तुम्हारी बीबी सुरक्षित घर लौट आई है ।'

सुरेश दुग्गल का चेहरा हजार वाट के बल्ब की तरह चमकने लगा ।

'दूसरी खुशी की बात तुम्हारे लिये यह है ।' विजय कुमार बोला-'हालांकि तुमने अपनी ओर से हरचन्द कोशिश की कि देवराज मेहता को शूट करके उसकी जान ले लो ।

उसे शूट भी किया । लेकिन उसकी मौत तुम्हारे रिवाल्वर की गोली से नहीं हुई । जानते हो ऐसा क्यो हुआ, सुरेश ?'

मानो कोई नाटक खेला जा रहा था । और इस वक्त स्टेज पर सुधीर की एन्ट्री निहायत जरूरी थी । उसने बिल्कुल इसी ढंग से हस्तक्षेप किया ।

'यह बहुत अच्छी तरह जानता है, इन्स्पेक्टर । वह सर्द स्वर में बोला-'इसके साथ नर्मी दिखाने की जरूरत नहीं है । पूरे राजनगर में यह इकलौता आदमी है जिसे देवराज मेहता के दिल में गोली मारने से पहले बखूबी पता था कि वह मरा पड़ा था । क्योंकि करीब पौना घटा पहले खुद इसी ने उसके दिल में चाकू भोंका था ।

सुरेश दुग्गल हैरानी से मुह बाए उसे देख रहा था ।

खुद विजय कुमार भी कम चकित नहीं था ।

'यह तुम्हारी अनोखी सूझबूझ का ही कमाल है, इन्स्पेक्टर । सुधीर ने कहना जारी रखा-'कि तुमने इस बात को इतनी जल्दी पकड़ लिया । याद करो, देवराज मेहता की स्टडी में जब हमे पेपर नाइफ गायब होने का पता चला तो तुमने सम्भावना व्यक्त की थी । सुरेश दुग्गल जब साढ़े आठ बजे वहां आया था । तभी उसने देवराज मेहता को चाकू भोंककर मार डाला था । फिर वह जल्दी से अपने घर गया और रिवाल्वर लेकर वापस लौटा । ताकि खुलेआम देवराज मेहता को शूट करके उसकी हत्या के वास्तविक समय की अपने लिये सुदृढ़ एलीबी जुटा सके ।' वह सुरेश दुग्गल से मुखातिब हो गया-'जब तुम साढ़े आठ बजे देवराज मेहता से मिलने गये । उसी वक्त तुमने उसे चाकू भोंककर मार डाला था । लेकिन तुम्हें फौरन ही यह एहसास हो गया कि इस तरह अकेले तुम पर ही हत्या करने का शक किया जायेगा । इसलिये तुम आनन-फानन में बेहद चालाकी दिखा बैठे । लेकिन तुम्हारी वही चालाकी तुम्हें ले डूबी । तुम्हें देवराज मेहता के दिल में ठीक उसी जगह गोली हरगिज नहीं मारनी चाहिये थी, जहां तुम पहले ही चाकू घुसेड़ चुके थे ।

सुरेश दुग्गल यूं सुधीर को ताक रहा था । मानो उसकी समझ में उसका कहा एक भी शब्द नहीं आ रहा था ।

'तुम इस बात से इन्कार कर सकते हो कि अपनी पहली मुलाकात में तुमने देवराज मेहता को पेपर नाइफ भोककर नहीं मार डाला था ?'

'एक बार नहीं । हजार बार, लाख बार इंकार करता हैं, और करता रहूँगा ।' सुरेश दुग्गल हढ़तापूर्वक बोला 'इसी बात से नहीं उसे रिवाल्वर द्वारा शूट करने के अलावा हर बात से इन्कार करता हूँ । तुम कहते हो कि मैंने जानबूझकर देवराज मेहता की छाती में ठीक उस जगह गोली मारी थी जहां बकौल तुम्हारे मैं उसे पहले ही चाकू घोंप चुका था । तुम्हारी जानकारी के लिये मैं बताता, कि अचूक तो क्या मामूली निशानेबाज भी मैं नहीं । जबकि

यह काम अचूक निशानेबाज के लिये भी आसान नहीं है । मुझ जैसा अनाड़ी आदमी तो प्वाइन्ट ब्लैकफायर करने के बाद भी शायद ऐसा नहीं कर पाएगा ।' वह बोलता-बोलता हांफने लगा था । मगर बोले जा रहा था-'लेकिन मैंने तो प्वाइन्ट ब्लैक फायर भी नहीं किया । अगर ऐसा किया होता तो कोट पर उस जगह बारूद से जलने के निशान ज़रूर पाये जाते । लेकिन नहीं पाये गये होंगे । क्योंकि मैंने देवराज मेहता की कुर्सी के ठीक सामने पड़ी विजीटस चेअर्स के पास खड़ा होकर फायर किया था । हम दोनों के बीच में उसके डेस्क की पूरी चौड़ाई थी जो कि पांच फुट से कम नहीं थी । अगर तुम समझते हो कि मैं झूठ बोल रहा हूँ और हकीकत में एक अच्छा निशानेबाज हूं । तो मुझे एक भी ऐसा अचूक निशानेबाज लाकर दिखा दो जो टारगेट को देखे, सुने बगैर शूट कर सकता हो । जबकि मुझे तो टारगेट का गुमान तक भी नहीं था । मेरा मतलब चाकू के उस जरूम से है जिसे तुम देवराज मेहता की छाती में मेरे द्वारा लगाया बताते जा रहे हो । क्योंकि जिस वक्त मैं उससे पहली बार मिलने गया था । वह सफेद कमीज पहने बैठा था और उसका कोट कुर्सी की पुश्त पर लटका हुआ था । अगर मेरी इस बात पर भी शक है तो जाकर उसकी बीबी से तस्दीक कर लो । क्योंकि मैं जानता हूँ उसे आठ बजे के बाद वही व्हिस्की देने आती थी । गिलास में उस वक्त जितनी मौजूद थी वो करीब-करीब उतनी ही थी जितना कि आमतौर से देवराज मेहता का पहला पैग हुआ करता था । यह बात मैं तुम्हें इसलिये बता रहा हूं ताकि तुम समझ सको कि मेरे वहां पहुंचने से कुछ ही देर पहले उसे व्हिस्की पहुंचाई गई थी । और व्हिस्की पहुचाने वाली उसकी बीबी ने उसे कमीज पहने बैठा ज़रूर देखा होगा । अब यह मत पूछना कि वह इतनी सर्दी में भी अकेली कमीज पहने क्यों बैठा था ? उसे सर्दी की बर्दाश्त थी । घर में वह कोट प्रायः नहीं पहनता था ।'

'जब मैं दोबारा रिवाल्वर लेकर उसे शूट करने पहुँचा तो वह कोट पहने बैठा था । अब अगर मेरी पहली मुलाकात के बाद उसे चाकू या छूरा घुसेड़ कर मार भी दिया गया था । तो ऐसा कोई चिन्ह मुझे दिखलाई नहीं दिया । इसकी वजह शायद यह रही होगी कि जिस जगह उसे चाकू भोंका गया । उसकी छाती का वो हिस्सा कोट के नीचे आकर बिल्कुल ढंक गया था ।' वह पलभर खामोश रहकर बोला-'इन्स्पेक्टर, अब मैं तुमसे पूछता हूँ । क्या मैंने उस खास जगह को निशाना बनाने के लिये पहले कोट के नीचे झांका था और फिर उसके उस जख्म को फिर कोट से ढंक दिया था फिर पीछे हटकर उसे गोली मारी थी ? या मेरी आँखें इतनी तेज थी कि कोट के नीचे का वो भाग भी मुझे दिखाई दे सकता था या फिर तुम्हारी राय में मैंने पहले देवराज मेहता को कोट पहनाकर उसका जख्म ढंक दिया और तब उसे गोली मारी थी । यह ठीक है कि उस वक्त मैं बहुत ज्यादा नशे में था, गुस्से से पागल हो रहा था और मुझ पर सिर्फ देवराज मेहता को शूट करने की धुन सवार थी । लेकिन इस वक्त मैं पूरी तरह सामान्य स्थिति में हूँ । मुझे सब कुछ याद आ रहा है और मैं सब कुछ समझ रहा हूँ ।'

सुधीर ने विजय कुमार को संकेत किया ।

विजय कुमार ने अपने डेस्क की दराज से ओवरकोट बाहर निकाला ।

'यह ओवरकोट तुम्हारा ही है न ?' उसने पूछा ।

सुरेश दुग्गल तनिक चकित-सा प्रतीत हुआ ।

'हां । मेरा ही है ।' वह बोला ।

विजय कुमार ने उसकी जेब से पेपर नाइफ निकाला ।

'यह वही पेपर नाइफ है । वह बोला-'जिससे देवराज मेहता का खून किया गया था । और तुम्हारी बीबी की मौजूदगी में यह तुम्हारे इसी ओवरकोट की जेब से बरामद हुआ है । इसके अपनी जेब में होने की कोई एक भी मुनासिब वजह बता सकते हो ?'

सुरेश दुग्गल कुछ नहीं बोला । वह फटी-फटी-सी आंखों से सूखा खून चिपके चाकू को घूरे जा रहा था ।

'नो !' लम्बी खामोशी के बाद वह फंसी-सी आवाज़ में बोला-'नेवर ! इम्पासिबिल !'

'मेरे सवाल का जवाब दो ।' विजय कुमार दहाड़कर बोला ।

'इसकी कोई सफाई मैं नहीं दे सकता । सिवाए इस बात के कि इसे मेरी जेब में प्लांट किया गया है ।'

'किसने किया ? कब किया ? कैसे किया ?'

'यह सब मैं नहीं जानता ।'

'क्योंकि देवराज मेहता की हत्या करने के बाद इसे तुमने उसकी छाती से खीचकर इस इरादे से अपनी जेब में डाल लिया था कि मौका पाते ही इसे किसी जगह छुपा दोगे । जहां से यह कभी न ढूंढा जा सके । लेकिन बाद में तुम इसे बिल्कुल भूल गए, और यह जेब में पड़ा ही रह गया ।'

'नहीं, इन्स्पेक्टर ! यह सच नहीं है । मैं वाकई इसके बारे में कुछ नहीं जानता । हां, अगर मुझे मौका दो तो मैं इसे प्लांट करने वाले का पता ज़रूर लगा सकता हूँ ।'

'सॉरी, मैं ऐसा कोई मौका नहीं दे सकता ।'

सुरेश दुग्गल उठकर खड़ा हो गया ।

विजय कुमार के संकेत पर वही पुलिसमैन उसे साथ लेकर बाहर चला गया ।

* * * * * *

दोनों कम्पाउन्ड में खडी जीप में जा बैठे ।

ठीक तभी राजेश की मोटर साइकिल वहां पहुंची ।

वह उन दोनों को जीप में बैठते देख चुका था ।

उसने मोटर साइकिल खडी की और जीप की ओर दौड़ा ।

'इन्स्पेक्टर साहब !' वह जीप के पास पहुँचकर बोला 'क्या यह यतीम बच्चा भी आपके साथ हवाखोरी करने का फख्र हासिल कर सकता है ?'

'जल्दी करो ।' विजय कुमार गुर्राया । और इन्जन स्टार्ट कर दिया ।

'शुक्रिया, जनाब । लाख-लाख शुक्रिया ।' राजेश सुधीर की बगल में फंसता हुआ बोला-'अल्लाह तआला आपको लम्बी उम्र बख्शे । काले नीम से भी लम्बी ।'

'अपनी चोंच बन्द रखो ।' विजय कुमार ने उसे झिड़का और कम्पाउण्ड से जीप निकालकर बीच रोड की ओर ड्राइव करने लगा ।

राजेश ने कनखियों से विजय कुमार की ओर देखा ।

'इन्स्पेक्टर साहब !' वह चिकने चुपड़े स्वर में बोला 'मैं कुछ अर्ज करना चाहता हूं ।'

'किस सिलसिले मैं ?'

'यही जो चल रहा है ।'

'क्या ?'

'पहले आप यह बताइये कि रात देवराज मेहता के यहाँ तफ्तीश के लिये किस वक्त पहुंचे थे ?'

'करीब दस बजे ।'

'वो मारा ।' राजेश चहकता हुआ बोला-'मेरा भी यही ख्याल था । अब आप जरा गौर से सुनिए । रात आपके पहुंचने से कोई चार-पांच मिनट पहले बलराज मेहता ने देवराज मेहता की मृत्यु की सूचना देने के लिये उसकी पत्नी नीना मेहता को पैराडाइज क्लब में फोन किया था । फोन करके जब वह लौटा तो उसने बताया कि नीना मेहता क्लब से अपनी किसी सहेली के साथ चली गई थी । सहेली कौन थी वह पता नहीं लगा सका । इस लिए देवराज मेहता की मृत्यु की सूचना उसने क्लब के सेक्रेट्री को दे दी थी ।

'तुम कहना क्या चाहते हो ?' विजय कुमार ने अधीरतापूर्वक पूछा ।

'थोड़ा सब्र कीजिए हुजूर । साथ ही सम्भल, भी जाइए । जो कुछ मैं कहने वाला हूँ, वो बम विस्फोट से कम नहीं है ।' राजेश अपनी रौ में कहता गया-हकीकत नम्बर एक, क्लब का सेक्रेट्री दो दिन से फ्लू का मारा अपने घर में कैद है । वह क्लब की तरफ जाकर

झाँका तक नहीं था । हकीकत नम्बर दो, मिसेज नीना मेहता साढ़े नौ से साढ़े दस बजे तक क्लब की बार में मौजूद रही थी । हकीकत नम्बर तीन, दस बजे के करीब उसकी कोई फोन काल आई थी । जो उसने अटैड भी की थी । चौथी और आखरी हकीकत यह है कि उसने टेलीफोन आप्रेटर से एक नम्बर मांगा था । और उस पर बातें नहीं हुई । उधर सिर्फ घण्टी ही बजती रही थी । जानते हो किसलिए ?'

'जानता हूँ ।' विजय कुमार कड़वे स्वर में बोला 'क्योंकि वो नम्बर सुरेश दुग्गल के घर का था ।

राजेश चौंका ।

'तुम्हें कैसे पता ?'

'यह थोड़ी देर बाद बताया जाएगा । पहले तुम यह बताओ कि तुम्हें यह जानकारी हासिल करने की बात सूझी कैसे ?'

'रात जब बलराज मेहता क्लब में फोन करने के बाद वापस हॉल में लौटा तो वह एकाएक हैरान, परेशान और गहरे सोच-विचार में डूबा-सा नजर आने लगा था । उसका चेहरा साफ इस बात की चुगली कर रहा था कि वह सफेद झूठ बोल रहा था । फिर जब नीना मेहता वहां पहुँची तब भी उसकी हालत अजीब थी । मुझे ऐसा महसूस हुआ मानो वह नीना मेहता के साथ किसी नाटक में भाग लेने के लिए अपनी मर्जी के खिलाफ जबरदस्ती खुद को तैयार कर रहा था । खुद नीना मेहता भी मुझे अभिनय करती-सी प्रतीत हुई थी । मुझे यूं लगा मानो वह जान-बूझकर ऐसा जाहिर कर रही थी कि देवराज मेहता की हत्या की खबर उसे वही पहुँचने पर लगी थी । तनिक रुककर बोला-'इन्हीं सब कारणों से मैं सुबह सवेरे साढ़े चार बजे दफ्तर से फारिग होते ही इस धन्धे में लग गया । पहले देवराज मेहता के क्लब का पता किया । फिर क्लब के सेक्रेटरी का पता लगाकर उसके पास पहुंचा । उसकी बीमारी की खबर ने मेरे ज्ञानचक्षु खोलने शुरू कर दिए । फिर पूरा एक घण्टा भटकने के बाद क्लब के बारमैन को पकड़ा और बड़ी मुश्किल से उससे नीना मेहता की बार में मौजूदगी को कबूलवा सका । उसने सौ रुपये का मेरी गाढ़ी कमाई का एक नोट तो ज़रूर जीमा । लेकिन इतनी मेहरबानी कर दी कि क्लब में रात में जो टेलीफोन आप्रेटर थी उसका पता बता दिया । बस फिर मैंने उस कन्या को जा घेरा । जितनी तरकीबें और तिकड़में मुझे आती थीं सब इस्तेमाल करने के बाद ही कहीं जाकर कन्या सीधी हुई और मैं वांछित फल पा सका ।'

'तुम्हारी जानकारी के लिए फिलहाल हालात यह है, प्रतिमा दुग्गल अपने घर में है । जगमोहन हवालात में, देवराज मेहता की मृत्यु सुरेश दुग्गल के रिवाल्वर से लगी गोली की वजह से नहीं हुई, उसे पहले ही चाकू भोंककर मारा जा चुका था, वो चाकू भी बरामद हो गया है और बलराज मेहता मर चुका है ।

'हे भगवान ! एक साथ इतनी सारी सनसनीखेज खबरें देकर तो तुमने मेरे छक्के ही छुड़ा दिये हैं ।'

सुधीर अब तक पूरी तरह खामोश बैठा रहा ।

'विजय ।' उसने मौन भंग करते हुए पूछा-'अब तो सारी कहानी तुम्हारी समझ में आ गई ?'

'हां ।' विजय कुमार बोला—'लेकिन तुम्हारी जल्दबाजी से एक गड़बड़ हो गई ।

'क्या ?'

'मैं बलराज मेहता की पोस्टमार्टम की रिपोर्ट का पता नहीं कर सका ।'

'उसकी पोस्टमार्टम रिपोर्ट में क्या होगा ? इसका अन्दाजा खुद भी अच्छी तरह लगा सकते हो ।

'वो तो मैं लगा चुका हूँ ।

थोड़ी देर बाद जीप देवराज मेहता की कोठी के पोर्टिको के पास रुकी ।

तीनों नीचे उतरे । काली, एम्बेसेडर और नीली फीएट यथा-स्थान खड़ी थी । कत्थई रंग की पुरानी एम्बेसेडर का स्थान पुरानी मर्सीडीज ने ले लिया था ।

विजय कुमार ने आगे बढ़कर डोरबल का बटन पुरा कर दिया ।

चन्द क्षणोपरांत जिस आदमी ने दरवाजा खोला. उसका कद मुश्किल से पांच फुट था । गेहुँआ रंग, भारी ठोस जिस्म, एकदम गंजा सर, गोल चेहरा और बडीबडी काली आँखें । जिनमें मक्कारी शराब की तरह छलक रही थी । उसने काला कीमती सूट पहन रखा था । करीब ५२ वर्षीय उस आदमी का नाम गजानन मजूमदार था । वह राजनगर के फौजदारी के चोटी के वकीलों में से एक था । उसके बारे में मशहूर था कि मुंहमांगी फीस देने वाले अपने क्लायन्ट को वह फांसी के तख्ते से भी नीचे उतारकर लाने की क्षमता रखता था । उसने ऐसे करिश्मे, किये भी थे । यह एक जुदा बात थी कि ऐसे करिश्मों के लिये वह साम, दाम, दंड, भेद चारों नीतियां अपनाता था । इसी वजह से उसके हमपेशा उसे गिरी हुई निगाहों से देखते थे । और उसे पेशे के नाम पर कलंक समझते थे । लेकिन मजूमदार को इस बात की कतई कोई परवाह नहीं थी ।

उसी मजूमदार को अप्रत्याशित रूप से सामने पाकर उन तीनों का चौंकना स्वाभाविक था ।

'अख्खाह, आप लोग हैं । मजूमदार एक तरफ हटकर निहायत बेतकल्लफी के साथ बोला-'आइए...अन्दर आ जाइए ।'

तीनों भीतर दाखिल हो गए ।

मजूमदार दरवाजा बन्द करके पलटा ।

'कहिए इन्स्पेक्टर, कैसे तकलीफ की ?'

'मिसेज मेहता हैं घर में ?' विजय कुमार ने पूछा ।

'श्योर । बुलाऊँ ?'

'अभी नहीं ।'

विजय कुमार सीढ़ियों की ओर बढ़ा ।

सुधीर और राजेश ने भी उसी का अनुकरण किया ।

ऊपर स्टडी के बाहर हैडकांस्टेबिल रामसिंह कुर्सी पर बैठा ऊंघ रहा था । उसकी उंगलियों में बुझी हुई बीड़ी दबी थी ।

कदमों की आहट सुनकर वह सचेत हुआ फिर हड़बड़ाकर एकदम खड़ा हो गया ।

'सब ठीक है, रामसिंह ?' विजय कुमार ने पूछा ।

'यस, सर ।'

विजय कुमार ने स्टडी का ताला खोला । सुधीर तथा राजेश सहित भीतर दाखिल हो गया ।

वह सीधा डेस्क के पास पहुँचा ।

आशंकित मन से सबसे पहले वही दराज खोली जिसमें टेपरिकार्डर रखा देखा था ।

टेप-रिकार्डर यथावत मौजूद था ।

विजय कुमार ने उसे निकालकर डेस्क पर रख लिया ।

करीब-करीब सारा टेप एक ही स्कुल पर लिपटा हुआ था । विजय कुमार ने रिवाइण्ड' वाला स्विच दबाया । टेप उस स्पूल पर लिपटने लगा जो करीब-करीब खाली था ।

जब सारा टेप उस पर लिपट गया तो उसने 'प्ले' वाला स्विच ऑन कर दिया ।

टेप रिकार्डर से दो पुरुष स्वरों में 'युअर बॉक्स में छपे किसी लेख सम्बन्धी बातचीत सुनाई देने लगी । एक आवाज़ उस पर आपत्ति प्रकट कर रही थी और दूसरी दढ़तापूर्वक समष्टीकरण देते हुए लेख का छपना न्यायोचित ठहरा रही थी ।

राजेश ने बताया सफाई देने वाली आवाज़ देवराज मेहता की थी ।

दस मिनट तक वही वार्तालाप सुनाई दे रहा था । फिर कुछ देर टेप खाली चला और फिर सुरेश दुग्गल का क्रोधपूर्ण ठोस स्वर सुनाई दिया । उसकी तीन-चार मिनट की तकरीर का सारांश था कि देवराज मेहता प्रतिमा से किसी किस्म का कोई ताल्लुक नहीं रखे

। फिर देवराज मेहता के हंसने की आवाज़ सुनाई दी । एकाएक सुरेश दुग्गल का स्वर खौफनाक दहाड़ में बदल गया-'हराम जादे ! मगरूर ! कमीने ! मैं तुझे ज़िन्दा नहीं छोडूंगा । अभी घर से रिवाल्वर लेकर आता हूँ ।' चन्द क्षणोपरांत देवराज मेहता के स्वर में कहा गया-'हूँह...'बेवकूफ ।' फिर उसकी हंसी की धीमी आवाज़ सुनाई दी और फिर पुनः टेप खाली चलने लगा । करीब दो मिनट बाद धीमा पैना परिचित नारी स्वर उन तीनों के कानों में पडा 'देवराज, मैं आज आखरी बार तुम्हारा फैसला जानना चाहती हूँ ।'

'कौन-सा फैसला ?' यह देवराज का स्वर था । 'तुम तलाक देने के लिये तैयार होते हो या नहीं ?'

'नीना, मैं तुम्हें कितनी बार बता चुका हूँ कि मेरे जीते जी यह मुमकिन नहीं है । मैं नहीं चाहता कि मेरी आंखों के सामने तुम बलराज की होकर रहो । तुम दोनों को पति-पत्नी नहीं बनने दूँगा । वह भी आज इसलिये यहां आया है ।'

'दुनिया में कोई चीज नामुमकिन नहीं । और सवाल तुम्हारी पसन्द या चाहत का नहीं मेरी का है । मैं वही करूंगी जो मुझे पसन्द है । मैं आज फैसला कर चुकी हूँ कि तुमसे छुटकारा पाकर ही रहूँगी ।

'मेरी जान लोगी ?' देवराज का स्वर उपहासपूर्ण था ।

'हां, क्योंकि तुम्हारे साथ एक पल भी और बन्धे रहना अब मुझे किसी कीमत पर भी बर्दाश्त नहीं हैं ।'

'नीना, तुम बेवकुफ हो ।' देवराज हंसा-'अच्छी तरह जानती हो कि ऐसी धमकियों से डरने वाला मैं नहीं हूँ । तुमसे पहले भी सैकड़ों लोग मुझे जान से मारने की धमकी दे चुके हैं ।

'लेकिन तुम नहीं डरे । क्योंकि तुम जानते थे कि उन लोगों में तुम्हारी जान लेने का हौसला नहीं था ।

'अरे, यह क्या ? यह पेपर नाइफ क्यों उठा रही हो ?'

नीना मेहता की धीमी हंसी सुनाई दी ।

'बस ! डर गए, डार्लिंग ? मैं तो सिर्फ तुम्हारा हौसला देख रही थी ।

'देख लिया ?'

'हां ।'

'तो फिर मैंने गले से अपनी यह बांह निकाली । और कुर्सी के पीछे मत खड़ी रहो ।

'तुम्हारी गोद में आकर बैठूँ डार्लिंग ?'

'नहीं । अब तुम जाओ । मुझे कुछ जरुरी काम...आह...नीना...तुमने...मुझे...मार...।

'हां, मैंने तुझे मार डाला, गलीज कुत्ते ।' नीना मेहता का स्वर जहर में बुझा सा था-'ताकि तेरी दौलत के साथ मनमाने ढंग से ऐश कर सकूं ।' लम्बी खामोशी के बाद पुनः आवाज़ सुनाई दी-'अब तुम कोट पहन कर बैठो, डार्लिंग । मैं जानती हूँ सुरेश दुग्गल जरुर रिवाल्वर लेकर वापिस आएगा । क्योकि आज दोपहर में मैं उसे ऐसी चाबी भर चुकी हूं कि वह शराबी तुम्हारी जान लेने जरुर आएगा । पेपर नाइफ मैं ले जा रही हूँ । ताकि अगर सुरेश दुग्गल न भी वापस आए तो भी फांसी पर चढ़ सके । अच्छा...गुडवाई, डार्लिंग ।'

फिर टेप खाली चलता रहा ।

'हैलो, इन्स्पेक्टर । टेपरिकार्डर सुन रहे हो ?'

खुले दरवाज़े से मजूमदार की आवाज़ सुनकर तीनों उधर ही पलट गये ।

वह दरवाज़े से बाहर खड़ा उन्हें घूर रहा था ।

'सुधीर ने धीरे से हाथ बढ़ाकर टेपरिकार्डर का स्विच आफ कर दिया ।

'जी हां, ।' विजय कुमार बोला-'आपको कोई ऐतराज है ?'

'अरे भई हम ऐतराज करने वाले कौन होते हैं ।'

'वकील साहब, इस वक्त आपकी इस घर में मौजूदगी की वजह जान सकता हूँ ।'

मजजूमदार धूर्ततापूर्वक मुस्कराया ।

'बेशक ! मैं देवराज मेहता का दोस्त और कानूनी सलाहकार था । मिसेज मेहता ने मुझे उसकी मौत की खबर दी तो अफसोस जाहिर करने चला आया ।'

'मिसेज मेहता कहां है ?'

'नीचे हाल में । मिलना चाहते हो ?'

विजय कुमार ने टेपरिकार्डर उसी तरह उठाया । माइक्रोफोन समेत अपने कोट की जेब में डाल लिया । वह बाहर निकला और मजूमदार के साथ सीढ़ियों की ओर बढ़ गया ।

सुधीर ने स्टडी का पिछला दरवाजा खोला ।

उसने देखा । दरवाजे के आगे बाल्कनी थी जिससे नीचे तक सीढ़ियां गई हुई थीं । स्टडी के बगल वाले कमरे का पिछला दरवाजा भी उसी बाल्कनी में खुलता था ।

सुधीर बाल्कनी में आ गया । राजेश भी उसके साथ था ।

'सुरेश दुग्गल के देवराज मेहता से मिलने आने से थोड़ी देर पहले नीना मेहता अपने पति के लिये ड्रिंक लेकर आई थी ।' सुधीर बगल वाले बन्द दरवाज़े और उसी साथ बनी खिड़की को घूरता हुआ बोला-'फिर वह गलियारे वाले दरवाज़े से इस कमरे में आ गई

होगी । वह जानती थी कि सुरेश दुग्गल उससे पति पर प्रतिमा के साथ ताल्लुकात होने का बड़ा भारी शक करता था । देवराज मेहता की हत्या की योजना बनाने के बाद वह कल दोपहर में सुरेश दुग्गल से मिली और उसे इतना भड़का दिया कि वह हत्या करने पर उतारू हो जाए । नीना मेहता जानती थी कि सुरेश दुग्गल ने साढ़े आठ बजे आना था । उसने इस खिड़की से उसे सीढ़ियों द्वारा ऊपर जाते भी देखा होगा । फिर स्टडी के दरवाज़े के पास खड़ी रहकर उसकी और देवराज मेहता की बातचीत सुनी । जब सुरेश दुग्गल धमकी देकर चला गया तो वह इसी खुले दरवाज़े से स्टडी में दाखिल हुई और देवराज मेहता की हत्या कर दी । वह खासी तगडी औरत है । ठीक दिल पर नोकीले तेज धार वाले चाकू के एक ही तगड़े वार ने देवराज की तुरन्त जान ले ली । फिर नीना मेहता बाल्कनी से इस कमरे में आई और सजसंबर कर गलियारे वाले दरवाज़े से नीचे हाल में पहुंची ।

उसने बलराज मेहता से जानबूझ कर कहा कि क्लब जा रही थी । ताकि हत्या का पता लगने पर वह ताजा हालत की जानकारी उसे दे सके ।

'आपका मतलब है, बलराज मेहता भी उसके साथ इस साजिश में शामिल था । राजेश ने पुछा ।

'जहां तक मैं समझता हूँ, नहीं । सुधीर बोला 'वरना क्लब में नीना मेहता को फोन पर हत्या की सूचना देने के बाद उसने हैरान और परेशान नजर नहीं आना था । नीना मेहता क्लब से किसी सहेली के साथ चली गई थी । यह झूठ भी उसने नीना मेहता के कहने पर ही बोला होगा । फिर जब नीना मेहता बाद में यहां पहुंची और ऐसा जाहिर किया कि देवराज मेहता की मौत की खबर पहली बार सुन रही थी । तब भी बलराज मेहता बुरी तरह चोंका था । लेकिन वह नीना मेहता के आकर्षण में इस बुरी तरह उलझा हुआ था कि किसी गोलमाल का शक कम में कम तब तक तो नहीं कर सकता था ।

नीना मेहता ने सुरेश दुग्गल के घर क्लब से फोन यह जानने के लिये किया था कि घर में कोई था या नहीं ?' राजेश बोला-'क्योंकि वह पेपर नाइफ उसके घर में प्लांट करना चाहती थी ?'

'हां । और यहां पहुँचने से पहले वह पेपर नाइफ सुरेश दुग्गल के ओवर कोट की जेब में डाल चुकी थी ।'

'लेकिन एक बात समझ में नहीं आई ।'

'क्या ?'

'यह तो ठीक है कि नीना मेहता सुरेश दुग्गल को देवराज मेहता के खून के जुर्म में फंसाना चाहती थी । लेकिन उसने यह कैसे सोच लिया कि रिवाल्वर की गोली देवराज मेहता के दिल में ठीक उसी जगह लगेगी जहां वह पहले ही चाकू घोंप चुकी थी ।

'इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि गोली कहां लगी । वह दोबारा वापस नहीं आता तब भी उसने ही फंसाना था । दोबारा वापस आकर गोली मारने से सिर्फ यही समझा जाना था वह वास्तविक हत्या के समय की अपनी एलीबी जुटाना चाहता था । सुधीर बोला-'आओ अब नीचे चलते है ।

गलियारे में मौजूद रामसिंह को स्टडी के दरवाज़े बन्द करने के लिये कहकर दोनों नीचे हाल में पहुँचे ।

विजय कुमार नीना मेहता और मजूमदार के सामने बैठा था । और उसके हाथ में नया टेपरिकार्ड चालू था ।

'मिसेज मेहता ।' वह कह रहा था-'आप जानती हैं कि आपने कल रात चाकू घोंपकर अपने पति देवराज मेहता का खून किया था ।'

नीना मेहता के चेहरे पर फीकी मुस्कराहट तैरने लगी ।'

'हां ।' वह बोली-'फिर रूमाल से पकड़कर व्हिस्की का गिलास उठाकर खाली किया और पेपर नाइफ उसकी छाती से निकाल लाई ।

विजय कुमार सहित सुधीर और राजेश भी चौंके । उन सबका ख्याल था कि वह जोर-शोर से प्रतिवाद करेगी ।

'खून करने की वजह ?' विजय कुमार ने पूछा ।

'वही जो आपने अभी टेपरिकार्डर से सुनवाई है । मैं उससे तलाक लेना चाहती थी और वह इसके लिए सहमत नहीं था ।'

'और बलराज मेहता की हत्या के बारे में आप क्या कहती हैं ?'

'उसकी हत्या भी मैंने की है ।' नीना मेहता ने सादगी और लापरवाही से कहा-'लेकिन मेरे खिलाफ कोई सबूत या गवाह नहीं मिलेगा ।'

सुधीर और राजेश स्तब्ध खड़े रह गये । वे समझ नहीं सके कि दो खून करने के बाद भी वह इतनी लापरवाह और बेफिक्र क्यों थी । और वह पूरी संजीदगीक साथ क्यों अपने जुर्म का इकबाल कर रही थी ! जरा भी प्रतिवाद क्यों नहीं कर रही थी ? यह जानते हुये भी कि उसका बयान टेप पर दूसरी ओर रिकार्ड किया जा रहा था ।

खुद विजय कुमार भी कम हैरान नहीं था ।

'क्यों ?' उसने पूछा ।

'इसलिये कि बलराज मेहता की हत्या करने के लिये मैंने कोई हथियार इस्तेमाल नहीं किया । वह बेहद नशे में था । मुझें जुडो आती है । मैंने उसे इस ढंग से सीढ़ियों में

उठाकर पटका कि उसका सर पूरे जोर से सीढ़ियों में टकराया । और उसकी गरदन टूट गई । और ऐसा करते हुये मुझे किसी ने नहीं देखा ।'

'बलराज मेहता की हत्या करने की वजह ?'

'उसे मुझ पर देवराज मेहता की हत्या करने का शक हो गया था । और वह मुझ पर अपना शक जाहिर करने की बेवकूफी कर बैठा ।

'लेकिन जब आप खुद ही कबूल कर रही हैं कि आपने अपने पति की हत्या की थी तो उसके शक करने से क्या फर्क पड़ता था ?'

'यह मेरे सोचने-समझने की बात है कि क्या फर्क पड़ना था ।'

'इस वक्त मेरे हाथ में जो टेपरिकार्डर है । आपको इसकी जानकारी थी ?'

'जानकारी तो थी । लेकिन यह बात मुझे अभी टेप सुनने के बाद ही मालूम हुई है कि जब मैं देवराज के पास पहुँची टेप-रिकार्डर ऑन था ।' नीना मेहता ने लापरवाही से पूछा-'आपने कुछ और पूछना है ?'

'सिर्फ यह कि दो-दो हत्याओं का जुर्म आपने इतनी आसानी और लापरवाही से क्यों कबूल कर लिया ।'

'क्यों कि बेकार झूठ बोलकर न तो मैं आपकी पूछताछ को पेचीदा बनाना चाहती थी और न ही अपना वक्त बरबाद करना चाहती थी ।'

अब तक मात्र मौन दर्शक की भांति बैठे सिगरेट फूंकते मजूमदार ने विजय कुमार की ओर देखा । फिर सुधीर और राजेश की तरफ यूं चौंककर देखा । मानो अब से पहले उनकी वहां उपस्थिति का आभास ही उसे नहीं था ।

'अरे भाई आप लोग खड़े क्यों हैं ?' वह बोला 'बैठिये न ।'

सुधीर और राजेश दूसरे सोफे पर बैठ गये ।

'मिसेज मेहता ।' मजूमदार बोला-'इन लोगों को चाय कॉफी कुछ तो पिलाओ ।'

'ओह मैं तो भूल गई थी ।' नीना मेहता ने कहा फिर खड़ी हो गई 'इन्स्पेक्टर, फिक्र मत करना, मैं भागूगी नहीं ।'

विजय कुमार कुछ नहीं बोला । नीना मेहता के व्यवहार ने उसकी बुद्धि कुठित कर दी थी ।

नीना मेहता हाल से निकल कर किचन में चली गई ।

चन्द मिनटों उपरांत रामलाल द्वारा, कॉफी की ट्रे उठवाए लौटी ।

मजूमदार ने अपनी कलाई पर निगाह डाली । फिर विजय कुमार की ओर बढ़ा ।

'क्या टाइम हुआ हैं, इन्स्पेक्टर ?' उसने पूछा-'मैं जल्दबाजी में अपनी घड़ी लानी भूल गया था ।'

'दस बजकर पैतिस मिनट ।' विजय कुमार ने जवाब दिया ।

मजूमदार धूर्तत्तापूर्वक मुस्कराया ।

रामलाल ट्रे रखकर लौट गया ।

नीना मेहता ने सबको आग्रहपूर्वक कॉफी पेश की ।

तभी डोर बैल की आवाज गूंजी ।

मजूमदार के चेहरे पर व्याप्त मुस्कराहट गहरी हो गई । वह इस ढंग के उठा मानो उसे पता था आगन्तुक कौन था । और उसका आगमन अपेक्षित था ।

उसने दरवाजा खोला ।

वकीलों जैसी वेशभूषा वाला एक आदमी भीतर दाखिल हुआ और उसे एक फाइल थमाकर उल्टे पैरों वापस लौट गया ।

मजूमदार पुनः आ बैठा ।

'इन्स्पेक्टर ।' वह फाइल विजय कुमार की ओर बढाता हुआ बोला-'सैशन जज ने मिसेज नीना मेहता की अग्रिम जमानत मन्जूर कर ली है । कागजात देखकर तसल्ली कर लो ।'

विजय कुमार ने अग्नेय नेत्रों से उसे घूरा । फाइल पकड़ने का कोई उपक्रम नहीं किया ।

'वकील साहब ।' वह धीमे स्वर में बोला-'वाकई आपका जवाब नहीं है । लेकिन अगर यही हाल रहा तो जल्दी ही किसी दिन ऐसी फाइल आपको अपने लिये भी मंगवानी पड़ जाएगी ।' और उसके हाथ से फाइल ले ली ।

मजूमदार कहककहा लगा कर हंस दिया ।

विजय कुमार ने कॉफी खत्म की । सरसरी निगाहों से फाइल देखकर मेज पर रख दी ।

वह खड़ा हो गया ।

ऊपर जाकर स्टडी वाला कमरा सील कराया । और रामसिंह सहित नीचे आ गया ।

पांच मिनट बाद वह पुलिस हैडक्वाटर्स की तरफ जीप ड्राइव कर रहा था । सुधीर, राजेश आगे उसकी बगल में बैठे थे और रामसिंह पिछली सीट पर ।

क्या समझे, जासूस साहब ?' विजय कुमार ने पूछा ।

'मेरे ख्याल से मजूमदार किसी मोटी तिकड़म के फेर में हैं ।' सुधीर बोला ।

'सवाल तो यह है कि तिकड़म हो क्या सकती है ?'

'पता नहीं । कुछ समझ में नहीं आता ।'

फिर हैडक्वाटर्स पहुँचने तक जीप में मौन छाया रहा ।

विजय कुमार के आफिस में डेस्क पर बलराज मेहता के शव की पोस्टमार्टम रिपोर्ट की कापी रखी थी ।

रिपोर्ट के मुताबिक बलराज मेहता की मृत्यु सर में बहुत गहरी चोट लगकर एक साथ बहुत ज्यादा खून बह जाने से हुई थी । चोट लगने की वजह सर पर किसी चीज से किया गया कोई आघात नहीं था । वह सर के बल किसी कठोर चीज के साथ बहुत ही जोर से टकराया था । मृतक ने बहुत ज्यादा शराब पी हुई थी । वैसी हालत में वह खुद भी किसी ऊची जगह से गिरकर सर में ऐसी चोट खा सकता था और किसी के द्वारा सर के बल गिराया जाने पर भी ।

विजय कुमार ने रिपोर्ट पढ़ी और विवशतापूर्वक डेस्क पर रख दी ।

'इस मजूमदार के बच्चे ने टांग अड़ाकर सत्यानाश कर दिया । वह बोला-'खैर, कोई बात नहीं मैं अभी जाकर डी० आई० जी० से मिलता हूँ । फिर सरकारी वकील से जाकर कल ही सारा केस उसे सौंप दूँगा ।'

'ठीक है । सुधीर ने भी सहमति दी-'सारी औपचारिकतायें पूरी करके फटाफट केस अदालत में ले जाओ । इसी में फायदा है । मजूमदार नम्बरी हरामजादा है । देर करने से वह फिर कोई और अड़न्गा डाल देगा ।'

सुधीर और राजेश पुलिस हैडक्वाटर्स से बाहर निकले ।

पास के एक रेस्तरां में दोनों ने डटकर नाश्ता किया ।

नाश्ते के दौरान सुधीर ने उसे देवराज मेहता की लाश के पोस्टमार्टम कराने और प्रतिमा दुग्गल के बरामद होने का पूरा किस्सा सुना दिया ।

राजेश ने प्रशंसापूर्वक देखा । फिर उसके चेहरे पर हैरानगी के भाव प्रगट हो गये ।

'इसका मतलब वो एक लाख रुपया अभी भी टैक्सी में पड़ा है ?'

'हा । अब मुझे तुम अपनी मोटर साइकिल द्वारा लिटन रोड पहुँचाओ ताकि टैक्सी ले जाकर बेचारे बन्तासिंह को सौंप सकूं ।' सुधीर बोला-'सारे सिलसिले में यह भी एक बड़ी भारी गनीमत रही कि तेजी से बदलते चले गये हालात की वजह से विजय कुमार जयन्त नाथ को बिल्कुल भूल गया । वरना बेकार फजीता हो जाना था ।'

'बेशक फिर यह एक लाख रुपये वाली बात खुल जानी थी । बाई दी वे, उस रुपये का आप क्या करने जा रहें हैं ?'

'क्यों ? तुम्हें चाहिये ?'

'नहीं, यू ही पूछ रहा हूँ ।'

'फिलहाल तो मेरा इरादा डिफेंस फण्ड में देने का है ।'

'मैं सोचता है कुछ रुपया सुरेश दुग्गल को दे दिया जाए ।' राजेश बोला- 'आखिरकार केस तो उस बेवकूफ पर चलेगा ही फिर हंसा-'लाश की हत्या का ।'

'ठीक है दस हजार उसे दे देते हैं । और दस हजार बन्तासिंह को बशर्ते कि वह लेने के लिये तैयार हो जाये । वह बेचारा अपने काम आता ही रहता है । बाकी डिफेंस फन्ड में दे देंगे ।

दोनों रेस्तरां से बाहर निकले । पूलिस हैडक्वाटर्स के उम्पाउन्ड में पहुंचे ।

राजेश ने वहां खड़ी अपनी मोटर साइकिल स्टार्ट की ।

तभी अन्दर से निकलकर आता जगमोहन दिखाई दिया । उसे छोड़ दिया गया था ।

राजेश ने उसे बुलाकर कड़ी चेतावनी दी कि वह इसी क्षण से प्रतिमा दुग्गल से सभी रिश्ते-नाते खत्म कर दे और आइन्दा ऐसे पचड़ों से दूर रहे ।

जगमोहन ने ऐसा ही करने का वादा किया । सुधीर पिछली सीट पर बैठ गया ।

राजेश ने मोटर साइकिल कम्पाउंड से निकाली और लिटन रोड की ओर दौड़ाने लगा ।

* * * * * *

उसी रोज दोपहर में पुलिस हैडक्वाटर्स में एक सनसनीखेज घटना घटी । पुलिस हैडक्वाटर्स में इन्स्पेक्टर विजय कुमार की गैर मौजूदगी में उसके आफिस में लोहे की लाक्ड अलमारी से नीना मेहता के खिलाफ दोनों ठोस सबूत गायब हो गये । देवराज मेहता की स्टडी में प्राप्त टेपरिकार्ड में लगा टेप और वो पेपर नाइफ जिससे उसकी हत्या की गई थी । चोरी इतने चमत्कारिक ढंग से हुई थी कि चोर की गन्ध तक नहीं मिल सकी विजय कुमार अच्छी तरह जानता था कि चोरी कराने वाला वकील गजानन मजूमदार था । लेकिन वह दिल मसौस कर रह जाने के सिवाए कर कुछ नहीं सका ।

* * * * * *